

# **Archiv der Gossner Mission**

**im Evangelischen Landeskirchlichen Archiv in Berlin**



Signatur

**Gossner\_G 1\_1578**

Aktenzeichen

1/20/04

## **Titel**

Jubiläum Gossner Kirche in Indien 1995

Band

2

Laufzeit

1994 - 1995

## **Enthält**

Unterlagen betr. Feierlichkeiten in Indien zum 150. Jubiläum der ersten Aussendung von Gossner-Missionaren nach Indien und zum 75. Jubiläum der Unabhängigkeit der Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur and Assam - GELC, Schriftwechsel, Gratul

Digitalisiert/Verfilmt 2009 von Mikro-Univers GmbH

1

—

2

—

3

—

4

—

5

—

6

—

7

—

8

Jubi-  
länn  
28.10.-  
11.11.

9

0



**Trennblatt**  
hellchamois mit  
Organisationsdruck

56/6194

Gossner  
Mission



# G. E. L. CHURCH MIDDLE SCHOOL

NEW SITARAMDERA, JAMSHEDPUR 831009  
EAST SINGHBHUM

Ref. No. 25/95

Date 6<sup>th</sup> Nov. 95

मान्यवर रैन्ह Dieter Hecker,  
डायरेक्टर गौस्सनर मिशन बर्लिन, जर्मनी, Rev Harald  
Lehmann, Rev Volker Jurgens. तथा Mr. Leif Lehmann  
आप सबों को हमारे जी० ई० एल्बे चर्च मध्य विद्यालय के  
सभी शिक्षक शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों द्वारा यीशु मसीह  
के मधुर नाम से सौष्ठव यीशु सदाय।

हम सभी, आप सबों के इस विद्यालय  
में जागमग से काफी आनंदित एवं प्रसन्न हैं। और आप  
सबों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि आप सब अपने-अपने  
समय के दौरान हमारे विद्यालय में उपस्थित हो सके।

अब मैं हमारे विद्यालय का संक्षिप्त  
विवरण प्रस्तुत करना चाहती हूँ। हमारे इस जी० ई० एल्बे  
चर्च, सीतारामपुर की स्थापना सन् 1940 ई० में हुई थी।  
उमरी 55 वर्ष है। सर्वप्रथम यह एक लोअर, गर्लिस  
विद्यालय था। सन् 1960 ई० से यह मध्य विद्यालय के रूप  
में चल रहा है वर्ग K.G. से वर्ग VIII तक के विद्यार्थी  
यहां विद्या अध्ययन करते हैं। दिनांक 30.11.64 को इस  
विद्यालय को सरकार द्वारा प्रवीणता प्राप्त हो गई और  
दिनांक 27.10.78 से यह विद्यालय अल्पसंख्यक घोषित  
हो गई। यह विद्यालय जमशेदपुर पैरिस के अन्तर्गत है।

**G. E. L. CHURCH MIDDLE SCHOOL**  
**NEW SITARAMDERA, JAMSHEDPUR**  
**EAST SINGHBHUM**

Ref. No. ....

Date. 6.11.95

पेरिस विद्यालय समिति इस विद्यालय का संचालन करती है 12 शिक्षकों को सरकार द्वारा वेतन प्राप्त होता है। अन्य शिक्षकों को विद्यालय समिति वेतन भुगतान करती है। कुल 18 प्राध्यापक शिक्षक हैं। तीन बी०ए० बी०एड०, एक बी०ए०सी० प्र० दो आई प्र० और अन्य मैट्रिक प्राध्यापक शिक्षक हैं।

इसके एवं हिन्दू सभी विद्यार्थी विद्यालय पर करते हैं। आदिवासी, हरिजन, एवं पिछड़ी जातियों के विद्यार्थियों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। इसके विद्यार्थी को बार्डबल की भी शिक्षा दी जाती है। प्रतिवर्ष वजा विद्यार्थी उर्दी होते हैं। लेख, लेखन तथा अन्य प्रतियोगिता में अन्य विद्यालय में भी भाग लेते हैं। जिसमें विद्यार्थी पुरस्कार प्राप्त करते हैं।

इस विद्यालय में शिक्षक एवं विद्यार्थियों को सभी सुविधाएं प्राप्त हैं। दो मंजिला विद्यालय भवन है इसमें एक ऑफिस, एक शिक्षकों का कमरा, एक हॉल, एक स्टीर रूम तथा आठ की कमरे हैं। विद्यालय दो पाली में होता है।

जमशेदपुर पेरिस के अधीनस्थ अन्य तीन विद्यालय सोनारी, मानो तथा दुपुर्जा में स्थित है। वर्ष के अंत में चारों जी०ई० स्तर पर विद्यालय

**G. E. L. CHURCH MIDDLE SCHOOL**  
**NEW SITARAMDERA, JAMSHEDPUR**  
**EAST SINGHBHUM**

Ref. No.....

Date... 6.11.95 .....

के शिवाग्र तथा विद्यालय स्थापित के सहस्रक मिलकर  
"प्रभुजन्म पर्व मिलन" उत्सव मनाते हैं।

ईश्वर की महान अनुग्रह से यह  
विद्यालय दिनों दिन उन्नति कर रहा है।

आप सबों से निवेदन है कि आप  
हमेशा हमें अपने धार्मिक में याद करें जिससे यह  
विद्यालय उन्नति करते रहे। और इससे ईश्वर  
पिता की स्तुति महिमा होवे।

अन्त में हम सभी आप सबों से  
शुभ एवं सुरक्षित यात्रा की कामना करते हैं।  
सभी शुभकामनाओं सहित

—च.पवाद।

आप सबों की विश्वस्त  
ॐ

(Mrs Sarjyani Susanna Topno (B.A.))

एवं शिवाग्र के ल-क

Head Mistress,

G.E.L. Church Middle School

New Sitaramdera, ISB



# G. E. L. CHURCH MIDDLE SCHOOL

NEW SITARAMDERA, JAMSHEDPUR 831 009  
EAST SINGHBHUM

Ref. No. 25/95

Date 6th Nov 95

मान्यवर रोह Dieter Hecker, डायरेक्टर  
गोस्नर मिशन बर्लिन, जर्मनी, Rev Harald Lehmann,  
Rev Volker, Jürgen तथा Mr Leif Lehmann  
आप सबों को हमारे जी० ई० खल्ले चर्च मध्य विद्यालय  
के सभी शिक्षक शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों द्वारा यीशु  
मसीह के मजदूर नाम से सौष्ठव यीशु सदाय !

हम सभी, आप सबों के इस विद्यालय  
में आगमन से काफी आनन्दित एवं प्रसन्न हैं।  
और आप सबों को हार्दिक धन्यवाद देते हैं कि  
आप सब अपने भारत भ्रमण के दौरान हमारे विद्यालय  
में उपस्थित हो सके।

अब मैं हमारे विद्यालय का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना चाहती हूँ। हमारे इस जी० ई० खल्ले चर्च मध्य विद्यालय  
सीतारामडैरा की स्थापना सन् 1940 ई० में हुई थी। अभी  
55 वर्ष है। सर्वप्रथम यह एक छोटा, प्राथमिक विद्यालय  
था। सन् 1960 ई० से यह मध्य विद्यालय के रूप में  
चल रहा है। वर्ग K-G. से वर्ग VIII तक के विद्यार्थी  
यहाँ विद्या अध्ययन करते हैं। दिनांक 30.11.94 को इस  
विद्यालय को संस्कार द्वारा पुनर्विहति प्राप्त हो गई।  
और दिनांक 27.10.78 को यह विद्यालय अल्पसंख्यक  
द्विधित हो गई। यह विद्यालय जमशेदपुर पैरिस के अन्तर्गत है।

# G. E. L. CHURCH MIDDLE SCHOOL

NEW SITARAMDERA, JAMSHEDPUR  
EAST SINGHBHUM

Ref. No.....

Date 6.11.95

पेरिस विद्यालय सीमित इस विद्यालय का संचालन करती है।  
12 शिक्षिकाओं को सरकार द्वारा वेतन प्राप्त होता है। अन्य  
शिक्षकों को विद्यालय सीमित वेतन भुगतान करती है।  
कुल 18 प्राशिक्षित शिक्षिकाएँ हैं। तीन बी० ए० बी० ए०,  
एक बी० ए० सी० ए०, दो आई० ए० ए० और अन्य मैट्रिक  
प्राशिक्षित शिक्षिकाएँ हैं।

ये शिक्षा एवं हि-ड सभी विद्यार्थी विद्यालय  
करते हैं। आदिवासी, हरिजन एवं पिछड़ी जातियों के  
विद्यार्थियों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति दी जाती है। शिक्षा  
विद्यार्थियों को बर्दान्त की भी शिक्षा दी जाती है।  
प्रतिवर्ष 95% विद्यार्थी उत्तीर्ण होते हैं। लेख, लेख  
तथा अन्य प्रतियोगिता में अन्य विद्यालयों में भी भाग लेते  
हैं। जिसमें विद्यार्थी पुरस्कार प्राप्त करते हैं।

इस विद्यालय में शिक्षक एवं विद्यार्थियों को सभी  
सुविधायें प्राप्त हैं। दो मेंडिल विद्यालय भवन है। वसये रक्त  
ऑफिस, एक शिक्षकों का कमरा, एक हॉल, एक स्पोर्ट्स  
तथा आठ वर्ष कमरे हैं। विद्यालय दो पाली में होता है।

जमशेदपुर पेरिस के अधीनस्थ अन्य तीन  
विद्यालय सोनारी, मानगो तथा डुडुजांग में स्थित हैं।

वर्ष के अंत में चारों जी० ई० ए० चर्च विद्यालय

**G. E. L. CHURCH MIDDLE SCHOOL**  
**NEW SITARAMDERA, JAMSHEDPUR**  
**EAST SINGHBHUM**

Ref. No. ....

Date..... 6.11.95

कै शिक्षक एवं विद्यार्थी सीमित कै सदस्य मिलकर  
"प्रभु जन्म पर्व मेलन" उत्सव मनाते हैं।

ईश्वर की महान अनुकम्पा से यह  
विद्यार्थी दिनों दिन उत्कृष्ट कर रहा है।

आप सबों से निवेदन है कि आप  
हमेशा हमें अपने प्रार्थना में याद करें जिससे यह  
विद्यार्थी उत्कृष्ट करते रहे, और इससे ईश्वर  
पिता की स्तुति महिमा होवे।

अन्त में हम सभी आप सबों के  
शुभ- एवं सुरक्षित यात्रा की कामना करते हैं।  
सभी शुभकामनाओं सहित  
धन्यवाद!

आप सबों की विश्वस्त  
हस्ताक्षर

Mrs. Vinayaka Sivaswami Topra (M.A.)

एवं शिक्षक प्रमुख  
Head Mistress,

G.E.L. Church Middle School  
New Sitaramdera.



1. 11.2.2020

10.310 10.310

1. பிப்ரவரி





## BIOGRAPHIE:

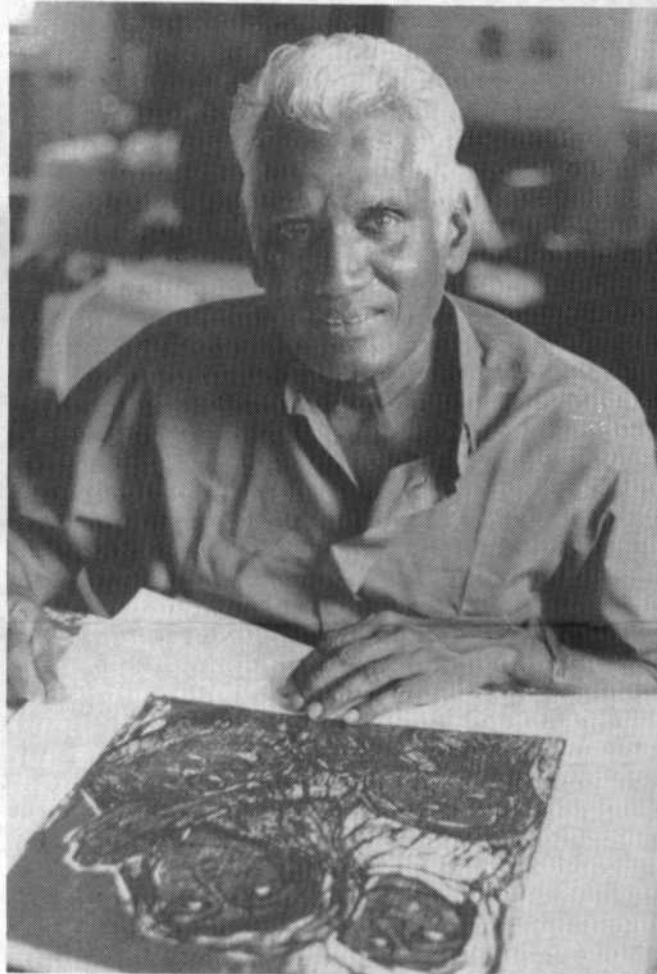
### HOLZSCHNITTE

u.a. 12 Farbh Holzschnitte zum  
Lukasevangelium

und

### BATIK - MOTIVE

in Kalenderblatt-Reproduktion



Dr. P. Solomon Raj wurde 1921 in Südindien geboren. Er studierte von 1945 bis 1966 in Indien und den USA Theologie, Pädagogik und Kunst. 1968 war er Direktor beim Christlichen Rundfunk in Südindien, dem "Radio Voice of the Gospel", und zeitweise auch in Addis Abeba/Äthiopien als Studio-Direktor tätig. Von 1978 an arbeitete er als Dozent für "Communication Studies" an den Selly Oak Colleges in Birmingham/England. Danach war er Gastdozent in den USA und auf den Philippinen. Langjährig ist er aktives Mitglied der "Indian Christian Art Association", wo er ökumenisch arbeitet in Freundschaft mit Jyoti Sahi, dem katholisch-indischen Theologen und Künstler.

Dr. P. Solomon Raj fertigt Batiken und Holzschnitte, schreibt Gedichte und Theaterstücke und hat seit 1987 gemeinsam mit Prof. Dr. W. Hollenweger über das Thema "Inkulturation" gearbeitet.

-----

Die Bilder Solomon Rajs springen nicht unmittelbar ins Auge. Sie wollen entdeckt werden, verlangen eine tiefere Betrachtung. Die Motive laden ein zur Auseinandersetzung mit der indischen Kultur und Tradition. Leise Töne beherrschen die Werke von Solomon Raj. Sie schreien ihre Botschaft nicht hinaus, man muß sich schon in sie hineinversenken; denn für den Inder Raj ist sein künstlerisches Schaffen "Sandhana", eine geistliche Übung, eine Nachfolge Gottes. Er möchte tiefere Fragen und Emotionen wecken, zum Nachdenken anregen. "In meinem Land sind die Christen eine Minderheit, darum wollen wir unseren Mitmenschen das Evangelium durch die Kunst nahebringen, die Auge und Ohr anspricht", erläutert Solomon Raj die verschiedenen künstlerischen Wege, in denen er seinen Glauben bisher ausdrückte.

schon Wege, in denen er seinen Glauben bisher ausdrückte.

Motive, Symbole und Farben werden von Christen und Hindu gleichermaßen verstanden. Leitmotive seiner Werke sind Feuer und Wasser als Zeichen für Licht und Wärme, Leben und Reinheit.

Solomon Raj hat sich diese Symbolik nicht erst mühsam aneignen müssen. Als Sohn eines Dorfschullehrers wuchs er in einem Teil Indiens auf, der für seine Kunst-Traditionen bekannt ist. Andhra Pradesh hat ein jahrhundertealtes Erbe an überlieferter Literatur, Liedkunst, Malerei, Tanz und Theater. Als kleiner Junge schon half Solomon Raj einem Kulissenmaler des Nachbarorfes beim Farbmischen. Seitdem war er von allem Künstlerischen fasziniert.

Als der 21jährige seine Studien begann, hatte den indischen Subkontinent eine Welle der Rückbesinnung auf indische Ursprünge erfaßt, was sich in vielen künstlerischen Bereichen niederschlug. Auch für die christliche Kunst Indiens waren damit neue Wege gewiesen.

Sechs Jahre lang arbeitete Solomon Raj als Lehrer, dann begann er ein Theologiestudium, wurde Studentenpfarrer und später Leiter der Medienarbeit der Lutherischen Kirche in Südindien. Durch seine Holzschnitte, Plastiken und Batiken hat er Anerkennung gewonnen. Ausstellungen in England, Schweden, Deutschland, den USA, Kanada und auf den Philippinen haben dazu beigetragen, die prophetische Botschaft seiner Kunst auch außerhalb Indiens bekannt zu machen.

-----

Arbeiten von Solomon Raj, die Sie erwerben können:

- A - SERIE VON 12 FARBHOLZSCHNITTEN  
"Befreiung von ..." (Preis auf Anfrage, begrenzte Auflage)
  - dazu 12 Dias zur Serie mit Begleit-Text (30,- DM)
  - ebenfalls dazu Heft "Weltweit", bebildert mit Meditationen (3,- DM)
- B - ORIGINALHOLZSCHNITTE SCHWARZ-WEISS (Preise auf Anfrage)
  - dazu "Palm Leaf Prayers - Auf Palmblatt geschrieben". Holz- und Linolschnitte mit Meditationstexten (broschiert 10,- DM)
- C - KALENDERBLÄTTER MIT BATIKREPRODUKTIONEN (pro Blatt 5,- DM)
  - dazu - soweit vorhanden - Originalbatiken (Preise auf Anfrage)
- D POSTKARTEN "Jesus und sein Jünger" (1,- DM)

-----

Alle genannten Originalholzschnitte oder -batiken bzw. Publikationen können bezogen werden über:

Pfr. Dr. Jörg Müller  
Kemnader Str. 129  
4630 Bochum 1  
Tel.: (0234) 79 98 72



Die Ausstellung kann - auch in modifizierter Form - nach Absprache andernorts gezeigt werden.

Veranstalter:

Gemeindedienst für Weltmission  
der Evangelischen Kirche von Westfalen  
und der Vereinigten Evangelischen Mission

Kontaktadresse:

Pfr. Dr. Jörg Müller  
Kemnader Str. 129  
4630 Bochum  
Tel.: (0234) 79 98 72

EINLADUNG ZUR AUSSTELLUNG

02.02. - 29.03.1993

## P. SOLOMON RAJ



Foyer der Superintendentur  
Haus der Kirche  
Querenburger Str. 47  
Bochum

Drei biblische Texte im Zusammenhang einer Predigt zum  
Thema Asyl

I) Jeremia 29, 1ff

Antwort auf den Brief, den der Prophet Jeremia aus Jerusalem an den Rest der Ältesten der Verbannten sandte und an die Priester und alles Volk, das Nebukadnezar nach Babel in die Verbannung geführt hatte:

Lieber J.,

der Rest der Ältesten der Verbannten dankt Dir für den Wortlaut Deines Briefes, den uns Eleasa und Gemarja aus der alten Heimat in das Land unseres Exils überbracht haben.

Gegen unseren Willen haben wir das Land unserer Väter und Mütter verlassen müssen und leben nun als Heimatlose in der Fremde. Für alle, die diesen Weg nicht mitgehen mußten, ist FREMDE vielleicht immer noch gleichbedeutend mit einem Land, wo Milch und Honig fließen. Dem ist nicht so. So sehr wir es darum achten und schätzen, daß Du uns trösten und stärken willst mit einem Wort des HERRN DER HEERSCHAREN, geben wir doch zu bedenken, wie sehr sich die Zeiten geändert haben. Was einmal gegolten haben mag für das Exil in Babel, gilt nicht für Neu-Babel, das Land, in dem wir Heutigen leben, Germania. Was Ihr in der fernen jugo-slawischen, kurdestanischen oder afrikanischen Heimat für eine Vorstellung vom Regime des Nebukadnezar hattet oder habt, ist nicht zu vereinen mit unserem Leben als hierher Verbannte.

Du schreibst: BAUT HÄUSER UND WOHNET DARIN! - Wir sagen Dir: Uns gehört kein einziger Quadratmeter Land, auf dem wir bauen könnten, falls man es uns erlauben würde und wir das Geld dazu hätten. Unser Leben ist auf Abbruch, und provisorisch sind die 'Häuser', in denen man uns wohnen läßt: Zelte, die nicht an die Zelte unserer afrikanischen Heimat erinnern; eine Container-Siedlung, aber das Wort Siedlung heißt nicht, daß wir hier gesiedelt hätten; Turnhallen, Kasernen, abbruchreife Hotels oder sogenannte 'Übergangsheime', die alles andere als anheimelnd sind ... Das sind die Häuser, in denen man uns wohnen läßt. BAUT HÄUSER!, wie Du uns rätst, das



geht schon deswegen nicht, weil Häuserbauen Arbeit bedeutet. Aber uns Flüchtlingen ist das Arbeiten nicht erlaubt.

Du schreibst: PFLANZET GÄRTEN UND ESSET IHRE FRÜCHTE! - Wir sagen Dir: Selbst wenn wir ein Stück Land zu eigen hätten und arbeiten dürften, so haben wir doch nicht die Zeit, die es von der Aussaat bis zur Ernte braucht. So essen wir sauberlich in Folie verpackte Nahrung, von der wir nicht wissen, ob sie rein oder unrein ist. Und in den Schaufenstern sehen wir die Früchte unserer Heimat, aber diese Früchte für unsere Kinder zu kaufen haben wir kein Geld. So sind die umzäunten und ummauerten Gärten der Vergangenheit, die unsere Vorfäter pflanzten und von deren Früchten wir einstmals gegessen haben, zu einem fernen Traum geworden für uns, die wir umzäunt und ummauert leben müssen.

Du schreibst: NEHMT EUCH FRAUEN UND ZEUGET SÖHNE UND TÖCHTER! - Wir sagen Dir: Das wirft man uns vor, wir wären gekommen, um ihnen ihre Frauen zu nehmen. Wir aber wären froh, wenn man uns unsere eigenen Frauen heiraten ließe, doch haben viele von uns nicht die Papiere, die ihre Schreiber dazu verlangen. Und davor haben sie Angst, daß wir als fremde Väter Söhne und Töchter zeugen könnten, die anders sind als ihre eigenen Kinder. Darum, wenn Du schreibst: VERHEIRATET EURE KINDER; DASS IHR EUCH DORT MEHRET UND NICHT WENIGER WERDET!, sind wir froh, daß Du uns Deinen Brief nicht auf Deutsch geschrieben hast; denn wenn andere als wir Deinen Brief zu lesen bekämen und verstehen könnten, würden viele ihre schlimmsten Befürchtungen bestätigt sehen. Sie wollen, daß wir nicht mehr, sondern weniger werden, und daß wir auf keinen Fall auf Dauer bei ihnen bleiben. Sie lassen es zu, daß in unsere Zelte und Baracken Brände geworfen werden. So haben wir von Hünxe bis Rostock unser kärgliches Hab und Gut eingebüßt. Unsere Kinder werden an Leib, Geist und Herzen beschädet. Wir werden ums Leben gebracht, das keins mehr ist.

Lieber J., wir schreiben Dir das alles mit Trauer im Herzen. Eleasa und Gemarja, die bei uns bleiben, weil es für sie keine Rückkehr mehr gibt, sind verwundert und erschrocken. Im Land unserer Verbannung gibt es kein Leben in Freiheit und Würde. Hier ist kein Raum für uns, um Häuser zu bauen. Hier ist keine Zeit, um nach der Saat die Ernte zu erwarten. Hier haben



wir nicht das Recht, Familien zu gründen und unser eigenes Leben zu führen.

Wenn Du fragst, warum das so ist, so antworten wir, daß wir es nicht wissen. Manche sagen, es wäre eine Krankheit mit Namen Xenophobia, das heißt Fremdenfurcht und ist doppelgesichtig; denn so wie die Hiesigen uns Fremde fürchten, haben wir als die Fremden Furcht vor ihnen. - Andere meinen, daß viele der Einheimischen in Wirklichkeit selber Zugewanderte sind. Wer es aber bis auf die unteren Sprossen der Leiter gebracht hat, hat Angst vor denen, die sich mit den Händen an die allerunterste Sprosse klammern. - Wieder andere denken, daß ihr Gott Mammon weder Liebe will noch Teilen duldet.

Das heißt aber nicht, daß die Menschen, deren Land für uns zum Land der Zuflucht und des Exils geworden ist, nicht doch auch fromm und gottesfürchtig wären. Über viele Generationen haben sie von ihren Predigern gehört, was Du uns als ein Wort des HERRN DER HEERSCHAREN mitteilst. Sie haben diese Predigt auf sich bezogen, als seien SIE die gemeinten Empfänger dieser Botschaft, und nicht wir, die Verbannten. Darum gilt: SIE bauen Häuser und wohnen darin. SIE pflanzen Gärten und essen ihre Frucht. SIE nehmen sich Frauen und zeugen Kinder. Aber sie tun es in merkwürdiger Abwandlung Deiner Worte, Jeremias; denn so wie der Tee, den sie trinken, und der Reis, den sie essen, nicht auf ihren Feldern gewachsen ist, so stammen auch die Frauen, die sie sich nehmen, nicht selten aus fernen, exotischen Ländern. Sie nehmen sie sich.

Lieber J., wir schreiben Dir all das mit großer Nüchternheit, damit Du, der Prophet Jeremia von Jerusalem, nicht falsche Vorstellungen pflegst oder bei denen weckst, für die in der angestammten Heimat kein Bleiben mehr ist. Wir wissen, daß die, die an Leib und Leben bedroht sind, sich von keiner Furcht ab-raten lassen, und daß sie eines Tages so unverhofft bei uns sein werden wie Eleasa und Gemarja. Rate niemandem ab, hierher zu kommen, aber wecke auch bei keinem die Illusion, als gäbe es hier Häuser zu bauen und Gärten zu pflanzen.

Wir, der Rest der Ältesten, beten für Dich und alle, die in der angestammten Heimat unter den schrecklichen Bedingungen leben müssen, in die uns alle ein verlorener Krieg gestürzt hat.

Wir, der Rest der Ältesten, beten auch für das Land, in das uns der HERR DER HEERSCHAREN verbannt hat. Das Wohl dieses Landes zu suchen, ist uns verwehrt; denn wir leben hier als Geduldete.

So leben und hoffen wir auf den Tag unserer Heimkehr.

II) Christine Busta: Beim Lesen des zweiten Paulusbriefes an die Korinther, 2.Kor.3,2-3

Du hast geschrieben: "Wir sind Sein Brief".

Aber wer kann seine Botschaft noch lesen?

Wir sind zu lang unterwegs gewesen.

Als mit dem Blute die Zeichen verblichen,  
haben wir selber gedeutelt, gestrichen,  
borgten zuletzt uns noch fremde Hand,  
bis keiner den rechten Sinn mehr verstand.

Nun steht das Wort verstümmelt und schief:  
unser Fleisch war ein brüchiges Siegel,  
unser Geist nur ein blinder Spiegel,  
und verraten brennt Korinth,  
seit wir Bürger zu Babel sind.

III) (Aus der Bestattungsagende der Text) Offenbarung des Johannes 21,1-5a zu einer Meldung aus der Zeitschrift Publik Forum vom 29.1.1993:

KWAKU A., evangelischer Pfarrer aus Ghana, hat sich in einer Unterkunft für Asylbewerber in München das Leben genommen. Der 35jährige Vater zweier Kinder hatte im Oktober vergangenen Jahres einen Asylantrag gestellt. Fünf Wochen später war dieser Antrag abgelehnt und die Ausweisung des Pfarrers angekündigt worden.

Nach Aussagen des Ausländerbeauftragten des evangelischen Dekanats München, Werner Simon, wirft der Tod des ghanaischen Asylbewerbers "ein trauriges Licht auf die Situation abgelehnter Asylbewerber. Die Selbstmordneigung dieser Personengruppe ist stark gewachsen."

# The Gossner Evangelical Lutheran Church

## JAMSHEDPUR ILAKA

( THE WHOLE CHURCH REGISTERED : JULY 30, 1921 UNDER SOCIETIES REGISTRATION ACT. 21 OF 1860 )

Chairman :  
Rev. K. D. Kerketta

Secretary :  
Mr. M. Indwar

Treasurer :  
Mr. P. U. Bara

Asst. Secretaries :  
Mr. C. N. Hembrom  
Mr. M. Horo

Office :  
G. E. L. CHURCH  
New Sitaramdera, Agrico  
JAMSHEDPUR-831009.

Ref. No. ....

Date 05.11.95

### WELCOME ADDRESS

Most honourable Rev. Dieter Hecker, Director, Gossner Mission, Berlin.  
Rev. Volker Jurgens, Hannover, Germany, Rev. Harald Lehmann, Westfalia,  
and Master Leif Lehmann Son of Rev. H. Lehmann.

We heartly welcome you all in the STEEL CITY of Jamshedpur.  
We are glad to receive you and greeting you in the name of Our Lord  
Jesus Christ, and with our traditional way we welcome you all by saying  
"Jesu Sahai"

Jamshedpur Parish have 15 congregations out of which eight (8)  
are in Urban Area and Seven (7) are in Rural Area.

At present in Jamshedpur Parish total family number is 792,  
confirmed members are 2548 and Biptized members are 4050.

There are Five (5) Pastors, Three (3) Catechist and one (1)  
Candidate are working for spiritual service. Besides that there are  
about Eighty (80) Laymen who are conducting Sunday Church Service.

Jamshedpur Parish have Nine (9) Pucca (Build with Brick and  
cement) Church Four (4) Temporary Church, one union Church and one  
congregation have no Church Building. They are conducting Sunday Church  
Service at a residential Quarters. In the Year 1994, we build a small Church  
at SINI congregation. This Year in 1995, we wish to complete the construction  
work of a big Church at BIRSANAGAR.

Jamshedpur Parish run one Middle School, Two U.P. School and  
one L.P. School. Total number of Student is about 1600. and numbers of  
Teachers is 35.

In Jamshedpur there is no Mission Land. What ever land we have  
is purchased from Local Peaople and from TISCO by us. This practice is  
still continue. New congregation are developing and Church is also being  
constructed. All this work is done by Donation of Local congregation.  
Every WORKER have to pay Half of one day's Basic Pay from his monthly  
income as monthly Donation. We are also collecting one Kg. Rice every week  
from each family. Parish prepare Annual Budget and every congregation are  
working according to Annual Budget. In brief the spiritual and finncial  
condition of Jamshedpur Parish is healthy. Women work and Youth ~~Work~~ is  
also very sound. In all respect Jamshedpur Parish is stand up as a real  
Autonomous Church.

Thank ~~xx~~ You

M. Indwar, Secretary

*M. Indwar*  
5/11/95



# The Gossner Evangelical Lutheran Church

JAMSHEDPUR ILAKA

(THE WHOLE CHURCH REGISTERED : JULY 30, 1921 UNDER SOCIETIES REGISTRATION ACT. 21 OF 1860)

Hony. General Secretary  
M. INDWAR  
9, L/4, Link Road, New Sitaramdera  
Jamshedpur-831009

Ref. No. \_\_\_\_\_

Date 05-11-1995.

## WELCOME PROGRAMME

- 3.25.P.M. -Welcome Song by Sonari Coir Party  
3.30.P.M. -Welcome of German Guest by Mahila Samity  
3.45.P.M. Prayer by Rev.B.Kujur, Chairman  
3.50.P.M. - Welcome Address by Mr.M.Indwar, Secretary  
4.00.P.M. - Presentation of Gift by Mahila Samity  
4.15.P.M. -Massage by Rev.D.Wecker  
4.30.P.M. -Song-Sonari Coir Party  
4.40.P.M. -Massage by Rev.H.Lehmann  
4.55.P.M. -Song by Sonari Coir  
5.00.P.M.-Bhajan by Birsanagar Mandli  
5.10.P.M.-Massage by Rev.V.Jurgens  
5.25.P.M.-Song by Sonari Coir Party  
5.30.P.M.-Qestion & Answer  
6.00.P.M.-Closing Song and Prayer

\*\*\*\*\*

### *Chairman*

Rev. K. D. Kerketta

### *Asst. Pastors*

Rev. S. Purty  
Rev. A. Tete  
Rev. M. P. Horo

### *Asst. Secretaries*

C. N. Hemrom  
M. Horo

### *Treasurer*

P. U. Bara

J. Kecher,

# Kirch' Programm des Jubiläums mit

150 वर्षीय जुबिली समारोह  
गोस्तनर एवजेलिकल लुथेरान कलीसिया  
छोटानांगपुर एवं असम

Nov. 96

## कार्यक्रम

31.10.95

6.00 - 7.30 सुबह " प्रभात फेरी "

संचालन - प्रमुख अध्यक्ष

प्रार्थना - पाद्री जोनसन लकड़ा

जुलूस

7.30 - 8.30 सुबह

" मनसंशोधन आराधना "

उपदेशक - पाद्री वोल्कर यूरगेन्स

अनुवादक - पाद्री सिरिल हेम्ब्रम

2.30 - 5.00

" उद्घाटन समारोह "

संचालन - प्रमुख अध्यक्ष

मुख्य अतिथि - डा. गुन्तर कूषये

गिरजा परिसर द्वार पर स्वागत - स्वागत समिति

मुख्य अतिथि को आमंत्रण एवं स्वागत - प्रमुख अध्यक्ष

प्रार्थना - प्रमुख अध्यक्ष

बाइबल पाठ - यशायाह 60:1-2

1. हिन्दी - सुश्री उषा केरकेट्टी

2. श्री ओसीत लकड़ा

3. जर्मन

गीत - जुबिली कोयर

उद्घाटन प्रक्रिया-1. मुख्य अतिथि, 2. यू. ई. एल. सी. आई., 3. प्रमुख अध्यक्ष

गीत - जुबिली कोयर

स्वागत भाषण एवं परिचय - प्रमुख अध्यक्ष

गोस्तनर कलीसिया का संक्षिप्त इतिहास - पाद्री अलबर्ट मिंज

सांस्कृतिक नृत्य बेथेसदा कॉलेज

अतिथियों के द्वारा शुभकामना एवं संदेश - §1§ §2§ §3§ §4§ §5§ §6§

अनुवादक - पाद्री सिरिल हेम्ब्रम

भजन - थिओलोजिकल कॉलेज

मुख्य अतिथि का संदेश - गुन्तर कूषये, अनुवादक - पाद्री डा. वॉल्टर

विमोचन का कार्य - §1§ जुबिली सोबेनियर

§2§ घरबन्धु

§3§ मुण्डारी हिन्दी इंगलिश भाषाकोष

गीत - जुबिली कोयर

धन्यवाद ज्ञापन - पाद्री डा. मार्शलिन बागे

प्रार्थना - पाद्री वेलस लकड़ा

आशीर्वाद - पाद्री डा. गुन्तर कूषये ।



31.10.95

5.30 - 7.30 संध्या - " सांस्कृतिक कार्यक्रम "

संचालन - सुश्री हेलेन भेंगरा

मुख्य अतिथि - पाद्री उर्तुला हेकर

प्रार्थना - पाद्री रायन के. तोपनो

मुख्य अतिथि का स्वागत एवं परिचय - सुश्री हेलेन भेंगरा

बाइबल पाठ - भजन संहिता 95 : 1-3

§1§ हिन्दी - संजीव तिग्गा

§2§ इंगलिश - पूनम एक्का

§3§ जर्मन -

मुख्य अतिथि का संक्षिप्त संदेश - पाद्री उर्तुला हेकर

सांस्कृतिक कार्यक्रम - शिक्षण संस्थानों के द्वारा

मंत्र संचालन - श्री संजीव तिग्गा एवं सुश्री पूनम एक्का

धन्यवाद ज्ञापन - सुश्री हेलेन भेंगरा

प्रार्थना एवं आशीर्वाद - पाद्री उर्तुला हेकर

01.11.95

2.30 5.00 संध्या - " रांची शहर के  
कार्यक्रम "

नागरिकों के साथ

संचालन - श्री ए.पी. पूर्ती

मुख्य अतिथि - श्रद्धेय आर्च-विश्व स्वामी तेलस्फोर टोप्पो

गीत - जुबिली कोयर

बाइबल पाठ - यशायाह 61 : 1-2

§1§ हिन्दी - पाद्री हेमन्त बाबा

§2§ इंगलिश - सुश्री मेझरेन तिकी

§3§ जर्मन

स्वागत एवं परिचय - श्री ए.पी. पूर्ती। माल्यापर्ण एवं नृत्य स्वागत समिति ।

अतिथियों का संदेश - §1§ बी.के.प्रमाणिक §2§ §3§ §4§ §5§ §5§

मुख्य अतिथि का संदेश - अनुवादक - पाद्री डा. पौल सिंह

गीत - जुबिली कोयर

धन्यवाद ज्ञापन - पाद्री डा. पौल सिंह

प्रार्थना एवं आशीर्वाद - §

§

5.30 - 7.30 " सांस्कृतिक कार्यक्रम "

संचालन - श्रीमती मेरियम मिंज

मुख्य अतिथि - श्रीमती प्रिस्किला सिंह

प्रार्थना - श्री निरंजन एक्का

मुख्य अतिथि का स्वागत एवं परिचय - श्रीमती मेरियम मिंज

बाइबल पाठ -

§1§ हिन्दी -

मुख्य अतिथि का संक्षिप्त संदेश - श्रीमती प्रिस्किला सिंह

नाटक "गोस्फनर कलिसिया की एक झलक" - थिओलोजिकल कॉलेज

मंत्र संचालन - थिओलोजिकल कॉलेज - पाद्री एत. सोए ।



02.11.95

धन्यवाद ज्ञापन - पाद्री डा. सी.ए.बी. तिकी  
प्रार्थना एवं आशीर्वाद - पाद्री डा.सी. ए.बी. तिकी

6.00 - 7.00 सुबह " प्रथम वैपल का अनावरण "

संवादन - प्रमुख अध्यक्ष

मुख्य अतिथि - डा. गुन्तर कुष्ये

गीत - वेथेसदा हाई स्कूल रांची

प्रार्थना - प्रमुख अध्यक्ष

अनावरण - डा. गुन्तर कुष्ये

दो शब्द - मुख्य अतिथि - डा. गुन्तर कुष्ये

स्मरण पत्रों की ओर प्रस्थान

गीत - जुबिली कोयर करो धन्यवाद

श्रद्धांजलि - पाद्री डा. पौल सिंह

वृक्षारोपण - विदेशी मेहमानों एवं जी.ई. स्त. नियमों/अधिकारियों के द्वारा ।

गीत - जुबिली कोयर जुलूस के रूप में गिरा की ओर प्रस्थान

7.15 - 10.30 - " धन्यवाद आराधना "

2.30 - 05.00 - " समापन समारोह "

संवादन - मोडरेटर, मुख्य अतिथि - डा. हंस गोथॉम्स

गीत - जुबिली कोयर

प्रार्थना - पाद्री स्टेमिया तोपनो

बाइबल पाठ - भ्रज संजिता 23:1-6 हिन्दी - डा. लिरन लण्डु

इंग्लिश - श्री अनमोल टोप्पो

मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत एवं परिचय - मोडरेटर ।

गीत - विदेशी अतिथियों के द्वारा

अतिथियों का संदेश

॥ 1 ॥ ॥ 2 ॥ ॥ 3 ॥ ॥ 4 ॥ ॥ 5 ॥ ॥ 6 ॥ अनुवादक - पाद्री सिरिल हेम्ब्रम

विशेष संदेश - पाद्री उर्सुला डेकर मार्टिन जेवर्ग, पाद्री वेन्ड कौजे

अनुवादक - पाद्री डा. पौल सिंह

मुख्य अतिथि का संदेश - डा. हंस गोथॉम्स

अनुवादक - पाद्री डा. पौल सिंह

रंगारंग कार्यक्रम - रलिजाबेथ हाई स्कूल, वेथेसदा मिडिल स्कूल एवं अन्य दल

अतिथियों को भेंट प्रदान

आभार व्यक्त - प्रेस सभा एवं सचिव जुबिली समिति श्री ए.पी.पूती

धन्यवाद ज्ञापन - मोडरेटर

पुष्पों का आदान-प्रदान आदर्श वाक्य एवं संकल्प ॥ हिन्दी, जर्मन का

उच्चारण - मोडरेटर ।

कोरस गीत हाथ धामें हुए - परमेश्वर है एक दृढ़ पहाड़ । पद

प्रार्थना एवं आशीर्वाद वचन - विश्व जयसेल जेकोब ।

" सांस्कृतिक कार्यक्रम " संवादन - श्री सिरिल लकड़ा

मुख्य अतिथि - विल्हेम एवं फ्रांसिस्का

प्रार्थना -

मुख्य अतिथि का स्वागत एवं परिचय - श्री सिरिल लकड़ा

5.30 - 7.30

1. हाउस नं. 3

समर्पण

बाईबल पाठ - भजन संहिता

92: 1-4 हिन्दी - सुश्री रेगीना सिंह,  
इंगलिश - श्री पूनम तोपनो, जर्मन -

मुख्य अतिथि का संक्षिप्त सदेश - विल्हेम स्वं फ्रांसिस्का

अनुवादक - माद्री सिरिल हेम्ब्रम

धन्यवाद ज्ञापन - श्री सिरिल लकड़ा

सांस्कृतिक कार्यक्रम संवादन - सिरिल लकड़ा ।

प्रार्थना स्वं आशीर्वाद - माद्री उतुला हेकर ।

लड एन्ड एंज लिड लडो. 1

लड एन्ड एंज लिड लडो. 1

1. हाउस नं. 3

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण

समर्पण



02.11.95

धन्यवाद ज्ञापन - पाद्री डा. सी.ए.बी. तिकी  
 प्रार्थना एवं आशीर्वाद - पाद्री डा.सी. ए.बी. तिकी  
 6.00 - 7.00 सुबह " प्रथम वैपल का अनावरण"  
 संवादन - प्रमुख अध्यक्ष  
 मुख्य अतिथि - डा. गुन्तर कुष्ये  
 गीत - वेथेसदा हाई स्कूल रांची  
 प्रार्थना - प्रमुख अध्यक्ष  
 अनावरण - डा. गुन्तर कुष्ये  
 दो शब्द - मुख्य अतिथि - डा. गुन्तर कुष्ये  
 स्मरण पत्र की ओर प्रस्थान  
 गीत - जुबिली कोयर & करो धन्यवाद &  
 श्रद्धांजलि - पाद्री डा. पौल सिंह  
 वृक्षारोपण - विदेशी मेहमानों एवं जी.ई. स्ल. नियमों/अधिकारियों  
 के द्वारा ।  
 गीत - जुबिली कोयर & जुलूस के रूप में गिरा की ओर प्रस्थान &  
 7.15 - 10.30 - " धन्यवाद आराधना "  
 2.30 - 05.00 - " समापन समारोह "  
 संवादन - मोडरेटर, मुख्य अतिथि - डा. हंस ग्रीथॉम्स  
 गीत - जुबिली कोयर  
 प्रार्थना - पाद्री मेहमिया तोपनो  
 बाइबल पाठ - भ्रम संजिता 23:1-6 हिन्दी - डा. लिरन मुण्डु  
 इंग्लिश - श्री अनमोल टोप्पो  
 मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों का स्वागत एवं परिचय - मोडरेटर ।  
 गीत - विदेशी अतिथियों के द्वारा  
 अतिथियों का संदेश  
 §1§ §2§ §3§ §4§ §5§ §6§ अनुवादक - पाद्री सिरिल हेम्ब्रम  
 विशय संदेश - पाद्री उर्सुला हेकर मार्टिन जेवर्ग, पाद्री वेन्ड कौजे  
 अनुवादक - पाद्री डा. पौल सिंह  
 मुख्य अतिथि का संदेश - डा. हंस ग्रीथॉम्स  
 अनुवादक - पाद्री डा. पौल सिंह  
 रंगारंग कार्यक्रम - एलिजाबेथ हाई स्कूल, वेथेसदा मिडिल स्कूल एवं अन्य दल  
 अतिथियों को भेंट प्रदान  
 आभार व्यक्त - प्रेस सभा एवं सचिव जुबिली समिति श्री ए.पी. पूर्ती  
 धन्यवाद ज्ञापन - मोडरेटर  
 पुष्पों का आदान-प्रदान आदर्श वाक्य एवं संकल्प § हिन्दी, जर्मन § का  
 उच्चारण - मोडरेटर ।  
 कोरस गीत हाथ धामें हुए - परमेश्वर है एक दृढ़ पहाड़ । पद  
 प्रार्थना एवं आशीर्वाद वचन - विशय जयसेलन जेकोब ।  
 " सांस्कृतिक कार्यक्रम " संवादन - श्री सिरिल लकड़ा  
 मुख्य अतिथि - विल्हेम एवं फ्रांसिस्का  
 प्रार्थना -  
 मुख्य अतिथि का स्वागत एवं परिचय - श्री सिरिल लकड़ा

5.30 - 7.30



बार्डवेल पाठ - भजन संहिता १२: १-४ हिन्दी - सुश्री रेगीना सिंह,  
इंगलिस - श्री पूनम तोपनो, जर्मन -

मुख्य अतिथि का संक्षिप्त सदिश - विल्हेम स्वं फ्रांसिस्का  
अनुवादक - पाद्री सिरिल हेम्ब्रम  
धन्यवाद ज्ञापन - श्री सिरिल लकड़ा  
सांस्कृतिक कार्यक्रम संवादन - सिरिल लकड़ा ।  
प्रार्थना एवं आशीर्वाद - पाद्री उर्तुला हेकर ।

*Aufgabe des 'Kunk'oli' Diöcese  
zu Wahl des Bischof*

To

*Dieter*  
Pastor ~~Director~~ Hecker  
Director, Gossner Mission  
at present Ranchi.

Sub: Election of Bishop of Madhya Anchal.

Dear Rev. Hecker,

Respectfully we the members of Bandhu  
samitee put the following facts over the election  
of Madhya Anchal (Diocese) which was declared void  
by the Central Committee, Ranchi.

(1) The Central Committee headed by the  
Moderator had declared the election void of Rev.

Manohar Tete as Bishop on the plea that he does  
not fulfil the required qualification. The prescribed  
qualification of Bishop as per Constitution is "sound  
theological education" in page 24 of Constitution.

The eligibility does not specifically speak the *qualification*  
such as B.Th., B.D. D.D. etc. This shows that  
Constitution was made in such a way that interpretation  
can be twisted according to the desire of the ill-  
motive authorities. Rev. Manohar Tete is a good  
theologian so his election was quite valid. In  
election system, the choice of the people is the best  
and only method for any post.

CONTD3 P/2

2) It was also said by the Central Committee that the election of Bishop and Members were not made in the jurisdiction of Madhya Anchal area. In para XX Page 17 the composition of the diocesan council in Appendix 'A' shows that in addition <sup>to</sup> Panisai, Khunti-Toli, Beghima one can choose their field for election in the neighbouring Anchals as well. Therefore so wrong was happened in the election of Bishop and other members.

3) The K.S.S. has decided to give some post of Koronji Illaka to Madhya Anchal. Why process of demarcation was not made before election? The intention was preplanned and malafide.

4) The Constitution was made in a over-night but the demarcation of transferred area was not done till now.

5) The Adhyaksh now designated Bishop of S.E. Anchal is playing a big Role to divert his own people asking them not to join Madhya Anchal (Deoces). In our opinion he is the contemporary of Dr. N. Minz.

6) In absence of Bishop and Members of Central Committee from Madhya Anchal (Deoces) how the election of Moderator is valid?

-CONTD.: P/3



we therefore pray for judicious and favourable decision over the issue of election of Bishop and members of Madhya Anchal (Diocese).

We further desire to talk face to face with you. Please appoint suitable time and inform us.

Yours sincerely

*Abha Kerketta.*  
*Prabhu and K.S. Menon*  
*and Madhya Anchal.*  
*Lalit Teta.*

Secretary

Bandhu Samittee,  
G.E.L. Church,  
Ranchi.

Copy to -

- (1) The Moderator, G.E.L. Church, Ranchi.
- (2) All Bishops of G.E.L. Church.

# Gossner Evangelical Lutheran Church

IN CHOTANAGPUR & ASSAM

(Regd. under Societies Registration Act XXI of 1860)

Vide No. 273 J of 30-7-1921

NEW DELHI PARISH/ILAKA

Chairman  
REV. J. BORUN BISWAS

Secretary  
DR. SEM TOPNO

Treasurer  
BIRAJ MINZ

C/o C-150 MMTC COLONY  
NEW DELHI 110017

Ref. No. ....

GELC/ND/P 93

Dated 6/5/93

The Director

Gossner Mission Berlin

West Germany

Dear Sir,  
Many greetings in the name of our Lord Jesus Christ. I got the letter of Mrs. Hecker in time. Today on 6th of May I came to meet her at Centre Hotel. I found that she had gone to city, therefore I used the time by writing a letter to you.

After a gap of ten years we have decided to purchase a plot of land for New Delhi Parish Centre. We have tried our best to get a plot of land from the Government but we were failed to do so.

Therefore I am very happy to inform you that we have purchased a plot of land for GELC Church, New Delhi Parish/Ilaka at Saidulla Jib on M.B. Road Saket, New Delhi.

I requested the Promukh Bihyatskh to send two observers from the K.S.S. Sabha. In response I have received telegramme that Rev.

S. Poppo (Up-Promukh Bihyatskh) and Mr. C.S. Trigga are coming for the final dealing for the plot <sup>for</sup> which is fixed on 10th of May,

1993.

In Delhi the cost of land is very high. We have to pay sum of Rs. 97100/- only for the plot which is measuring about 400 Sq. yds at the rate of 2700/- only per Sq. yds. We have come to an agreement that the whole amount for the plot will be paid within four months.

We have already taken the position of the plot, and construction work for the boundary wall has been completed. We are thinking to start our Sunday Service from the next month.

Sir, the money which we have collected since last ten years will be finished to purchase this plot. Now we need more about 30 lakhs for the construction of a multi storied building with its church building, parsonage, guest house and Community Centre.

Please convey this message to our donors, friends and wellwishers that God has provided a plot of land to New Delhi Parish/Hakra. Many greetings from G.D.M.C., New Delhi Parish/Hakra.

Yours sincerely,

Yours in Christ -  
Rev. J. Borm Bishar

14- Jangpura B.  
New Delhi - 11



ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

ה' עתה יתקבל ה' עתה יתקבל

| ਤੇ ਮੇਰੇ ਹੋਰ ਭਰਾਵਾਂ ਨਾਲ  
 ਮੇਰੇ ਪਿਤਾ ਜੀ ਦੇ ਨਾਲ | ਤੇ ਮੇਰੇ ਮਾਂ ਪਿਤਾ  
 ਦੇ ਭਰਾਵਾਂ ਨਾਲ ਤੇ ਮੇਰੇ ਭਰਾਵਾਂ ਦੇ ਮਾਂ. 1914  
 ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਿੱਸੇ ਨਾਲ 14 ਮਈ 1914

| ਤੇ  
 1914 ਦੇ ਹਿੱਸੇ ਦੇ ਹਿੱਸੇ-ਨਿਯਮਾਂ ਦੇ ਅਨੁਸਾਰ  
 ਤੇ ਮੇਰੇ 12 ਮਾਂ ਮਾਂ ਦੇ ਭਰਾ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਮਾਂ 14 ਮਾਂ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ | ਤੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ-ਨਿਯਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ

| 1914 ਦੇ ਮਾਂ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 14 ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ  
 14 16-1-21 ਦੇ ਮਾਂ ਦੇ ਮਾਂ | ਤੇ

Gossner  
Mission





A brief Statement to the Gossner Mission  
from NWGEL Church on the occasion of 150  
yrs. Jubilee of the Advent of the Gospel  
in Chotanagpur.

It is our great privilege and honour to welcome our honourable guests from Gossner Mission. 150 years ago you brought the Gospel of Christ to our people which changed our lives. We are thankful to you for sparing your valuable time to be with us. Please allow us to place before you a few salient points regarding the prevailing situation in our Church for your kind consideration.

1. The key issue in our Church is similar to many other Churches in the third world not only in India. It is the regional, cultural and Ethnic Conflicts manifesting primarily in the misuse of communal majority to suppress the minority in all affairs of the Church. Such conflicts have taken place in our Church since 1935, particularly in administrative and financial matters, and it is in no way a Doctrinal conflict.

We do not intend to present a detailed account of these events, but we propose to place before you a brief account of the situation. We request you to utilize your good office together with UELCI to continue the negotiation for a fair and brotherly solution to the problem.

2. We re-affirm our commitment to continue the negotiation as we have already expressed in our letter to UELCI Executive Secretary, copies of which have been sent to you. As you already know the disputes and conflicts are prevailing since 1935 and several attempts have been made to resolve them. To mention a few among them are:-

(i) Negotiation led by Director Hans Lokies.

(ii) Director Martin Seeberg.

(iii) Director Dieter Hecker with Prof. Dr. Hans Grot-hous. All these negotiations and reports recognise our grievances and attempt to resolve them. The other side, however, tried to avoid the negotiation itself and under one pretext or other sabotaged and stepped out of the negotiation refusing to accept the proposed solution.

After every negotiation Gossner Mission has continued its relationship one sidedly as though nothing had happened in the negotiation and the problem does not exist at all. This has worsened the whole situation as your support restores their status quo with full power. This support of Gossner Mission legitimise them in national and international forums. Otherwise it is known that their ecumenical relationship is minimal. It is not our intention to blame any one regarding the devastating effect particularly in the field of property and administration caused by this empowerment.

3. As we celebrate the 150 years Jubilee of the Advent of the Gospel, we perceive that the situation of our society in the context of the surrounding societies is very much similar to that when the first Missionaries arrived. The suppression and oppression of all kinds including social economic, cultural & religious are enormous. If the situation continues like this, it may lead to the genocide of the Adibasies (majority of members of our Church). We are grateful that this has been realised by The Curatorium and brought to the notice of the Federal Govt. of Germany (published in the quarterly magazine of L.W.F). The Gossner Mission then extended its brotherly hand with Christian love and spirit taking the side of the oppressed, exploited and the marginalised. Out of our Christian faith it is our firm conviction that Christianity and Christian Mission takes the side of oppressed, exploited, minority and marginalised people for their fair and justified cause. We ourselves in all our weaknesses are willing and committed to witness and serve in this spirit. We still firmly believe and hope that Gossner Mission shares the same Christian and missionary concern even today.

Neverthe-less we want to point out the very fact that we are sitting in this kind of office, as merely because of their hinderance not allowing to give this office a modern shape.

We welcome you once more whole heartedly. Thank you.

( Bishop Dr.N.Minz )  
31/10/95



**Vorschlag für ein Fürbittengebet zum 150jährigen Jubiläum der Evangelisch-Lutherischen Gossner Kirche in Indien am 2. November 1995**

**Herr, unser Gott,**

oft sind wir so in unseren eigenen Aufgaben gefangen, daß wir Dein Handeln mit allen Menschen nicht wahrnehmen. Du aber wirkst mit Deinem Wort in der Nähe und in der Ferne. So gedenken wir heute besonders der Evangelisch-Lutherischen Gossner Kirche in Indien. Wenn die Kirche in Indien und wir hier in Deutschland das Jubiläum feiern, wollen wir Deiner Treue gedenken und dafür danken. Dir allein gebührt Ehre und Ruhm.

150 Jahre hast Du diese Menschen begleitet. Sie waren von der Gesellschaft ausgestoßen und benachteiligt, Du hast ihnen neue Würde gegeben und die Möglichkeit zu befreiendem Handeln. Wir bitten Dich, laß die Kirche der vergangenen 150 Jahre nicht nur in Dankbarkeit gedenken, sondern begleite sie weiterhin in eine sich immer schneller ändernde Situation und nicht voraussehbare Zukunft hinein.

**Herr, wir rufen zu Dir: (Gemeinde): Herr, erbarme Dich!**

Vater, wir wissen, daß ohne Deine Gegenwart keine Kirche bestehen kann. Wir sind aufgerufen, Deine Werkzeuge zu sein. Oft fehlt uns der Mut dazu, oft die Ausbildung und Kompetenz, Deinen Auftrag zu erfüllen. Auch in der Gossner Kirche brauchst Du Menschen, die, geleitet von Deinem Wort, bereit sind, Verantwortung zu übernehmen und sich den Herausforderungen unsrer Zeit offen zu stellen.

**Herr, wir rufen zu Dir: (Gemeinde): Herr, erbarme Dich!**

Du hast in Deiner Kirche Menschen zu verschiedenen Aufgaben und Ämtern berufen. Wir danken Dir für die unzähligen Gemeindeglieder, die ihren Glauben treu in einer nichtchristlichen Umwelt bezeugen. Gib aber auch Menschen, die bereit sind, sich für Leitungsaufgaben zurüsten zu lassen, ihren Dienst treu in der Verantwortung vor dir zu tun. Vieles überschreitet die Kraft und Ressourcen dieser Kirche, deshalb mache uns offen für ihre Notwendigkeiten und befähige uns zum Teilen und Mitteilen.

**Herr, wir rufen zu Dir: (Gemeinde): Herr, erbarme Dich!**

Herr, wir danken Dir für Deine Güte und Langmut, die Du trotz allen unseren Schwächen und Fehlern mit uns bewiesen hast. Du hast uns durch die Botschaft des Apostels Paulus ermahnt, von Deiner Gnade alles zu erwarten und uns damit genügen zu lassen. Wir vertrauen auf Deine Gnade, Deine Wort und Deine Zusage, daß Deine Kraft gerade in den Schwachen mächtig ist. Im Namen unsres Herrn Jesus Christus.

**Amen.**

---

Die Gossner Mission feiert das 150jährige Jubiläum der Ankunft der ersten vier Missionare der Gossner Mission bei den Adivasi in Ranchi / Chotanagpur vom 6.-8. Oktober 1995. Die Feiern in Indien sind vom 31. Oktober bis 1. November 1995. Von daher würden sich entweder der 8. Oktober oder der 5. November für ein besonderes Gedenken in den Gemeinden in Deutschland nahelegen.

Berlin, den 10. Juli 1995  
Ursula Hecker, Indienreferentin

**Proposal for a prayer of Intercession for the 150 Years' Jubilee of the  
G.E.L. Church in Chotanagpur and Assam for Congregations and  
Churches in Germany**

**Lord, our heavenly Father,**

We are often so preoccupied with our own matters that we do not take notice of your work among other people. But you are active with your work in regions near and far from us. So we remember today the Gossner Evangelical Lutheran Church in India. When the churches in India and Germany celebrate the 150 years jubilee, we commemorate your faithfulness and thank you for this. To you be all the glory and honour.

You have been with the people of Chotanagpur through the centuries. They had been excluded from the main society of their country and become discriminated. You have given them new dignity, self respect and the ability to acts of liberation. We ask you to grant that this jubilee will not only be a matter of commemoration of your great deeds in the past, but be also with them in the process of adjustment to a situation of rapid social change and in their way into an uncertain future.

**Therefore we pray!**

**Lord have mercy.**

Our Father, we know that without your help and support no church can exist. We are called to be your instruments. Often we miss the courage, the training and the ability, to fulfill your mandate. You need people in the G.E.L. Church, who are prepared to take over responsibility under the guidance of your word, and to meet the challenges of our time with an dedicated heart and an open mind and to work for the unity of the church, even if there seem be insurmountable obstacles and hinderances.

**Therefore we pray!**

**Lord have mercy!**

You have called persons in your church for different tasks and ministries. We thank you for the innumerable members of the church, who confess their faith in a non-christian environment. Grant that people may be prepared to take over leadership, to be trained for that and do their service faithfully in your presence. There are many things which are beyond the strength and ressources of our churches, therefore open us and prepare us to see their needs and to share our spiritual and other gifts mutually.

**Therefore we pray!**

**Lord have mercy!**

Lord, we thank you for your Goodness and Patience, which you have shown towards us in spite of all our weaknesses and mistakes. You have admonished us through the words of St. Paul, to expect all from your mercy and to be content with it. We trust in your mercy, in your word and promise that your strength is powerful in the weak. We ask all this in the name of our Lord and Saviour, Jesus Christ.

**Amen.**

Berlin, 17th July, 1995

India Desk of Gossner Mission

Fennstr. 31 - 12439 Berlin

Tel. 0049-30-6317809 / Fax: 6361198

*A Note for  
Activists, NGOs  
and  
Concerned Friends*

**ABOUT**

**BEGGING BOWLS,**

**CARROTS AND STICKS**

Over thirty persons, comprising of representatives of various action groups, people's movement, NGOs, members of the academic community as well as concerned individuals met in Bangalore from 5th to 7th February 1995 and extensively discussed the documents relating to the forthcoming UN World Summit For Social Development at Copenhagen in March 1995. As a result of the deliberations, the meeting adopted the following statement.



## THE UN WORLD SUMMIT FOR SOCIAL DEVELOPMENT

The Draft Declaration of the UN World Summit For Social Development to be held in Copenhagen intends all member states, the developing countries in particular, to be committed to complete transformation into market economies through the Structural Adjustment Programmes (SAP). The attempt comes at a time when the experience about SAP in several countries has raised serious doubts about its efficacy in any development worth the name. Besides the Draft aims at legitimising, under the agenda of social development, all the tenets and provisions of the recently concluded Uruguay Rounds of discussions over General Agreement on Tariffs and Trade (GATT). In its totality the Draft prepares the foundation for a new world social order in which the state is to be rid of all welfare and developmental functions and to remain completely delinked from the civil society. At the level of international relations, it provides for cessation of most of the erstwhile roles of the UN and handing those over to the Bretton Woods twins, the World Bank (WB) and the International Monetary Fund (IMF), the two key instruments of international finance capital. What is most shameful is that the agenda of an unequal and exploitative world order is being promoted under the rubric of alleviation of poverty and employment generation in the developing world. In short this is an attempt to provide built-in structural stability to imperialism as the sole decisive force in the lives of peoples and their societies the world over. It is the SAP which has been sought as an instrument of that process under the rhetoric of social development.

The statements of the questions of culture, ethics, or human values are only an extension of that rhetoric. While it talks about the need for protecting the desired diversity of cultures, the declarations and commitment in their totality impose a single market-driven development model, which can only force all peoples and their communities into the unified system of cul-

ture and values. What it really attempts to do is to usher in a homogenised, amorphous mass of mindless consumers and to stamp out, in the name of socially integrating the people, those at the bottom of the social pyramid in particular by forcing them into what is usually seen as the "mainstream". What it actually promotes is the value "of the free market", dominated by fierce competition amongst nations, communities and even individuals.

The sum and substance of the declaration would be the setting up of yet another Fund, to be surely mediated by the Bretton Woods institutions which the national governments of the poor and developing countries are eager to utilize to further implement precisely the kinds of measures which neither alleviate poverty nor curb rampant unemployment in these countries. Within this framework it is futile to respond to this document in detail since its very framework is in question.

Throughout the document, one thing is repeatedly harped upon: that markets, "dynamic open competitive markets", and structural adjustment programmes are axiomatic while poverty alleviation is incidental. There are no less than three specific references (Action 9 C, 10 C and 11 C) calling for "implementing the Uruguay Round as scheduled", stressing the "opportunities available" (in the context of the Uruguay Round Agreements) and making it clear that support for the implementation of strategies adopted by the developing countries is contingent on these measures being "agreed by the international community". In other words this "international community" (read Bretton Woods institutions) will hold a veto power on development.

As regards the commitments, some of them, verge on the comical. For example, those relating to health represent a complete dismantling of the much more important pledge of Alma Ata of Health for All by 2000.

In essence the Draft Declaration comes as the cul-

mination of a process, consciously introduced over the last several years, of fragmenting the entire question of development into autonomous issues like Environment, Women or Biodiversities, instead of as a comprehensive concept and programme of development.

Besides, with the retreat of the UN from the role assigned to it over time, it is the World Trade Organisation (WTO) and the IMF-WB which will together be arbiters of life and society in the developing countries.

### **THE GOVERNMENT OF INDIA DOCUMENT:**

The India National Report for the Summit should more appropriately have been titled "The Government of India National Report". A mishmash of Plan documents and Ministry reports, the document is replete with exaggerations, misrepresentations, errors and down right falsehoods.

On the one hand, the most basic figures on poverty are misrepresented; on the other hypocritical and false claims like the impending hundred percent elimination of child labour in hazardous industries in the next sixty months, are made as a matter of course. The report is in fact a sickening list of claims of achievements and of governmental schemes that have neither eradicated poverty nor generated employment. Many of these schemes have been evaluated by independent experts and sometimes by the Government's own machinery, as deeply flawed and wanting. Yet, this list is trotted out as evidence of the government's working towards a just social order.

The Government has inspired several meetings across the country in which it has sought legitimacy for this draft in a furtive, half guilty manner. Perhaps this reflects a need to co-opt the intelligentsia or to misinform the Parliament that a wide spectrum of the intellectuals was consulted a means of conferring a spurious legitimacy on the appalling contents of this document.

It becomes essential for us, therefore, to assert that



the GOI report does not represent national opinion. It is incapable of any improvement or meaningful amendments. It's central objective seems to be to impress on the forces behind the Social Development Summit (SDS) the following:-

- That India unreservedly accepts the philosophy that the Bretten Woods institutions are trying to institutionalise through, among the other channels the SDS.
- That India will vigorously pursue further the principles and policies of the SAP and of the supposedly free market principles with increasing dominance of TNCs.
- And that India would willingly go in for more of the same so long as the funds are forthcoming from the west.
- The report conveys the message that the Government senses the establishment of the social development fund as the most likely and important outcome of the SDS and that it is desperate to acquire the sizable share of the same.

In short, this report serves as the Governments' latest begging bowl, asking for money for the same flawed schemes and priorities that have led as it's own data (not found in this report!) show to an increase in the poverty and a deepening of inequality. By its uncritical acceptance of the principle of the SDS Draft, the Government also accepts the latest fierce commitment to as well as reiteration and reinforcement of the Uruguay Round of the GATT and the World Trade Organisation (WTO).

A Government which did not dare debate these issues in the Parliament, that lacked the courage to face the elected representatives of the Indian people, including the MPs from its own party, on the WTO issue, a Government that amended the Indian Patents Act By an Ordinance at the dead of the night, has no legal, political or moral right to do this.

We categorically disassociate ourselves from this Government of India report and reject it on all counts.

## ISSUES FOR ACTION EMERGING OUT OF THE SOCIAL DEVELOPMENT SUMMIT

The charade and facade of participatory consultation seems to have reached a climax with the ongoing processes leading to the UN World Summit For Social Development at Copenhagen in March 1995. Having set the basic framework and agenda for the final declaration official delegations of the World are going through the farce of Preparatory committees to legitimise a Declaration where the main thrust is to establish the market economy, mediated by the GATT agreement and the WTO and the Bretton Woods financial institutions as a bedrock for achieving poverty alleviation, increased employment and social integration!

Willingly or unwillingly, many NGOs the world over are sucked into the vortex of these processes with varying degrees of hope to make some kind of an intervention. But it is time to review the NGO role in these ongoing processes, particularly since a pattern has been set by these UN Summits. The experience of the Rio, Cairo and Vienna World Summits need to be analysed to rechart the NGO role in these processes. What is becoming increasingly evident is that these UN Summits are instruments of binding poor and developing countries to trade, environmental, human rights and developmental concerns of the developed nations, and in the process, have eroded the credibility and the autonomous character of the UN system itself. It is also clear that the UN Charter is being used as a legal framework to foist the social, ethical and developmental strategies of the Bretton Woods terrible twins, IMF and the World Bank.

The Draft Declaration of the SDS and the India National Report can not but be rejected outright, the former since it binds countries to view social development as an adjunct to market economy and SAP and the latter for its utter absurdity. In this scenario, it

seems futile for NGOs to engage themselves in para by para amendments to the Draft Declaration, as that would amount to a tacit acceptance of the basic framework and legitimise the notion of a futile participatory process.

What would seem, however, to be important is for the NGOs to foresee the kind of negative impacts the SDS Declaration would have on the people of the country and to work towards resisting the fall outs after India's signing on the dot. One immediate likely fall out is that more funds would become available in areas like health, education, women and child welfare etc., from multilateral lending institutions to promote their kind of programmes in these vital areas. This would tend to put severe strain on those policies and plans that many NGOs feel are appropriate for the country. This is an area NGOs would need to be vigilant about by not only blocking such governmental programmes, but by also ensuring that easy availability of such funds to NGOs themselves does not undermine their countervailing capacity. The kind of distortion brought about by the Global Environment Facility, after Rio Earth Summit need to be assessed by the NGOs in order to deal with the post-Copenhagen scenario. The other major task of NGOs would be to link up with mass movements to create a political atmosphere where the implementation of negative policies and programmes in the post-Copenhagen scenario becomes difficult for the Government. This evidently requires a massive information and awareness programmes that reaches the remotest parts of the country.



- ☐ K.N. Panikkar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi.
- ☐ Kumaresch chakraverty, Delhi University.
- ☐ Vinod Raina, Eklavya, Bhopal.
- ☐ M.A. Oommen, Institute of Social Sciences, New Delhi.
- ☐ Jaya Mehta, Public Interest Research Group, New Delhi.
- ☐ Biswaji Dhar, RIS, New Delhi.
- ☐ Rajendra Sall, People's Union for Civil Liberties, Raipur.
- ☐ Madhura Swaminathan, Indira Gandhi Institute of Development Research, Bombay.
- ☐ Wilfred D'Costa, SAMVAD, Ahmedabad.
- ☐ P. Sainath, Bombay.
- ☐ Ammu Abraham, Centre for Education & Documentation Bombay.
- ☐ Ninan Koshy, Trivandrum.
- ☐ Sebastian Hongrany, Bangalore.
- ☐ John P. Abraham, Asha Kendra, Puntamba.
- ☐ Rajan Singh, NCCI-Urban Industrial Rural Mission, Nagpur.
- ☐ Ajit Muricken, Vikas Adhyayan Kendra, Bombay.
- ☐ G. Anton Gomez, Tamilnadu Fishermen Union, Tamil Nadu,
- ☐ Ram Bapat, Pune.
- ☐ Raajen Singh, Indian National Social Action Forum, Bombay.
- ☐ A.M. Sahay, Goa.
- ☐ John DeSouza, Center for Education & Documentation, Bangalore.
- ☐ Gopal Guru, University of Poona, Pune.
- ☐ N. Vasudevan, All India Blue Star Employees Federation, Bombay.
- ☐ Nendunchezian, Poovaiagin Nanbargal, Madras.
- ☐ V. S. Roy David, Coorg Organization for Rural Development, Karnataka.
- ☐ Indu M.G., Centre for Education & Documentation, Bangalore.
- ☐ Kalpana Mehta, People's Link, New Delhi.
- ☐ Anil K. Chaudhary, Popular Education And Action Centre, New Delhi.
- ☐ Tapoti Chakravarty, New Delhi.
- ☐ Sandeep Pendse, Vikas Adhyayan Kendra, Bombay.

**Copies available at:-**

**INDIAN NATIONAL SOCIAL ACTION FORUM (INSAF)**  
**L. 45-A, MALVIYA NAGAR,**  
**NEW DELHI-110017**

सक्रिय कार्यकर्ताओं, स्वयंसेवी संस्थाओं और  
सामाजिक सरोकारों से जुड़े मित्रों के नाम

भीख के कटोरों,  
पुचकारों  
और  
फटकारों की दास्तान

देश के विभिन्न सक्रिय समूहों, जन आंदोलनों, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधियों, बुद्धिजीवियों तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े 30 से अधिक व्यक्तियों की बैठक 5-7 फरवरी, 1995 को बंगलोर में हुई जिसमें मार्च 1995 में कोपेनहेगन में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सामाजिक विकास सम्मेलन से संबद्ध दस्तावेजों पर विचार के साथ बातचीत की गयी। तीन दिनों के विचार-विमर्श के बाद बैठक की ओर से निम्नांकित वक्तव्य जारी किया गया :

## सामाजिक विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र विश्व सम्मेलन

सामाजिक विकास के लिए कोपेनहेगन में आयोजित होने वाले संयुक्त राष्ट्र विश्व सम्मेलन के मसौदा घोषणापत्र का मकसद सभी सदस्य देशों—खासतौर से विकासशील देशों को ढांचागत समायोजन कार्यक्रमों के जरूरत पूरी तरह बाजार अर्थव्यवस्था के अधीन नियंत्रित करना है। यह कोशिश ऐसे समय की जा रही है जब अनेक देशों में ढांचागत समायोजन कार्यक्रम का अनुभव सुखद नहीं रहा है और इन अनुभवों ने इस शंका को जन्म दिया है कि क्या इस कार्यक्रम के अंतर्गत किसी तरह का विकास संभव है? इसके अलावा इस मसौदे का मकसद सामाजिक विकास की कार्यसूची के तहत उन सभी सिद्धांतों और व्यवस्थाओं को वैधता प्रदान करना है जिन्हें हाल ही में तटकर और व्यापार संबंधी सामान्य समझौते (गैट) के उरुग्वे राउंड में निर्धारित किया गया था। कुल मिलाकर देखें तो यह मसौदा एक ऐसी नयी विश्व समाज व्यवस्था की बुनियाद रखने की तैयारी है जिसमें राज्य के पास से जन कल्याण और विकास संबंधी कार्य छीन लिए जाएंगे और इसे पूरी तरह सभ्य समाज से अलग रखा जाएगा। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के स्तर पर इस मसौदे में ऐसी व्यवस्था दिखाई देती है कि अब तक संयुक्त राष्ट्र की भूमिकाएं अदा करता रहा है उसमें से अधिकांश भूमिकाएं अब विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा अदा की जाएंगी जो अन्तर्राष्ट्रीय महाजनी पूंजी के दो प्रमुख उपकरण हैं। सबसे ज्यादा शर्मनाक बात तो यह है कि एक गैर बराबरी और शोषण पर आधारित विश्व व्यवस्था कायम करने का कार्यक्रम विकासशील देशों में गरीबी उन्मूलन और रोजगार के अवसर पैदा करने के नाम पर किया जा रहा है। देखा जाए तो यह एक ऐसा प्रयास है जो समूची दुनिया में लोगों के जीवन और लोगों के समाजों में एकमात्र निर्णायक शक्ति के रूप में साम्राज्यवाद को अंदरूनी तौर पर मजबूती प्रदान करता है। सामाजिक विकास का राग अलापते हुए ढांचागत समायोजन कार्यक्रम को ही इस प्रक्रिया का उपकरण बनाया गया है। संस्कृति, नैतिकता अथवा मानव मूल्यों के सवाल पर भी इस बयान में जो कुछ कहा गया है उसका स्वर भी वही है। एक तरफ तो यह संस्कृतियों के विविधता की प्रशंसा करते हुए उनको संरक्षण देने की जरूरत



पर बल देता है लेकिन कुल मिलाकर इसकी घोषणाओं और संकल्पों को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि यह बाजार चालित विकास का अकेला ऐसा मॉडल थोपना चाहता है जो संस्कृति और मूल्यों की एक खास प्रणाली में सभी लोगों और उनके समुदायों को शामिल होने के लिए बाध्य कर दे। दरअसल इसका प्रयास एक विवेकहीन उपभोक्ताओं का समूह तैयार करना है और जनता के सामाजिक एकीकरण के नाम पर लोगों को निकाल बाहर करना है जो सामाजिक ढांचे में एकदम नीचे पड़े हैं। अपने इस प्रयास में यह उस "उक्त बाजार" के मूल्यों को बढ़ावा देता है जिस पर देशों, समुदायों और यहाँ तक कि व्यक्तियों के बीच चल रही जबर्दस्त होड़ का प्रभुत्व है।

इस घोषणापत्र की मुख्य बात एक और "कोष" स्थापित करना है जिसका संचालन निश्चित रूप से विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ही करेंगे और जिसके इस्तेमाल के लिए गरीब और विकासशील देशों की राष्ट्रीय सरकारें बेताब हैं ताकि वे इसके जरिए फिर उन्हीं उपायों को लागू कर सकें जिनसे इस देश में न तो कभी गरीबी दूर हो सकी और न बेरोजगारी में ही कोई कमी आई। इस नजरिए से देखें तो इस दस्तावेज पर विचार करना बेकार है क्योंकि इसके मूल ढांचे पर ही प्रश्नचिह्न लगा हुआ है।

समूचे मसौदे में एक बात को बार-बार दुहराया गया है कि "गतिशील खुले होड़ वाला बाजार" और ढांचागत समायोजन कार्यक्रम तो स्वयंसिद्ध हैं जबकि गरीबी उन्मूलन महज प्रासंगिक है। इसमें कम से कम तीन ऐसे संदर्भ दिए गए हैं (रेक्शन 9सी 10सी और 11सी) जिसमें "उपलब्ध अवसरों" पर "पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उरुग्वे राउंड को लागू करने" का आह्वान है और स्पष्ट किया गया है विकासशील देशों को मदद इस बात पर निर्भर होगी कि वे जो रणनीतियाँ अपना रहे हैं वे उन पर "अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय की सहमति है अथवा नहीं। दूसरे शब्दों में कहें तो यह अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय (अर्थात् विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) विकास के मामले में वोटो का इस्तेमाल करेगा।

अब तक किए गए बायदो और संकल्पों के संदर्भ में देखें तो कुछ बातें तो बहुत हास्यास्पद लगती हैं। मसलन अल्माअ में काफी महत्वपूर्ण संकल्प लिया गया था कि "सन् 2000 तक सबको स्वास्थ्य" सुलभ होगा लेकिन इस मसौदे में जहाँ स्वास्थ्य का जिक्र आया है, व सारे बायदो नदारद हैं।

संक्षेप में कहें तो प्रस्तावित घोषणापत्र पिछले कई वर्षों से जारी उस प्रक्रिया का निष्कर्ष है जिसमें एक सोची समझी साजिश के तहत विकास के समूचे सवाल को समग्र रूप से लेने की बजाय इसे पर्यावरण, महिलाएं अथवा जैव विविधताओं जैसे स्वायत्त मुद्दों में बांट दिया गया।

इसके अलावा वर्षों से निभा रही अपनी भूमिका से संयुक्त राष्ट्र के पीछे हटने के साथ ही अब विश्व व्यापार संगठन और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष-विश्व बैंक मिलकर विकासशील देशों के लोगों के जीवन और समाज का फैसला करेंगे।

### भारत सरकार का दस्तावेज

इस शिखर सम्मेलन के लिए भारत की ओर से तैयार राष्ट्रीय रिपोर्ट को "भारत सरकार की राष्ट्रीय रिपोर्ट" का नाम दिया गया होता तो ज्यादा अच्छा रहता। यह पंच वर्षीय योजना के दस्तावेजों और मंत्रालयों की रिपोर्टों के घालमेल से तैयार एक ऐसी रिपोर्ट है जो बड़बोलापन, गलतबयानियों और एकदम झूठे दावों से भरपूर है।

एक तरफ तो इसमें गरीबी से संबंधित बुनियादी आंकड़े गलत पेश किए गए हैं और अगले साठ महीनों में खतरनाक उद्योगों से बाल मजदूरी को सौ फीसदी खत्म करने जैसे झूठे दावे पेश किए गए हैं। दरअसल यह उपलब्धियों के झूठे दावों की ऐसी सूची है जिसे देख कर ऊब पैदा होने लगती है। इन तथाकथित उपलब्धियों को हासिल करने में उन योजनाओं का जिक्र किया गया है जिनसे न तो गरीबी दूर हुई है और न किसी तरह के रोजगार ही पैदा हुए हैं। इनमें से कई योजनाओं का मूल्यांकन निष्पक्ष विशेषज्ञों और कभी-कभी तो खुद सरकार के ही तंत्रों द्वारा किया गया है और जबर्दस्त खामियों से भरपूर पाया गया है। इन सबके बावजूद दावों की इस सूची को न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था कायम करने की दिशा में सरकारी कामों का प्रमाण बताया गया है।

सरकार ने देश में कई बैठकों का आयोजन कराया जिसमें इसने नजर बचाते हुए आधे अपराधी की मुद्रा में इस मसौदे को मंजूरी दिलानी चाही। शायद यही वजह है कि इसने अनेक बुद्धिजीवियों को पटाया तथा संसद में झूठा बयान दिया कि दस्तावेज पर तमाम बुद्धिजीवियों की राय ले ली गयी है। दस्तावेज को फर्जी वैधता दिलाने का यही एक तरीका था।

इसलिए हमें इस बात पर जोर देने की जरूरत है कि भारत सरकार की रिपोर्ट राष्ट्रीय राय का प्रतिनिधित्व नहीं करती। इसमें किसी तरह के

सार्वक सुधार या संशोधन की गुंजाइश नहीं है। इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक विकास सम्मेलन के साथ जुड़ी शक्तियों को यह बताना है कि—

- कि भारत बिना किसी संकोच के यह मानता है कि ब्रेटनवुड की दोनों संस्थाएं (विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) सामाजिक विकास सम्मेलन को संस्थागत रूप देना चाहते हैं।
- कि भारत बहुराष्ट्रीय निगमों के बढ़ते प्रभुत्व के साथ ढांचागत समायोजन कार्यक्रम के सिद्धांतों और नीतियों का तथा मुक्त बाजार के कथित सिद्धांतों का पूरी ताकत के साथ पालन करेगा।
- और यह कि भारत इन नीतियों का तब तक पालन करता ही रहेगा जब तक पश्चिम से उसे पैसे मिलते रहेंगे।
- इस रिपोर्ट से यह आभास मिलता है कि सरकार को इस बात का सुराग लग गया था कि सामाजिक विकास सम्मेलन का सबसे संभावित और महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामाजिक विकास कोष की स्थापना होगी और इसी लिए यह उस कोष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पाने के लिए बेताब है।

संक्षेप में कहें तो इस रिपोर्ट से पता चलता है कि सरकार एक बार फिर भीख का कटोरा लेकर उन्हीं नाकामयाब योजनाओं और प्राथमिकताओं के लिए — जो खुद उसके ही आंकड़ों से बताती हैं कि इनसे देश में गरीबी और असमानता में इजाफा हुआ है—कोपेनहेगन जाना है। सामाजिक विकास सम्मेलन के मसौदे के सिद्धांतों को बिना किसी आलोचना के स्वीकार करके सरकार ने गैट के उरुग्वे राउंड तथा विश्व व्यापार संगठन के सिद्धांतों के प्रति भी अपनी प्रतिबद्धता का भी प्रदर्शन किया है।

जो सरकार यह साहस नहीं जुटा सकी कि इन मुद्दों पर संसद में बहस चलाए, जिस सरकार के अंदर यह साहस नहीं हुआ कि वह विश्व व्यापार संगठन के मुद्दे पर खुद अपनी ही पार्टी के सांसदों सहित भारतीय जनता के निर्वाचन प्रतिनिधियों का सामना कर सकें। जिस सरकार ने आधीरात में एक अध्यादेश के जरिए भारतीय पेटेंट कानून में संशोधन किया हो उसे यह करने का कानूनी, राजनीतिक अथवा नैतिक अधिकार बिलकुल नहीं है।

हम भारत सरकार की इस रिपोर्ट से बहुत साफ शब्दों में खुद को अलग करते हैं और इसे पूरी तरह नामंजूर करते हैं।



सामाजिक विकास सम्मेलन से उभरने वाले मुद्दे और कार्यवाही कोशाफ की मार्च 1995 में कोपेनहेगन में आयोजित संयुक्त राष्ट्र सामाजिक विकास सम्मेलन की तैयारी के सिलसिले में सहभागी बिचार विमर्श के मादकी की प्रक्रियाएं अब अपने चरमबिंदु पर पहुँच चुकी हैं। अंतिम घोषणापत्र के लिए बुनियादी प्रारूप और कार्यसूची तय कर लेने के साथ ही विश्व के विभिन्न देशों के आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल अब उन समितियों का गठन करने में लगे हैं जो अंतिम घोषणापत्र को वैध रूप दे सके। जाहिर है कि इस घोषणापत्र का मुख्य जोर एक ऐसी बाजार अर्थव्यवस्था स्थापित करना है जो गैट समझौते और विश्व व्यापार संगठन तथा विश्व बैंक और अंतराष्ट्रीय मुद्राकोष के बताए तरीके पर चल सके और उसी माध्यम से गरीबी उन्मूलन, रोजगार वृद्धि और सामाजिक एकीकरण का उद्देश्य प्राप्त कर सके।

ब्राह्म या अनचाहे दुनिया भर के अनेक स्वयं सेवी संस्थाएँ या गैर सरकारी संगठन इन प्रक्रियाओं के भवर में फँस गए हैं और उनमें से किसी को कम और किसी को ज्यादा उम्मीद है कि वे किसी तरह का हस्तक्षेप कर सकेंगे। लेकिन यही समय है जब इस तरह की प्रक्रियाओं में खासतौर से जब संयुक्त राष्ट्र के अनेक शिखर सम्मेलनों ने एक दूरी तैयार कर दिया हो, गैर सरकारी संगठनों की भूमिका की समीक्षा की जानी चाहिए। इन प्रक्रियाओं में स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका को फिर से निर्धारित करने से पूर्व रियो, काहिरा और विएना शिखर सम्मेलनों के अनुभव का विश्लेषण कर लेना चाहिए। अगर हम ध्यान दें तो देखेंगे कि यह बात लगातार उभरकर सामने आती जा रही है कि संयुक्त राष्ट्र के इस तरह के सम्मेलन विकसित देशों के व्यापार, पर्यावरण, मानव अधिकार और विकास संबंधी चिंताओं के साथ गरीब और विकासशील देशों को बांधने के उपकरण बन गये हैं और इस प्रक्रिया में खुद संयुक्त राष्ट्र की विश्वसनीयता और इसकी स्वयंसेवा प्रकृति नष्ट होती चली गयी है। यह भी स्पष्ट है कि ब्रेटनवुड की खलनाका जुड़वा संतानों अंतराष्ट्रीय मुद्राकोष और विश्व बैंक की सामाजिक नैतिक और विकास संबंधी रणनीतियों का झंडा बुलंद करने के लिए संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र का इस्तेमाल किया जा रहा है ताकि इसे एक वैधानिक जामा पहनाया जा सके।

। ६ डि

कि सामाजिक विकास सम्मेलन के मसौदा घोषणापत्र और भारत की राष्ट्रीय रिपोर्ट को पूरी तरह अस्वीकार करने की जरूरत है क्योंकि मसौदा घोषणापत्र ने सामाजिक विकास को बाजार अर्थव्यवस्था और ढांचागत

समायोजन कार्यक्रम के साथ जोड़ दिया है तथा भारत की ओर से प्रस्तुत तथा कथित राष्ट्रीय रिपोर्ट हर दृष्टि से एक फूहड़पन का नमूना है। ऐसी स्थिति में स्वयं सेवी संस्थाओं के लिए यह व्यर्थ का कबायद होगी कि वे प्रस्तावित घोषणापत्र के एक-एक पैराग्राफ में संशोधन करते रहें क्योंकि ऐसा करने का यह अर्थ लगा लिया जाएगा कि घोषणापत्र के बुनियादी प्रारूप से उनकी किसी न किसी रूप में सहमति है और इस प्रकार सहभागी प्रक्रिया के ढकोसले को वैधानिक रूप दे दिया जाएगा।

फिर भी स्वयं सेवी संस्थाओं के लिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि वे सामाजिक विकास सम्मेलन के घोषणापत्र से इस देश की जनता पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों का अनुमान लगाएं और भारत द्वारा हस्ताक्षर कर दिए जाने के बाद इसके दुष्परिणामों का मुकाबला करने की तैयारी में जुट जाएं। इसका एक तत्काल नतीजा यह हो सकता है कि ऋण देने वाली बहुपक्षीय संस्थाओं द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा, महिला कल्याण और बाल कल्याण आदि के क्षेत्र में काफी पैसा झॉक दिया जाए ताकि इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों में वे अपनी पसंद के कार्यक्रमों को बढ़ावा दे सकें। इससे अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं की उन नीतियों और योजनाओं के सामने गंभीर दिक्कत पैदा हो सकती है जिन्हें वे इस देश के लिए उचित समझते हैं। यह एक ऐसा क्षेत्र है जिसके बारे में स्वयंसेवी संस्थाओं को बहुत सतर्क रहने की जरूरत है। इस उद्देश्य को इस तरह के सरकारी कार्यक्रमों से न केवल बाधा डालकर पूरा किया जा सकता है बल्कि यह भी सुनिश्चित करने की जरूरत है कि आसानी से मिलने वाले इस पैसे के लोभ में पड़कर स्वयंसेवी संस्थाएं अपने मूल कार्यक्रमों को ही मजबूत बनाएं। रियो पृथ्वी सम्मेलन के बाद खगोलीय पर्यावरण सुविधा में जिस तरह की विकृति आयी, उसका मूल्यांकन करने की जरूरत है क्योंकि तभी हम कोपेनहेगन सम्मेलन के बाद उपस्थित होने वाली स्थितियों का मुकाबला कर सकेंगे। स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए दूसरा महत्वपूर्ण काम यह होगा कि वे खुद को जन आंदोलनों से घनिष्ठ रूप से जोड़ें ताकि ऐसा राजनीतिक वातावरण तैयार हो सके जिसमें कोपेनहेगन सम्मेलन के बाद सरकार के लिए उच्च नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करना मुश्किल हो जाए जो जनता के खिलाफ जाती हैं। इसके लिए लोगों को शिक्षित और जागरूक बनाने का धुंआधार अभियान शुरू करना होगा और इसे देश के कोने-कोने तक ले जाना होगा।

१10011-लिनडी ड्रैफ

- ☐ के० एन० पनीकर, जे० एन० यू०, नई दिल्ली
- ☐ कुमारेश चक्रवर्ती, दिल्ली यूनिवर्सिटी
- ☐ विनोद रैना, एकलव्य, भोपाल
- ☐ एम० ए० ओमेन, इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस, नई दिल्ली
- ☐ जया मेहता, पी० आई० आर० जी०, नई दिल्ली
- ☐ विश्वजीत घर, आर० आई० एस०, नई दिल्ली
- ☐ राजेन्द्र सायल, पी० यू० सी० एल०, रायपुर
- ☐ मधूरा स्वामीनाथन, आई० जी० आई० डी० आर०, बम्बई
- ☐ विल्फ्रेड डिकोस्ता, संवाद, अहमदाबाद
- ☐ पी० साईनाथ, बम्बई
- ☐ अम्मू अब्राहम, सी० ई० डी०, बम्बई
- ☐ नीनन कोशी, त्रिवेन्द्रम
- ☐ सेबास्तीन होंग्रे, बंगलोर
- ☐ जॉन पी० अब्राहम, आशा केंद्र, पुणतंबा
- ☐ राजन सिंह, एन० सी० सी० आई० - यू० आई० आर० एम० नागपुर
- ☐ अजित मुरिकन, विकास अध्ययन केंद्र, बम्बई
- ☐ जी० एन्टोन गोमेज, तमिलनाडू फिशरमैन यूनियन, तमिलनाडू
- ☐ राम बापत, पूणे
- ☐ राजेन सिंह, इंसाफ, बम्बई
- ☐ ए० एम० सहाय, गोआ
- ☐ जॉन डीसूजा, सी० ई० डी०, बंगलोर
- ☐ गोपाल गुरु, पूना यूनिवर्सिटी, पूणे
- ☐ एन० वासुदेवन, अखिल भारतीय ब्लू स्टार कर्मचारी संघ, बम्बई
- ☐ नेन्दुन चेजेलियन, पूबूलाजीन नानबरगल, मद्रास
- ☐ वी० एस० रॉय डेविड, कोर्ड, कर्नाटक
- ☐ इंदू एम० जी०, सी० ई० डी० बंगलोर
- ☐ कल्पना मेहता, पीपुल्स लिंक, नई दिल्ली
- ☐ अनिल कुमार चौधरी, पीस, नई दिल्ली
- ☐ तोपती चक्रवर्ती, नई दिल्ली
- ☐ संदीप पेंडसे, विकास अध्ययन केंद्र, बम्बई

पुस्तिका के लिए सम्पर्क करें:-

इंडियन नेशनल सोशल एक्शन फोरम (इंसाफ)

एल-45-ए, मालवीय नगर,

नई दिल्ली-110017

# BETHESDA WOMEN'S INTERMEDIATE COLLEGE RANCHI

Chairman : REV. C.S.R. TOPNO Secretary : SRI N. E. HORO Treasurer : MRS. ESRAN BHENGRA  
(Pramukh Adhyaksh) M. L. A. ( Principal Bethesda Women's  
Intermediate College Ranchi )

G. E. L. Church

Ranchi-834001

Bihar (India)

Date.....26.10.1995

Ref. No. ....

To ,  
Rev.Dr.D.Hecker,  
Director,  
Gossner Mission

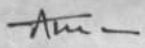
Dear Sir,

The Staff and Students of Bethesda Women's Inter College , Ranchi are holding a Painting Competition on the occasion of 150 years' Jubilee Celebrations. Prize giving away function on 29.10.1995 at 3:30 P.M. in the College premises.

We shall be highly obliged if you could come and give away prizes to the winners.

With thanks

Yours faithfully

  
For Principal

Bethesda Women's Inter  
College,Ranchi





GELC Human Resources Development Centre  
(GEL Church, Ranchi, 834001, India)

Seminar Oct, 16-21, 1995

Theme : 'Social Responsibility of the Church Today'

Key Note/Introductory Address

Rev, Dr.C.K.Paul Singh

Dear Sirs/Madams, Participants,

Welcome:

First of all, I, on behalf of the organisers, Gossner Mission, Berlin and GELC, HRDC, extend my hearty welcome to you all, Resource Persons, Participants, very specially to our honourable guests, Friends and well-wishers from far and near, who took so much troubles, time and energy to come to Ranchi to participate in this inaugural Seminar at this Centre, very newly inaugurated, just yesterday with very minimum facilities, I request you all to kindly bear with me the various inconveniences and discomforts. I hope, longer you stay, the better you feel.

Seminar:

For the 'First timer Beginners' of Seminar(s) I would like to express some few words. Most of the members of the Churches in this region, specially of GELC, are accustomed to the Youth Bible classes, Conventions, Rallies, Refresher Courses, etc, which are organised by various Works, - groups: - Children Youth, Women, etc, for spiritual Nurture, Fellowship, and Entertainments by refreshing lectures, Singsongs, Dramas, Sports, etc, Participation is open to all, Without much expectation for the results, very often the assembled Christians are mere passive audience and spectators. This time, today we have come together for a Seminar with a specific Theme to be discussed from various aspects by all participants sharing one's views and experiences with one another, I may not be wrong, If I say, 'Seminar is learning by sharing in plenary as well as in discussions groups'.

Methodology:

Participatory: All participants are expected to participate actively in all programmes of the Seminar. As it is a Mini-International/ecumenical Seminar, we may have some language problems, but I hope we can help one another in this respect also. Kindly bear with one another!

Objective:

'Think globally and act locally': There are therefore some subjects to draw our attentions towards some common world concerns, and problems with their impacts on the global community, individually and collectively as well as on local community.

Theme:

'Social Responsibility of the Church Today': This Theme seems to have a presumption that there are some other responsibilities of the Church: - Spiritual, financial, eschatological, ...What else? Can we enlist them? This may also tend to say that the Church, the living body of Christ is a fellowship of Believers, it is a Worshiping (Preaching, Teaching),

Praying, Singing communion, but it is also 'giving' and 'healing Church', OR how do we understand the body of Christ with His threefold Ministry (Preaching, Teaching and, Healing)? In this context of our Theme 'Healing' is not only a physical one, but healing is of all men, and whole man in his total existence, enabling him to stand before the people (in the Society) and God, now and eschatologically. Do we need to redefine the Church? What does Church mean to me? What has Church done for me? It seems to be a 'must' that local, Congregation and Christian Families have to be strengthened for building a strong Church. This Theme could have been coined differently: 'The Society Oriented/Related Ministry/Service of the Church Today', OR 'Church Ministry/Mission and Development Today'.

Since her inception, The Church was praying, praising, Preaching and Teaching regularly (Acts 2:43-47, 4:32-35) and not neglecting the healing Ministry and social concerns (Acts 6:1-6). In Course of the history of the Church various ups and downs in the Church Ministry affected the life and Work of the Church differently: 'Monasticism' and 'Spiritual Awakening/Revival', ...etc are its results. Sometimes spiritual Ministry became merely ritual and routinal forgetting and neglecting the Healing Ministry. Today also many/most of the members of the Church understand that 'Healing', according to our theme and context 'Social Responsibilities' are secondary or extra or optional activities! In arguments they even quote Biblical verses to say that Christians should engage themselves in spiritual things and not so much involve in worldly things (Mt, 6:32-33, Col, 3:1-2, 1 Pet, 5:7), but Christ's commission and compassion compel Christians to involve themselves also socially. Since 150 Yrs GELC is Seeking His Kingdom and righteousness, but 'all things are not yet added', we still lack many good things (Ps, 34:10), What's wrong? In Church Ministry or in Seeking God and His Kingdom? The situations in and around the Church are changing and worsening very rapidly and effectively; indifference in spiritual life is growing, Families, Congregations, Church and Society themselves are getting into the danger of disintegration affecting the Children, Youths, Parents, Seniors very negatively/adversely. Christ's Gospel (of peace, fellowship and prosperity) seems to be completely jeopardised. In recent years various national international/ecumenical consultations, Seminars and workshops have been conducted for Heads of the Churches and Church leaders, Pastors etc, but very many good findings, and recommendations etc, are still somewhere in office files and selves, they have not yet reached to the 'grass roots'. There are some exceptions also, many plans, projects and programmes are carried out successfully, but many have also failed. Why?



### Procedure:

In this seminar, for many participants there is a good opportunity for awareness building, let us make sure to identify various situations/issues and analyse them relating to our families, Congregations, Churches, and Society and then come forward with some Action Plans, our sharing of experiences, successes as well as failures too, may help us arrive/finalise good results for follow up works and implementations. Therefore methods and procedures of communication about the seminar also have to be made clear. When and how are we going to communicate to the 'grass roots' the things we have learnt in this seminar. Hereunder various situations/issues have been enlisted, though incomplete, they may be a guide for further discussions for action plans. Please look into it.

I wish, hope and pray that under the guidance and help of our experienced Resource Persons and with the active Participation of all members, the Seminar may bring some good results.

GELC HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT CENTRE (BEL)

GEL Church, Ranchi 834001, Bihar India

Seminar on: 'Social Responsibility of the Church Today'

Oct, 16-21, 1995, at HRDC

Names of Participants

1. Rev, C.S.R. Topno, GEL Church Ranchi 834001, Bihar India
2. Rev, (Mrs) U. Hecker, Fennstr 11, 12439 Berlin Germany
3. Rev, B. Krause, Fennstr 11, 12439 Berlin Germany
4. Rev, U. Wiemann, Bergkirchen 54a 32108 Bad Salzungen, Germany
5. Ms, Claudia Schwartz, Togo Str, 79, 13351 Berlin
6. Mr, Nawang Singh Gurung, U.M.N. Thapathali Kathmandu, Nepal
7. Rt, Rev, Dr. N. Minz, NWGEL Church, Ranchi 834001, Bihar India
8. Mr, Rajan Singh, 158/1 Meosabagh Colony Nagpur 410004
9. Mr, D. Bara, Vikas Maitri, Purulia Road, Ranchi, Bihar
10. Rev, Dr. M. Bage, New Life Light Centre Govindpur, Ranchi, Bihar
11. Rev, C. Hembram, Gossner Theological College, Ranchi 834001,
12. Mr. Azad Bhuyan, at Semrajuli, P.O. Rakshamari, 764507, Sonitpur (dt)
13. Mr. Gerson Baba, GEL Church Compound, At, P.O. Hijuguri, Tinsukia (dt)
14. Rev, C.D. Jojo, GEL Church Tezpur (Usha Hill), P.O. Tezpur, Sonitpur  
Pin 784001
15. Mrs. K. Lakra, At-Ghaghra Santipara, P.O. Dhekiajuli, Sonitpur (dt)
16. Ms. Illa Surin, GEL Church Compound, At & P.O. Gumla (dt)
17. Mr. S. Lakra, RLY Colony, Ranchi
18. Mr. Theophilus Tigga, P/M-I Basanti Colony, Rourkela 769012
19. Mr. Vijay Lakra, GEL Church Compd, At, P.O. dist Lohardaga 835302
20. Mr. Dhiraj Lakra, At Sinju Sereng, P.O. Raja Ulath, Ranchi 834010
21. Mrs, A. Toppo, Gossner Theological College Compd, Ranchi 834001
22. Mr. Paul Mundu, Mundu Bhavan, Jhirpani, Rourkela 769042 (Orissa)
23. Mr. James Toppo, GEL Church Compd, Rajgangpur, Sundergarh (Orissa)
24. Mrs. Juliani Kongari, GELC Compound Rajgangpur Sundergarh (Orissa)
25. Mr. Paul Lugun, C/O Gossner Theological College, Ranchi 834001
26. Rev, A. Minz, " " " " " "
27. Mr. Anand Bhengra " " " " "
28. Ms. Kripa Kandulna " " " " "
29. Ms. Ashisan Kandulna " " " " "
30. Mr. Emmanuel Bara, (CNI) " " " " "
31. Mr. Junul Baba, N. Garden Siromtoli Club Road, Ranchi 834001
32. Mr. Gideon Surin, C/O Hq Qrs Congregation, Ranchi 834001
33. Mr. C.K. Minz, Gossner High School Compd, Ranchi 834001
34. Rev, J. Lakra, GEL Church KSS Office, Ranchi, 834001
35. Mr. J. Kandulna, GEL Church Khutitoli, Gumla, Bihar 835223
36. Dr, C.K. Paul Singh, GEL Church Director HRDC/BEL, Ranchi 834001
37. Cand. M.M. Surin HRDC/BEL, GEL Church, Ranchi, 834001
38. Cand. P. Surin " " " 834001



GELC Human Resources Development Centre

(GEL Church, Ranchi 834001, India)

Seminar, Oct, 16-21, 1995

Theme: 'Social Responsibility of the Church Today'

Bible Study ; MK, 9:2-29

Rev, Dr.C.K.Paul Singh

Dear Chairperson, Resource Persons and Participants, on this last day of our Seminar this Bible Text of MK, 9:2-29 has been allotted to us for a Bible Study. Since 16th Oct, We are learning and discussing the main theme of the Seminar variously taking into consideration different subjects related to the main theme, We might have learnt many things by sharing our experienced the fellowship of Christian faith love, and blessings as well as of responsibilities. Now when most of us are contemplating and planning for return journey towards one's home, congregation or to some other assignments, Let us devote some times to study this passage and try to re-collect some of our responsibilities after our Participation in this Seminar.

This is one of the best known texts in the Bible. It has a reference to a great event of great Confession of Peter, 'You are the Christ, the Son of the living God. This Text reflects the great confession of Peter by a confirmation with a Voice from the cloud that Jesus Christ, the Son of man is the beloved Son of God, on his way to Cross, which is the climax of his service/Ministry (MK, 10:45)

The text can be studied in various ways taking into consideration of its Topical, Textual and Exegetical values. Today let us participate to find out its contextual values, specially in view of our Seminar and its main theme. The whole text may be seen in the Trinitarian Schemata/Patern, : I. Experience on the mountain Top, II. Experience while coming down from Hill Top, and III. Experience at the bottom of the mountain. Without pressing too much we may also caption as Identification Analysis and Action Plan or also contemplation (Enlightenment), compulsion/commission and compassion. In whatever way we may take the text, the whole episode with its Trinitarian dimensions, is a part of Training Course for the disciples to equip them to carry out the Ministry of Christ, even after his death. With these remarks, - without any obligation now let us participate to study the text. As I understand, it is a known fact that the Bible itself helps understand any particular text of the Bible by referring to the parallel passages and expression in other places of the Bible. It would be an interesting participatory exercise if we could compare and consider this passage along with the parallel texts as found in Mt, 17:1-21, and Lk, 9:28-42; But I would like to propose to spend some 10-15 minutes to find out the parallels of some expressions/word-uses as we see them in our text and else where:

V.2, 'Six days' - eight days, - Lk, 9:28 (After a Week)

Days for preparation Ex, 24:16, 23:16, Days of Works/preparation  
Mountain - Tabor - Taborion

Peter, James & John; Mk, 15:33, Gethsemane, 'Trio'/core

- V.3, White like snow, Dan, 7:9+14; Majesty, Holy
- V.4, Moses, Elijah + Jesus : Trio
- V.5, good pleasing, Mt, 13:48; enjoyable, heartening
- V.7, Cloud, Ex, 40:34, Dan, 7:9, John, 12:28, Divine presence  
This is my beloved son,  
Mk, 1:11, Ps, 2:7; Isa, 42:1, Mt, 3:17 God's own son with a  
purpose  
Hear him; Acts, 3:22, Ex, 18:15+19, Acts, 7:37, listen to him  
obey him
- V.9, 'rising from dead' John 2:19-22, 12:32, Cross death is not an  
end, but victory
- V.11, Elijah and Moses; Mala 4:5
- V.12, It is written, Ps, 22:7, Mala, 4:5  
Isa, 53:3; Dan, 9:26; Mk, 11:14;  
Lk, 23:11; 1:17; The way of cross, death in God's (Acts) plan  
to save the world
- V.18, Could not: V.29, James 5:16, due to lack of faith and prayer.
- V.19, Faithless generation; John 4:48; 2 Thes, 1:4
- V.21, Now long. Act, 1:7, Today, Chronos/Kairos
- V.23, If you can.. possible: Mt, 17:20; Mk, 11:23, Lk, 17:5+6  
John 11:40, Rom, 10:9, Mt, 19:26, dynasty, dynamic, dynamo + Faith?
- V.25, rebuked. Mk, 1:25, Mt, 10:8, Lk, 9:1+2 : authority
- V.26, 'dead', sleep John 11:11, Deut, 31:16, Dan, 12:2, Mt, 9:24,  
Acts, 7:60, 1 Cor, 15:18+51 : 'asleep'
- V.27, took him by hand, Mt, 9:25, Mk, 1:31, Acts 3:7+8, Mk, 2:5+9+11;  
John, 5:8, 11:44, Word and action it is a complete healing
- V.29, Prayer.. James 5:16, Num, 11:2, 1 Thes, 2:13, Num, 21:7,  
Ex, 15:26, 1 Cor, 12:9+28; Covenant of Healing.

Now let us come back to the Text, though it is a mystery cloaked event, but let us try to contextualise it to our Theme of the Seminar with my proposed/inchanted Trinitarian Schemata. After about a three years Training Course living with Jesus, the disciples could identify that Jesus is the Christ, the son of living God. But their analysis of this identification relating to their life and work is not yet secured. Amidst ritualistic-ceremonial and ethical values of life confrontation with God/Christ is necessary, The solitude God's presence is required of the disciples to carry out the Ministry which is not in solitariness as Peter was thinking and willing to build Tent/booths, to be secured in the experience, but hearing obeying Christ/The son, was better, no words to Peter's wishes but hearing Voice to obey the son of man. They must be ready for the solidarity with the people going down to the crowd from the highest experience of solitude. This was exactly told to the disciples in Christ's suffering is the way to solidarity with the people, for



whom he is ready to die a vicarious death, which means also victory (John 12:32), he should have risen from the dead. Christ's death and resurrection the victory of disciples is also secured, but they were unable to understand, and to accept for themselves ! Their analysis of Christ's work was still unacceptable/not understandable, it is still today the same ? This was not the experience and understanding of the then disciples, while coming down from the 'Hill Top', Today also there are many Christians, who want to remain in the marvellous experiences in Church and Church administration, Seminars, Workshops !

Solitude leads, to solidarity, when the experience is dynamited by 'prayer and fellowship'. Jesus could healed the boy fully. The disciples could not, although they were also fully empowered, They could not identify and analyse the situation of sickness, Christ, not only healed the boy , but also enabled him to stand up amidst the people and before God.

Christian faith is not only contemplative, but also includes compulsion and compassion which can be materialised only through commitment to God and commitment to the cause of society i.e. all men and Whole man.

GELC Human Resources Development Centre

(GEL Church, Ranchi 834001, India)

Seminar, Oct, 16-21, 1995

Theme: 'Social Responsibility of the Church Today'

Bible Study ; MK, 9:2-29

Rev, Dr.C.K.Paul Singh

Dear Chairperson, Resource Persons and Participants, on this last day of our Seminar this Bible Text of MK, 9:2-29 has been allotted to us for a Bible Study. Since 16th Oct, We are learning and discussing the main theme of the Seminar variously taking into consideration different subjects related to the main theme. We might have learnt many things by sharing our experienced the fellowship of Christian faith love, and blessings as well as of responsibilities. Now when most of us are contemplating and planning for return journey towards one's home, congregation or to some other assignments, Let us devote some times to study this passage and try to re-collect some of our responsibilities after our Participation in this Seminar.

This is one of the best known texts in the Bible. It has a reference to a great event of great Confession of Peter, 'You are the Christ, the Son of the living God. This Text reflects the great confession of Peter by a confirmation with a Voice from the cloud that Jesus Christ, the Son of man is the beloved Son of God, on his way to Cross, which is the climax of his service/Ministry (MK, 10:45)

The text can be studied in various ways taking into consideration of its Topical, Textual and Exegetical values. Today let us participate to find out its contextual values, specially in view of our Seminar and its main theme. The whole text may be seen in the Trinitarian Schemata/Patern, : I. Experience on the mountain Top, II. Experience while coming down from Hill Top, and III. Experience at the bottom of the mountain. Without pressing too much we may also caption as Identification Analysis and Action Plan or also contemplation (Enlightenment), compulsion/commission and compassion. In whatever way we may take the text, the whole episode with its Trinitarian dimensions, is a part of Training Course for the disciples to equip them to carry out the Ministry of Christ, even after his death. With these remarks, - without any obligation now let us participate to study the text. As I understand, it is a known fact that the Bible itself helps understand any particular text of the Bible by referring to the parallel passages and expression in other places of the Bible. It would be an interesting participatory exercise if we could compare and consider this passage along with the parallel texts as found in Mt, 17:1-21, and Lk, 9:28-42; But I would like to propose to spend some 10-15 minutes to find out the parallels of some expressions/word-uses as we see them in our text and else where:

V.2, 'Six days' - eight days, - Lk, 9:28 (After a Week)

Days for preparation Ex, 24:16, 23:16, Days of Works/preparation  
Mountain - Tabor - Taborion

Peter, James & John; Mk, 15:33, Gethsemane, 'Trio'/core



- V.3, White like snow, Dan, 7:9+14; Majesty, Holy
- V.4, Moses, Elijah + Jesus : Trio
- V.5, good pleasing, Mt, 13:48; enjoyable, heartening
- V.7, Cloud, Ex, 40:34, Dan, 7:9, John, 12:28, Divine presence  
This is my beloved son,  
Mk, 1:11, Ps,2:7; Isa, 42:1, Mt, 3:17 God's own son with a  
purpose  
Hear him; Acts, 3:22, Ex,18:15+19, Acts, 7:37, listen to him  
obey him
- V.9, 'rising from dead' John 2:19-22,12:32, Cross death is not an  
end, but victory
- V.11, Elijah and Moses; Mala 4:5
- V.12, It is written, Ps, 22:7, Mala, 4:5  
Isa, 53:3; Dan,9:26; Mk, 11:14;  
Lk, 23:11; 1:17; The way of cross, death in God's(Acts)plan  
to save the world
- V.18, Could not: V.29, James 5:16, due to lack of faith and prayer.
- V.19, Faithless generation; John 4:48; 2 Thes,1:4
- V.21, Now long. Act,1:7, Today, Chronos/Kairos
- V.23, If you can.. possible: Mt,17:20; Mk,11:23, Lk,17:5+6  
John 11:40, Rom,10:9,Mt,19:26, dynasty,dynamic,dynamo+Faith?
- V.25, rebuked. Mk,1:25, Mt,10:8, Lk,9:1+2 : authority
- V.26, 'dead', sleep John 11:11, Deut,31:16, Dan,12:2, Mt,9:24,  
Acts,7:60, 1 Cor,15:18+51 : 'asleep'
- V.27, took him by hand, Mt,9:25, Mk,1:31, Acts 3:7+8, Mk,2:5+9+11;  
John,5:8,11:44, Word and action it is a complete healing
- V.29, Prayer.. James 5:16, Num,11:2, 1 Thes,2:13, Num,21:7,  
Ex,15:26, 1Cor,12:9+28; Covenant of Healing.

Now let us come back to the Text, though it is a mystery cloaked event, but let us try to contextualise it to our Theme of the Seminar with my proposed/inchanted Trinitarian Schemata. After about a three years Training Course living with Jesus, the disciples could identify that Jesus is the Christ, the son of living God. But their analysis of this identification relating to their life and work is not yet secured. Amidst ritualistic-ceremonial and ethical values of life confrontation with God/Christ is necessary, The solitude God's presence is required of the disciples to carry out the Ministry which is not in solitariness as Peter was thinking and willing to build Tent/booths, to be secured in the experience, but hearing obeying Christ/The son, was better, no words to Peter's wishes but hearing Voice to obey the son of man. They must be ready for the solidarity with the people going down to the crowd from the highest experience of solitude. This was exactly told to the disciples in Christ's suffering is the way to solidarity with the people, for

whom he is ready to die a vicarious death, which means also victory (John 12:32), he should have risen from the dead. Christ's death and resurrection the victory of disciples is also secured, but they were unable to understand, and to accept for themselves ! Their analysis of Christ's work was still unacceptable/not understandable, it is still today the same ? This was not the experience and understanding of the then disciples, while coming down from the 'Hill Top', Today also there are many Christians, who want to remain in the marvellous experiences in Church and Church administration, Seminars, Workshops !

Solitude leads, to solidarity, when the experience is dynamited by 'prayer and fellowship'. Jesus could healed the boy fully. The disciples could not, although they were also fully empowered, They could not identify and analyse the situation of sickness, Christ, not only healed the boy , but also enabled him to stand up amidst the people and before God.

Christian faith is not only contemplative, but also includes compulsion and compassion which can be materialised only through commitment to God and commitment to the cause of society i.e. all men and whole man.

1.20.04

The following photos to be brought  
from Germany if available: -

- I
- (1) Dr. Martin Luther standing with open Bible  
... with different occasion and  
pose.
  - (2) Fr. J. E. Gossner - Kneeling down in prayer,  
Any other pose.
  - (3) Individual photos of the 1st 4 missionaries
  - (4) Photos of different missionaries -  
(a) Dr. Nottrott (b) Schtosh, (c) Eidness  
(d) Plath - (e) Lokies (f) Klimkeit,  
(g) Schultz (h) Brutter (i) Kloss (j) Dell.
  - (5) Photos of the Director of Gossner Mission
  - (6) Photos of the Chairman of Kuratorium
  - (7) ~~Information~~ Informations sent from time to time  
from the very beginning.



Liebe Frau Schittmatt,  
aus dem möglichen Flugplan.  
Der Preis:

Harare - Bombay und zurück: 1802.-

Bombay - Ranchi über Delhi: 684.-  
u. zurück

Grß, H. T. S.

\*\*\*\*\*  
\* C V J M REISEN \* 34131 KASSEL \*  
\* TEL: 0561 30 37 300 FAX: 0561 / 37 4 37 \*  
\*\*\*\*\*

BUCHUNGSNUMMER: 2V870L

REISEPLAN FUER:

MAZVIZVO/CMR

ETHIOPIAN AIRLINES ET 832 ECONOMY  
ABFLUG: MITTWOCH 11 OCT 95 HARARE BESTAETIGT  
ANKUNFT: ADDIS ABABA 0530  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: EIN STOP 1135

ETHIOPIAN AIRLINES ET 630 ECONOMY  
ABFLUG: MITTWOCH 11 OCT 95 ADDIS ABABA BESTAETIGT  
ANKUNFT: BOMBAY 1415  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: NON-STOP 2145

AIR INDIA AI 131 ECONOMY  
ABFLUG: DONNERSTA 12 OCT 95 BOMBAY BESTAETIGT  
ANKUNFT: DELHI 0340  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: NON-STOP 0535

INDIAN AIRLINES IC 809 ECONOMY  
ABFLUG: DONNERSTA 12 OCT 95 DELHI BESTAETIGT  
ANKUNFT: RANCHI 0715  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: EIN STOP 1010

INDIAN AIRLINES IC 800 ECONOMY  
ABFLUG: FREITAG 03 NOV 95 DELHI BESTAETIGT  
ANKUNFT: DELHI 1055  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: NON-STOP 1235

MODI LUFT MG EXPRESS LT MG 103 ECONOMY  
ABFLUG: FREITAG 03 NOV 95 DELHI BESTAETIGT  
ANKUNFT: BOMBAY 1805  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: NON-STOP 2000

ETHIOPIAN AIRLINES ET 601 ECONOMY  
ABFLUG: SAMSTA 04 NOV 95 BOMBAY BESTAETIGT  
ANKUNFT: ADDIS A. 0635  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: NON-STOP 0910

ETHIOPIAN AIRLINES ET 807 ECONOMY  
ABFLUG: SAMSTA 04 NOV 95 ADDIS ABABA BESTAETIGT  
ANKUNFT: HARARE 1100  
ANZAHL DER ZWISCHENSTOPS: NON-STOP 1400

युनाइटेड मिसन दु नेपालUnited Mission to Nepal

FAX MESSAGE

For: Ursula Hecker  
Secretary for Asia  
Gossner Mission  
Berlin, Germany

Fax No. 0049-30-6361198

From: Steve Knisely  
Program Officer  
Rural Development Dept.  
UMN

Date: 6 Oct., 1995

Thank you for your fax of 4.10.95 and information regarding travel arrangements for Mr. Nawang Singh Gurung from Calcutta to Ranchi. Today I made contact with another potential candidate who may join Nawang, but he will only be able to confirm his going on Mon. A fax will be sent to you if he is able to attend.

The information you requested to be sent to IndoCulture Tours is as follows (I will also fax directly to them):

Mr. Nawang Singh Gurung      Nepali Passport # 424301  
Issued March, 1993 in Kathmandu, Nepal  
Expires March, 1998

As he is a Nepali citizen this information is probably not necessary for the purchase of plane and rail tickets in India as nationals of both countries are able to travel without passport in either country. The other person who may also travel is Mr. Krishna Napit, also a Nepali citizen.

Again thank you for your help in finalizing travel arrangements for Nawang, and I too, hope the seminar and his contributions are worthwhile.

*Steve Knisely*

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To Steve Knisely  
Rural Dev. Dep.  
UHN  
Kathmandu

4.10.1995

Dear Steve, thank you very much for your fax stating that Nuwang Singh Gurung is attending the seminar in Ranchi. We are very happy that this is possible. For the Gossner Church it is new to think about the social responsibility and they are quite unaccustomed to do awareness training. The tentative program which they send to me is showing this. As more it is necessary that there will be someone who is standing in this process.

To share the experiences in motivating and organizing people in a situation with very limited



- Fax to Steve Knirely - page 2

resource is exactly, what is needed. To give people hope that they can do something in their situation is - for me - the main object of this seminar.

Concerning the travel arrangements: I have requested our travel agent to meet Mr. (or Mrs.?) Gwung at the airport on 12 Oct 17<sup>00</sup>. There is no flight to Ranchi at the next day, so he has to take the night train from Calcutta to Ranchi.

The travel agent will hand over the ticket and accompany him to the station. To buy a railway ticket we need to have

the passport details. Please fax the details to Indoculture Tours Germany 0049 711 628727

Passport No, full name  
issued at

issued when, valid up to

And for sure you can fax it to our office also

- Fax to Steve Knisely - page 3

If there are any difficulties  
I will give the address of  
the travel agency in Calcutta

Culture Tours Travel  
78 ABC K Nehru Road  
(Firoz Market)

700013 Calcutta

Tel 033/ 2497785 or 247884

Fax 033/ 2497455

We will arrange that some-  
body will meet him at the  
railway station <sup>in Ranchi</sup> at the

13<sup>th</sup> Oct. morning. If there  
is a problem he can take  
a rikscha to Gosner Evan-  
gelical Lutheran Church

Compound KSS-Office  
Tel. 0651/311513.

Once more thank you very  
much and I hope everything  
goes well yours Gula Sekar

# SEMINAR ON : 'SOCIAL RESPONSIBILITY OF THE CHURCH TODAY'

(Under : Church Mission/Ministry and Development)

SPONSORED BY GOSSNER MISSION, BERLIN AND G.E.L. CHURCH THROUGH BD OF EVANGELISM AND LITERATURE  
AT GELC HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT CENTRE (BEL), GEL CHURCH, RANCHI OCT, 16-21, 1995

## TENTATIVE PROGRAMME SCHEDULE

| Day/Date | 8.00-9.45AM                                            | 10.00-11.00AM                                                                | 11.30-1.00PM                            | 2.30-3.30PM                                                   | 3.30-4.30PM                          | 5.00-6.30PM                               | 7.00-8.00PM | 9.00       |
|----------|--------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------|---------------------------------------------------------------|--------------------------------------|-------------------------------------------|-------------|------------|
| 16.10.95 | -----                                                  | -----                                                                        | -----                                   | ARRIVALS AND REGISTRATION                                     |                                      | Get Together<br>Introductions             |             |            |
| 17.10.95 | DEVOTION<br>Welcome,<br>Bible Study<br>(Framukh Adhy.) | Introductory<br>'Key Note<br>Address'<br>SINH                                | Self Introduc-<br>tion Discussi-<br>ons | Social-Poli-<br>tical Situa-<br>tion in the<br>region Bar     | Sharing of<br>Experiences<br>'IRDP & | Discussions<br>Exchange of<br>Experiences | Plenary     | Cul<br>Pro |
| 18.10.95 | DEVOTION<br>Bible Study<br>NINAN<br>Eph. 4:11-16       | World/Indian<br>Economy and<br>its Impact<br>in Church life                  | Discussions<br>in groups                | Ecology & En-<br>vironment-<br>their impact<br>in Church life | Sharing of<br>Exp. UIM               | Discussions<br>Exchange of<br>Experiences | Plenary     |            |
| 19.10.95 | DEVOTION<br>Bible Study<br>MINZ<br>Lk 4:18ff           | RESPONSE of<br>the Church<br>NINAN                                           | Discussions<br>in groups                | Religious-Soc-<br>ial Scenario<br>in the Region               | Sharing of Ex.<br>CMD/THUM           | Discussions<br>Exchange of<br>Experiences | Plenary     |            |
| 20.10.95 | DEVOTION<br>Bible Study<br>SINH<br>Mk. 9:2ff           | Plenary<br>Reports etc,                                                      | Discussions<br>For 'Action<br>plans'    | Recommendations<br>for Follow up/<br>Action Plans             | Evaluations<br>Media Commu-          | Closing Service                           |             |            |
| 21.10.95 | D E P A R T U R E S                                    |                                                                              |                                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |
|          | Mealtimes, etc,                                        | 10.00PM-5.00AM                                                               | Rest Lights Off                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |
|          | 7.30-8.00AM                                            | 15 minutes of 'Response' by appointed person may follow to some presentation |                                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |
|          | 11.00 Coffee break                                     | as Supplementary                                                             |                                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |
|          | 1.00-2.00PM Lunch & rest                               | Bible Studies, LK 4:18ff & Isa. 61:1-3, Eph, 4:11-16; MK 9:2-29              |                                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |
|          | 4.30PM Tea Break                                       |                                                                              |                                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |
|          | 8-9.00 PM Supper                                       |                                                                              |                                         |                                                               |                                      |                                           |             |            |



shay

**By Telefax!**

**Fax: 0091-11-374 60 32**

Fennstraße 31  
D - 12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

To the  
YMCA - Tourist Hostel  
Jai Singh Road

New Delhi 110 001 - India

Berlin, den 2. Oktober 1995

Dear friends,

Gossner Mission is coming with a group of visitors to the 150 Years Jubilee of the Gossner Evangelical Lutheran Church in chotanagpur and Assam at Ranchi and we would like to stay at the YMCA Tourist Hostel for the days at Delhi.

I want to inquire about accomodation for the following dates:

Accommodation for a group of 6 persons (3 Ladies, 3 Gents, out of which one couple) from 21st to 23rd October 1995.

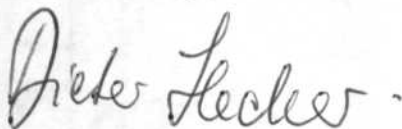
We would like to have one double room and 4 single. If this should not be available, we could also accomodate with three double rooms.

Arrival Time from Frankfurt Germany would be late in the night by Lufthansa Flight LH - 760 at Delhi at 1.40 a.m. on the 22nd October.

We would appreciate, if you could provide us an accomodation. Please let us know at your earliest, preferably by fax (0049-30-6361198).

With best regards,

Yours sincerely,



Dieter Hecker  
Director

**यूनाइटेड मिसन दु नेपाल****United Mission to Nepal**FAX MESSAGE

Copy of fax sent to:

Rev. Dr. C.K. Paul Singh  
% GEN CHURCH  
G.E.L. Church  
Ranchi, Bihar  
(fax No. 0091-681-300716)

For: Ursula Hecker  
Secretary for Asia  
Gossner Mission  
Berlin, Germany

From: Steve Knisely  
Program Officer  
Rural Development Dept.  
UMN

Date: 29 Sept., 1995

Before UMN is closed for the next five days for Dasian, I want to clarify and confirm two items in my fax to you yesterday:

1. We have one confirmed participant from UMN, Nawang Singh Gurung, who will arrive in Calcutta on flight IC 748 @ 17:00 on 12 Oct. as I wrote yesterday.
2. Regarding the role of the UMN participant: I realized after sending the fax yesterday that in a letter from Dieter Hecker received last month, the expectation of the UMN participants as outlined as:
  - \* to share with the seminar their own experiences in motivating and organizing people in a situation with very limited resources, and
  - \* be present during the group discussions as resource person.

Nawang would be happy and capable of fulfilling these expectations rather than the broad topics I included in yesterday's fax.

Again, thank you for your earliest reply regarding travel from Calcutta to Ranchi and details about the seminar schedule.

cc: Ursula Hecker  
Gossner Mission  
Germany

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Mr. Langton Kuveya  
Miss Janet Moyo  
ERTC  
Fax No. 002634-573073  
Pages: 2 (incl.this one)

FAX MESSAGE

19th of September 1995

Dear Janet, dear Langton,

having drafted this letter it comes to my mind, that Langton will almost likely be in Nkandabwe.

Thank you, Janet for your fax from September, the 11th.

Edna Maluma has no Fax nor Telephone number. The Gwembe Valley has not been electrified until now. Any emergency news must be transmitted through our liason office in Lusaka which has a radio connection to GSDP. The phone and fax number of Gossner Mission's liason office is: 01-261 580 under the national code for Zambia.

Thank you for the name of the person who can go to India. Please, brief us shortly about his profession, age and his particular work in Matava, so that we can introduce him to our partners in India and tell them what his contribution will be at the conference. I wonder, whether I met him, I don't remember, however the name.

Has he got a passport? Please, help him to get the required documents. We faxed letters of invitation, including the guarantee to bear all costs. We were grateful, if ZCC could prefinance his visa fees and his travel expences within Zimbabwe. We can easily refund the money to ZCC in October when I will be in Zimbabwe.

We did the booking of the flight from Germany and will find an arrangement to send the ticket to Harare. The only dates for a reasonable flight are however October, the 11th, from Harare (dep. 5.30 a.m.) via Addis Abeba, Bombay and Delhi with the arrival in Ranchi, on Thursday the 12th of October, 10.10 hrs.

The departure from Ranchi will be on Friday, the 3rd of November, and the arrival at Harare on Saturday, the 4th of November, 14.00 hrs.

We hope that those dates suit Mr. Mazvizvo. Please, tell him to apply for the entrance visa to India for the full period, from October, the 11th on. If there will be any obstacle either due to the required travel documents or the time of the flight, please let us know as soon as possible, so that we can work on an alternative.



As far as our visit to Zimbabwe is concerned I have a few wishes for our programme:

Since those persons coming along with me are newcomers, we need some time to be briefed on the current situation in Zimbabwe. It would be helpful to have an introduction meeting of 3 to 4 days, if possible together with representatives of the pilote projects, to discuss the current situation in Zimbabwe, the "Let the people speak" programme, issues of development and North-South-relations. We would like to be briefed on the reviewed ESAP and its intended effects, and the work done by the churches in regard to ESAP. What, p.e., was the impact of the workshops on ESAP held by the churches? We have learned that the new drought affects the people in your country dramatically? What is done by both the people, the government and the churches as well to tackle drought related problems?

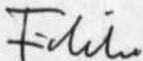
In this meeting we should also elaborate certain guidelines for our visit: What to observe, what to discuss with the people, how to find out what the people say.

In the end of our visit we need again time to reflect what we have experienced, again, if possible, with representatives of the pilote projects. I would recommend that we write a common report or statement in the end, to fix required informations, agreed positions and plans, with additional personal remarks or comments.

Last but not least we need some time to assess the "let the people speak" programme. It is evident that Gossner Mission can't afford to finance that programme for more than one more year and even that only, if we get money apart from our budget from outside, i.e. "Bread for the World" resp. the "Committee for Development Education and Public Relation" within KED (= Development Service of the Protestant Churches). We are facing serious financial problems, so that we reduce our budget by about one third. That means that we must reshape all our programmes. Regarding "Let the people speak" we must find out which components to cancel, which ones to proceed with, and how to organize our future cooperation.

I look forward to seeing you in Harare in October.

With best regards.  
Sincerely yours,



Friederike Schulze

Fennstraße 31  
D- 12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

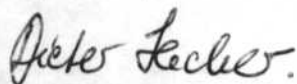
To the  
Zimbabwe Council of Churches  
Ecumenical Resource and Training Centre  
PO Box H 133  
Harare - Zimbabwe  
Fax: 00263-4-573073

## Invitation

This is to certify, that Gossner Mission, a Protestant Christian Mission Agency from Berlin / Germany has invited Mr. Colnard Mazvizvo from Matava Village in Zimbabwe for a visit to Ranchi / India from the 14 th October till 5th November 1995 to be a guest of the 150 Years' Jubilee Celebrations of the Gossner Evangelical Lutheran Church (G.E.L. Church) in Chotanagpur and Assam. Mr. Colnard Mazvizvo will furthermore visit churches and congregations in India. Gossner Mission guarantees to bear all costs of his travel from Zimbabwe to India and back as well as his stay there. - We look forward to the visit of Mr. Colnard Mazvizvo in India, which will strengthen the relationships between the different partner organisations of Gossner Mission, the Zimbabwe Council of Churches, the Gossner Evangelical Lutheran Church in India and the German Churches through the joint celebration of this great Jubilee of 150 Years of Mission Work in Chotanagpur / India.

We would request all authorities concerned in Zimbabwe and India to take the needful steps to grant Mr. Colnard Mazvizvi a visa to India for this visit.

Berlin, 17 September 1995



Rev. Dieter Hecker  
Director



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 1198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To the  
Zimbabwe Council of Churches  
Ecumenical Resource and Training Centre  
PO Box H 133  
Harare - Zimbabwe  
Fax: 00263-4-573073

### Invitation

This is to certify, that Gossner Mission, a Protestant Christian Mission Agency from Berlin / Germany has invited Mr. Colnard Mazvizvo from Matava Village in Zimbabwe for a visit to Ranchi / India from the 14 th October till 5th November 1995 to be a guest of the 150 Years' Jubilee Celebrations of the Gossner Evangelical Lutheran Church (G.E.L. Church) in Chotanagpur and Assam. Mr. Colnard Mazvizvo will furthermore visit churches and congregations in India. Gossner Mission guarantees to bear all costs of his travel from Zimbabwe to India and back as well as his stay there.

We would request all authorities concerned in Zimbabwe and India to take the needful steps to grant Mr. Colnard Mazvizvi a visa to India for this visit.

Berlin, 17 September 1995



Rev. Dieter Hecker  
Director







## PERSONNEL PLANNING AND HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT PROGRAMME

ECUMENICAL RESOURCE AND  
TRAINING CENTRE  
27 ST PATRICKS RD.  
PO BOX H 133  
HATFIELD  
HARARE

liebe Frau Bittmatt,  
das mit Ihrer Freundin hat  
gut geklappt. Die Damen  
waren begeistert; ich hoffe,  
es war auch für Ihre  
Freundin ein bißchen schön.  
Wachmal's bescheiden Dank!  
Sie will mit Ihnen abrech-  
nen. Ich habe ihr nur 100.-  
DM gegeben, - würden Sie  
das übrige mit Frau Dupke  
klären - und mir die 100.-DM  
zurückgeben.

- Jetzt noch eine schöne "Aufgabe"  
könnten Sie ein Ticket buchen  
für Colnarda Mazvizvo von Harare  
nach Delhi (Ranchi) 14. Okt.  
Ankunft in Indien 5. Novem-  
ber Abflug - möglichst billig,  
aber es geht vom Fernweggeld  
ab, da müßten Sie sich nicht  
sorglos mit befassen.

Wir haben jetzt mal eine  
Einladung geschrieben und  
ich versuche sie noch zu faxen,  
aber da fehlt der Ort und  
das Siegel darauf. Bitten  
Sie bitte meinen Namen noch  
um eine neue Einladung  
und versehen Sie sie mit  
Siegel und versuchen Sie sie  
noch einmal zu faxen. Danke.  
Und versuchen Sie bitte das  
Fax an Dr. Singh abzuschicken.  
Er ging nicht...

Entschuldigen Sie bitte - es  
ist alles etwas hektisch

Herzlichen Gruß

Ihre

Concha Becker





## PERSONNEL PLANNING AND HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT PROGRAMME

ECUMENICAL RESOURCE AND  
TRAINING CENTRE  
27 ST PATRICKS RD.  
PO BOX H 133  
HATHFIELD  
HARARE

FAX MESSAGE

FAX TO: Friederike Schulze  
GOSSNER MISSION

FAX FROM: 22 Mr Kuveya  
ZCC D.E. OFFICER

4 October 1995

For the first time, we have shown that the

791208/790100  
TELEX: 26243 OIK ZW

18.09.95 10<sup>33</sup> etc

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 1198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To the  
Zimbabwe Council of Churches  
Ecumenical Resource and Training Centre  
PO Box H 133  
Harare - Zimbabwe  
Fax: 00263-4-573073

Berlin, den 17. September 1995

Dear Mrs. Moyo,

thank you for your Fax to Friederike from the 11th September 1995 about a visitor to the Jubilee of the Gossner Evangelical Lutheran Church in India. We are glad to hear, that Mr. Colnard Mazvizvo had been named from Zimbabwe as a participant for the Celebrations. This church has been a result of the work of missionaries from Gossner Mission in Germany since the 2nd November 1845. We are glad, that the G.E.L. Church is now one of the biggest Lutheran Churches in India and consists mainly of the Aboriginal People or Adivasi as they are called in India. We appreciate, that representatives of other churches or Regional Church Councils, with whom Gossner Mission is in cooperation with different programmes are also sharing this experience.

We include a Letter of Invitation for Mr. Colnard Mazvizvo from Gossner Mission along with the guarantee to bear all the costs for the travel, which may help him to get a visa for India. We shall also arrange for a direct invitation from the G.E.L. Church in Ranchi to be sent to you soon. If it will be possible for people of Zimbabwe to get a Tourist Visa this would be the most convenient and fastest way to get to India. There are two versions of the invitation: one with a longer explanation about the relationships between the different churches concerned. This might be helpful in case you need something for your own government. The Indian Government is not so much in favour of Christian Missions, therefore you might take the shorter form to apply for a visa at the Indian Embassy. But you should handle the whole application procedure according to your experience.

Wishing you all the best also from Friederike and Rev. Wilhelm Damm, I remain with kind regards,

Yours in Christ,

*Dieter Hecker*

Rev. Dieter Hecker  
Director



**Enclosed:** Two letters of invitation as mentioned above

*Hope*

Fennstraße 31  
D - 12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To the  
Zimbabwe Christian Council  
c/o General Secretary  
Harare - Zimbabwe

Berlin, den 17. September 1995

Dear Sir,

we are glad to hear, that Mr. Colnard Mazvizvo had been named form Zimbabwe as a participants of the Celebration of the 150 Years' Jubilee of the Gossner Evenagelical Lutheran Church of Chotanagpur and Assam in India. This church has been a result of the work of missionaies from Gossner Mission in Germany since the 2nd November 1845. We are glad, that the G.E.L. Church is now one of the biggest Lutheran Churches in India and consists mainly of the Aboriginal People or Adivasi as they are called in India. We appreciate, that reperesentatives of other churches or Regional Church Councils, with whom Gossner Mission is in cooperation with different programmes are also sharing this experience.

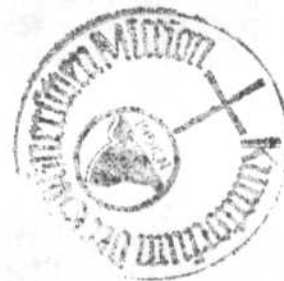
We include a Letter of Invitation for Mr. Colnard Mazvizvo from Gossner Mission along with the guarantee to bear all the costs for the travel, which may help him to get a visa fro India. We shall also arrange for a direct invitation form the G.E.L. church in Ranchi. If it will be possible for people of Zimbabwe to get a Tourist Visa this would be the most convenient and fastest way to get to India. There are two versions of the invitation: one with a longer explanation about the realtionships between the different churches concerned. This might be helpful in case you need something for your own government. The Indian Government is not so much in favour of Christian Missions, therefore you might take the shorter form to apply for a visa at the Indian Embassy. But you should handle the whole application procedure according to your expereince.

Wishing you all the best, I remain with kind regards,

Yours in Christ,

*Dieter Hecker*

Rev. Dieter Hecker  
Director





18.9.95 8<sup>22</sup> JH

page 2

Telefax

 Gossner  
Mission

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Dr. Singh  
KSS  
GEL Church Comp.  
Ranchi

16.9.95

I don't know, if you ~~would~~  
fax to Zimbabwe. Please  
send the invitation as soon  
as possible to us that we  
can forward it.

We are also sending one from  
our site.

You also can try directly.

Time is crazy at the moment  
We hope everything goes well  
for the preparation of the  
Fenninar and the jubilee  
Many greetings yours

Anula Becker

BY TELEFAX  
URGENT

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

To Dr.  
Paul Singh, KSS  
GEL Church Comp.  
Randhi 834001  
India

16. 9. 1995

Dear Dr. Singh,  
would you please send us  
an invitation for the Ziba  
Zimbabwe participant of the  
seminar; Mr. Colnard Mazvizvo  
of Matava Village, Zimbabwe

It should be an invitation  
through the Zimbabwe Council  
of Churches Ecumenical Resource  
and Training Centre  
27 St. Patricks Rd  
P.O. Box 4133  
Halfeld  
Harare  
Fax 110 263 4573073

TO: +49 30 6361198 P01

30. 21 9 - 27.0 - 6.36 11 98

21538 TO: +49 30 63611  
Opp. Coffee House, Sadar,  
Nagpur 440001

Tel : (0712) 532802  
Fax : (0712) 532802  
13th. Sept. 95.

Dr. Paul Singh  
KSS office.  
Church Compound  
RANCHI 834 001.

Dear Mr. Singh,

Greetings.

The Goenka Mission in Berlin has been in communication with me about the Seminar to be held in conjunction with the 150 years completion of the GELC in the Chotanagpur area.

My assignment is to share with you all some insights on the impact of the New Economic Policy on the common person in our land. From the programme outline faxed to me yesterday it is observed that someone is making an input on the Socio-Political situation in Chotanagpur. It would help me in my preparation if a copy of this paper is shared with me in advance. Kindly therefore Fax this paper to me as soon as possible.

I will be Traveling to Ranchi Via Jamshedpur, reaching Tata by the Howrah Mail on the 16th. early morning and from there taking a bus to Ranchi. So I should reach Ranchi by breakfast time on the 16th. Oct.

I will leave Ranchi on the 22Oct. (22) . I understand that from Ranchi there is a coach which is attached to the Howrah Kurla express. Please book me on that coach , any class , Ranchi to Kulpur. Age. 45Yrs.

This will be my first visit to Hanchi and I am looking forward to the same.  
This comes with best wishes to you.

Yours sincerely,

RAJAN SINGH  
Secretary





*gone through*

# THE CHRISTIAN COUNCIL OF ZAMBIA

P.O. Box 30315  
Tel: 229551  
Telex: 45160 CHRIST  
Fax: 224308  
Lusaka, Zambia

Eingegangen

26. Sep. 1995

Erledigt:.....

All correspondence to be addressed to  
The General Secretary, Tel: 224308

Your Ref:

Our Ref:

September 13th, 1995

Rev Ursula Hecker  
Gossner Mission  
Fennstrabe 31  
D- 12439  
Berlin  
GERMANY

Dear Rev Hecker

Re: Invitation to the 150 Year's Jubilee of the Gossner  
Evangelical Lutheran Church in October/November

Thank you for your fax message of September 11th, 1995 on the  
above subject.

Regrettably Rev Bredt is out of the country and therefore unable  
to advice on how you should proceed with the travel arrangements  
for the above mentioned trip.

It does seem too much to spend 6 days travelling to and from  
India and if it is okay with you, we could also try to see if we  
can get her a reasonably cheap flight which is more direct from  
here.

In the meantime, please await her decision regarding this trip.

Yours sincerely

  
W. K. SIMPOSYA  
ADMINISTRATIVE SECRETARY

O.K. 8.9.95 R.



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Rev. C.S.R. Topno  
KSS  
GEL Church Compound

Ranchi 834001

FAX: 0091 65 1300 716

7-9-1995

Dear Rev. Topno,

as far as I can see you will get now the official list of the guests coming to Ranchi for the jubilee. Except of the group of former workers in Ranchi, who have special wishes for the program, the guests are in your hand. I only would like that all Anchals are considered for the visits of the German guests and that all may get experiences with villages also. Please book accommodations for them in Ranchi. They all will bear the expences.

The two ladies have arrived safely. I hope they are not too much shocked about our German life.

I was shocked that Mrs. Horo doesn't speak English. This is very difficult for the program here. So for the next programs you must send people who know English, as a Hindi speaker in Gossner Mission will not be available any more. Sorry to say that.

We have asked Rev. Borutta for an article in your Jubilee Souvenir. He had to decline this request, since he is not able to write such a contribution due to his age. So you will have to do without that.

Right at the moment we are in a great hectic. So I am happy to come to India alway from this time schedule.

Yishu Sahay

(Ursula Hecker)

There are different groups, one group mostly of former fraternal workers in Gossner Church:

Ilse Martin  
Ursula von Lingen-Senda  
Katharina Sinram  
Franziska Schultz  
Marlies Gründler  
Johann Jannssen  
Adelheid Jannssen  
Bettina Rohwedder  
Magdalena Straube  
Hiltrud Zoll  
Wilhelm Schultz

|              |                                                          |
|--------------|----------------------------------------------------------|
| 30.10.       | Arrival in Ranchi                                        |
| 31.10.-2.11. | Jubilee - it is your decision, where you want the guests |
| 3.11.        | Takarna/Khuntitoli                                       |
|              | nighthalt in Khintitoli                                  |
| 4.11.        | journey to Amgaon                                        |
| 5.11.        | Amgaon                                                   |
| 6.11.        | Amgaon                                                   |
| 7.11.        | journey to Bhubaneshwar                                  |
| 8.11.        | Bhubaneshwar, night train to Calcutta                    |
| 9.11.        | Calcutta                                                 |
| 10.11.       | flight to Delhi                                          |
| 11.11.       | return to Delhi                                          |

For this group it would be nice if you could arrange for a bus from Ranchi to Bhubaneshwar. The guests will bear the expenses.

The group for the seminar, arrival in Ranchi 12th of Oct., departure in Ranchi, 3rd of Nov.:

Ursula Hecker  
Bernd Krause  
Uwe Wiemann  
Claudia Schwartz

We are participants of the seminar. It would be good if we could visit some initiatives or social groups and a remote village after the seminar. Dr. Singh may be helpful in organizing this.



The more official guests:

Ingrid Borns Scharf from Gossner Mission Mainz, 23.10. - 3.11.  
Harald Lehmann, official guest from the Church of Westfalen, 30.10. - 10.11.  
Volker Jürgens, official guest of Hannover, 26.10. - 8.11.  
Klaus Wesner, official guest of Lippe, 23.10. - 3.11.  
Dr. Günter Krusche, official guest of Berlin-Brandenburg and president of Gossner Curatorium, 23.10. - 3.11.  
Dieter Hecker, Director of Gossner Mission, 23.10. - 11.11.

For these official guests you could arrange a program as you think it is adequate. There are people among them who haven't been to India before. I would suggest that the different Anchals will be considered.

If you separate the group and my husband cannot accompany them please guarantee that somebody who knows English well is accompanying them.

Leif Lehmann is a 15 year old boy, he may accompany his father Margret Krusche and Käthe Schülzgen must have a lighter program around Ranchi. As these two ladies don't know much English it would be good if Mrs. Daisy Kongari could accompany them.

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

North Western G.E.L. Church  
Rt. Rev. Dr. Nirmal Minz  
Main Road

Ranchi 834001

7-9-1995

Dear Nirmal,

greetings to you and your family in the Name of Our Lord Jesus Christ. We have received your invitation to the celebration of the 150 years Jubilee of the Advent of the Gospel in Chotanagpur on November 2nd 1995 at Ranchi.

If the program of the Jubilee festival of the GELC gives us time we are willing to follow your kind invitation. I am extremely sorry that you can't celebrate this great event together with the KSS-side.

Coming from Nepal and Delhi Ursel and myself will stay at Ranchi from October 29th till November 3rd. Arrival at Ranchi 10.10 a.m. and departure on November 3rd at 10.55 a.m.

May the Jubilee festival be celebrated in peace and brotherhood and may God bless His Church in India.

Yishu Sahay, always sincerely Yours

Hans und Ursel Grothaus

## FAX MESSAGE

TO : Ursula Hecker  
Secretary for Asia  
Gossner Mission  
Berlin, Germany

From : Markku Voutilainen  
Rural Development Director (acting)  
Kathmandu, Nepal

Date : 5 Sept., 1995

Subject: Resource Persons for Gossner Evangelical Lutheran Church Seminar -  
India

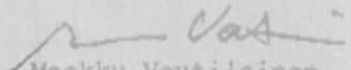
Your fax of August 21 addressed to Anthony Titley on the above subject has been forwarded to me, and on behalf of UMN Rural Development Department I am responding.

I must regret to inform you that Anthony is not free during the time of the seminar to be able to participate as a resource person. He had been informed about the seminar some months ago by Thomas Döhne, but did not realize that he was also being approached as a potential resource person.

Over the past two weeks I have contacted suitable people within and outside of UMN to attempt to find other persons who might be willing to attend the seminar. Although several people expressed interest in the seminar topic, the timing of it and local work responsibilities unfortunately conflict. Again, regrettably, I must reply that from UMN's side we cannot provide any candidates as resource persons for your program.

Thank you for considering UMN personnel as potential resource persons for your seminar and celebrations. I pray for a successful program and outcome for this important topic and occasion.

Sincerely,

  
Markku Voutilainen  
RDD Director (acting)



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To  
Bishop Dr. Nirmal Minz  
North West G.E.L. Church  
Main Road - G.E.L. Church Compound

Ranchi 834 001 - India

Berlin, August 29, 1995

Dear Bishop Dr. Minz,

sorry that I didn't reply your fax earlier. But I was out of station quite some time and I did wait for news from Chotanagpur concerning the progress of the unification of the Gossner Church.

Indeed we were considering openly to write Rev. Topno and you to the celebration of the 150th anniversary of Gossner Church during the Kuratorium in October. This invitation was meant seriously and we were already talking about in the Indienausschuß. But the basis of this invitation (and I said so in Ranchi) was that the unification is brought to a close or is in good progress, if time was short. We thought it would be fair to have you both in Germany - not only for the celebrations but also for the first talks together about your ideas of the coming relationship between the different dioceses and Gossner Mission and the German churches.

Now the situation seems to be different, our assumption seems to be wrong. As far as we have any news, the shortage of time doesn't seem to be the reason that the unification will not be achieved till the jubilee and even the joint jubilee celebrations seem to be cancelled. You can imagine that at this stage we are not in a position to invite you both, because we are convinced that this will create tensions which wouldn't help to a further understanding. You will know that people here are very disappointed and somewhat impatient.

Also for us it seems that in the relationship new ways have to be thought of. We just cannot console people indefinitely that unification may be possible and give them hope and at the end we say sorry, we had been wrong. All your prayers, all your thoughts, all your hope had been in vain. People here are concerned about the people of the Gossner Church. But this concern cannot be stressed infinitely.

We will do what is in our responsibility. We don't know what happened and we don't know what is the state of affairs. So it might be better to get reliable informations first what the present situation is like and then think about the coming relationship. We are looking forward to talk about this in India.

I am happy to know from Dr. Singh that at least the seminar from the 17th-21st of October will be a joint seminar. It would have been very sad if this would not have been possible. Needless to say that my husband and I feel

very sorry. Somehow personally we always felt in an ambiguous position. And this time we had quite a bit of optimism that an understanding could be achieved - because we still believe in the unity of the spirit and it's working among us even if there are understandable reasons and feelings for division.

We regret that we cannot invite you this time now. This is not because we do not want to have you here, but because we do not want to act without knowing all the implications. I hope you can understand this a little.

We have to think about the future relationship of the German people and the Christians of Chotanagpur, because the difficulties here are also growing. As we understand the door for future negotiations has not been closed altogether. Therefore we look forward, that after the jubilee, the talks will be resumed without the pressure of time of the elections like in 1995. Please be sure, that we do hope and pray for this further development.

I am very sorry that I had to write all this. Give our best regards to your family.

Yours sincerely

Rev. Ursula Hecker  
India Desk

29 August, 1995

Rev. C. S. Topno  
UELCI  
1 First Str.  
Haddows Road  
Madras 600006  
INDIA

Eingegangen

- 8. Sep. 1995

Erledigt: .....

यूनाईटेड मिसन दु नेपाल



United Mission to Nepal

Dear Rev, Topno,

I understand that on 2 November 1995 you will be celebrating the 150 years jubilee of the arrival of the first missionaries from Berlin at Ranchi. On this occasion I would like to extend to you from United Mission to Nepal warmest Christian greetings and congratulations and thanks to God for this century and half of witness and service.

I am pleased that Dorothea Friederici, Personnel Director of United Mission to Nepal, will be able to be with you during the celebration and I am asking her to bring you this official greeting from UMN.

I am also grateful that we now have an official connection since the United Evangelical Lutheran Church of India has become a member body of UMN. I look forward to further cooperation with you.

Be assured of our prayers and best wishes during the time of your celebration and also, as you build on such a long and significant history, to plan your witness and service for the kingdom of God as you move into the twenty first century.

Yours in Christ,

  
H. Edgar Metzler  
Executive Director

(personally dictated but not personally signed)

EM/krs

cc: Dieter Hecker  
Director, Gossner Mission

Dorothea Friederici  
Personnel Director, UMN

PO Box 126, Kathmandu, Nepal. Tel (977 1) 228118, 228060. Fax 225559. Telex 2315 UMNEPA.



Dieter und Ursula Hecker

St. Petersburg, 3rd August 1995

To the G.E.L. Church Ranchi:

The Pramukh Adhyaksh Anchal, the Director B.E.L., the Adhyaksh S.E.-Anchal, the Ilaka Chairman of Burju Ilaka and the members of Burju Congregation of G.E. L. Church

---

Dear Rev. C.S.R. Topno, dear Dr. Paul Singh, dear Rev. M. Barjo, dear Rev. J. Topno, dear members of the Burju Congregation,

we are just on a short 10 days' holiday at Sankt Petersburg in Russia, a city with dozens of palaces, museums and cathedrals. The churches and cathedrals are mostly in other use since the time of the Communist Government. Only slowly the Churches get them back for worship. As an example we send you two postcard of the Lutheran St. Peter's Church, which looks very normal from outside, but inside a swimming pool had been installed, which they are just now reconstructing by making a fresh floor, putting benches and an altar again. Meanwhile the Lutheran congregation is having its services at St. Anna's Church, which has been transformed to a cinema hall and is only leased on Sunday morning for church services. Outside it also looks like a normal church. But the congregation is growing. They are using both Russian and German language for worship. Each Sunday they close with the famous hymn in German language written by Father Gossner: „Segne and behüte" (Bless and keep us now).

We have not only visited the Lutheran congregation, but also the church, in which Father Gossner was preaching from 1820 to 1824, the so called Malthesian Chapel with about 400 places within the premises of the palace Woronzow. At present this whole Compound is a military Academy and thus normally closed to the public. This church had also been used for other purposes, but is at present restored into its original shape as a church by the military authorities. It is a very impressive building in the so called classical style with big marble columns and a nicely painted ceiling. We have made some photos and shall send them to you along with the original letter.

We were just thinking, it would be a good idea at the occasion of the jubilee, if the G.E.L. Church as a whole, but also specially the congregation of Burju could send a letter on the occasion of the Jubilee to the Lutheran Congregation of St. Petersburg in commemoration of the special relationships between these two places. As far as we know, Burju was first called Patrasburj and the finances for the foundation came also from there. We are just trying to find out, who was responsible for that support. It seems, that Rev. Hermann Dalton, who was the pastor of the Reformed Church in St. Petersburg in the later part of the 19th century and who wrote a famous biography of Gossner was the contact person there.

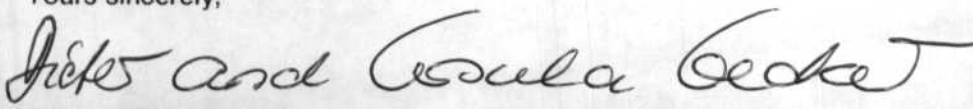
The address of the Lutheran congregation in St. Petersburg is:

Lutheran Church in Russia and other States (ELCROS), Congregation St. Petersburg  
c/o Rev. Heinz Kitzka, Newski Prospekt 22 -24, 191 186 St. Petersburg - Russia.  
Fax: 007-812-3102665.

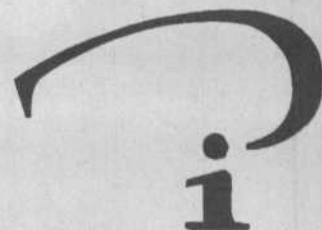
Actually since the letters will take a long time, it is advisable to send any message by fax first, which has a quite good connection, or send the fax through us. In any case we would appreciate to get a copy of any such message.

We wish you all the best for the jubilee preparations. With kind regards and a warm Yishu Sahay we remain,

Yours sincerely,

  
Dieter and Ursula Hecker

PÄDAGOGISCHES INSTITUT  
DER EVANGELISCHEN KIRCHE VON WESTFALEN  
DOZENT HARALD LEHMANN



Pädagogisches Institut · Postfach 5020 · 58225 Schwerte

Frau  
Ursula Hecker  
- Gossner Mission -  
Fennstr. 31

12439 Berlin

privat:  
In der Rohde 19  
44869 Bochum  
02327/71661

Ihr Zeichen

Ihre Nachricht vom

Unser Zeichen  
Le/Pf

Datum  
14.07.95

Telefon Durchwahl  
(02304) 755 - 168

Liebe Frau Hecker,

das ausgiebige Gespräch in Ascheberg am Freitag hat bei mir die Vorfreude auf die Indienreise erheblich gesteigert. Die Bücher aus Ihrem Privatbesitz schicke ich mit Dank zurück. „Trittsteine im Fluß“ von Willibald Jacob habe ich mir über den Buchhandel bestellt und das Buch über die Gossner-Kirche von Hans Lokies kopiert.

X Ich habe mir notiert, daß der Flug wahrscheinlich mit Swiss Air ab Düsseldorf über Zürich gehen wird (Abflug 28.10./Rückkehr 11.11.). Von Neu Delhi geht es sofort oder am folgenden Tag weiter nach Ranchi. Für das Visum werden Sie mir rechtzeitig Antragsformulare zuleiten, die ich Ihnen zusammen mit den Pässen zurückschicke.

*am 20.7.95 verschickt. Wei*

Gestern habe ich mit OKR Dr. Beyer über ein Gastgeschenk der EKvW gesprochen, er wird mir wie erbeten ein Abendmahlsgeschirr mitgeben.

Nochmals Dank für all Ihre Mühen  
und herzliche Grüße

*Th H. Le*

*X mit Luftansa  
ab Frankf.!*

Hausadresse:  
Iserlohner Straße 25  
58239 Schwerte  
Telefon: (02304) 755 - 0  
Telefax: (02304) 755 - 247

Bankverbindung: Evangelische  
Darlehns-genossenschaft  
Münster  
Bankleitzahl: 400 601 04  
Kontonummer: 30 001

Gleitende Arbeitszeit! Sie erreichen uns  
vormittags  
Montag - Freitag 8:30 - 12:00 Uhr  
nachmittags  
Montag - Donnerstag 13:00 - 16:00 Uhr



# NASIK DIOCESAN COUNCIL

CHURCH OF NORTH INDIA



The Rt. Rev. Dr. A. George Ninan  
Bishop of Nasik

Bishop's House  
Outram Road, Tarakpur  
Ahmednagar 414001, Maharashtra, India  
Tel: 0241/26746  
26th June 95.

Attn. Rev. Delter Hecker  
Rev. Ursula Hecker.

Gossner Mission,  
Fennstraße 31  
D-12439 Berlin.

Fax-No. 49 30 6361198

Dear friends,

Thank you for your fax regarding the seminar at Ranchi in October 17-20, 95. I will be happy to accept the invitation to make a presentation on "Social Responsibility of the Church" on 19th October. I have to leave for Bangladesh on 20th October. Please send me details of the seminar.

With all good wishes.

Yours sincerely,

Rt. Rev. Dr. George Ninan  
Bishop of Nasik

GN/BJ





# THE CHRISTIAN COUNCIL OF ZAMBIA

P.O. Box 30315  
Tel: 229551  
Telex: 45160 CHRIST  
Fax: 224308  
Lusaka, Zambia

All correspondence to be addressed to  
The General Secretary, Tel: 224308

Your Ref:

Our Ref:

April 5th, 1995

Rev Dieter Hecker  
Gossner Mission  
Fennstrabe 31  
D-12439  
Berlin  
GERMANY



Dear Rev Hecker

RE: INVITATION FOR THE 150 YEARS' JUBILEE OF THE GOSSNER  
EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN OCTOBER/NOVEMBER 1995

Thank you for your letter dated 24 March, 1995 which was hand  
delivered to us by Aloisia Shittematler.

I am very grateful for the invitation extended to me to attend  
the 150 years jubilee of the Gossner Evangelical Church from  
October/November, 1995.

Looking at the length of duration involved, it appears that I  
would only be able to attend part of the jubilee, say from 17th  
to 23rd or from 31st to the 2nd November. Kindly advise me which  
part you may feel would be most suitable for me to contribute to.

Thanking you once more for the invitation and looking forward to  
hearing from you.

Yours sincerely

*V. m. Bredt*  
REV V SAMPA BREDT  
GENERAL SECRETARY

✓ C.C. Rev Ursula Hecker  
India Desk

20-Jun-1995 10:02

GOSSNER MISSION LUSAKA

+26 01 261580

S 1

Fax an Gossner Mission, Berlin

**Gossner Mission**

Händjervstr. 19-20  
1000 Berlin 41 (Friedenau)  
Germany  
Phone 030/85000411  
Fax: 030/8593011  
Telex 186655 blmbd

Gossner Mission Team  
Gwembe South Development  
Project  
P.O. Box 4  
Sinazee



Liaison Office  
P.O. Box 50162  
Tel: 01/261580  
Fax: 01/261580



Naluyanda Integrated  
Project  
P.O. Box 50162  
LUSAKA



18.06.1995

Gossner Mission  
Herrn Frau Lehrer  
Berlin

Liebe Frau Lehrer,  
wegen der Einladung an Violet Bredt hatte ich jetzt  
nochmals Gelegenheit, mit ihr zu reden. Sie  
hat wohl am 5.4.95 per Fax schon ihre Bereitschaft,  
nach Indien zu fliegen, signalisiert.  
Violet wurde gerne an den Jubiläumsgesprächen,  
die vom 31.10. - 2.11.95 stattfinden, teilnehmen.  
Sonder Termine wahrzunehmen, ist ihr leider nicht  
möglich. Sie kann 7, höchstens jedoch 10  
Tage (Reisezeit inbegriffen) bleiben.  
Dies istmal vorab zu Ihrer Information. Auch  
dabei wurde mündlich in Berlin.  
Die Zeit vergeht wahnsinnig schnell hier und  
ich muß mich jetzt beeilen, um die Sachen, die  
noch anstehen, auch noch zu erledigen. Ande-  
rseits habe ich natürlich jetzt auch nichts  
dagegen, bald beizufahren.

Gruß  
Herr

Gossner  
Mission  
Herrn

*1/ Kopie f. Bredt - Ablage*

**Gossner  
Mission**



Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Fennstraße 31  
D - 12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 11 98

To  
Rev. Mrs. Violet Sampa-Bredt  
General Secretary CCZ  
Christian Council of Zambia  
Cairo Road - Post Box  
Lusaka - Zambia

Berlin, 24 March 1995

**Ref.: Invitation for the 150 years' jubilee of the Gossner Evangelical Lutheran Church in  
October/ November 1995**

Dear Rev. Sampa-Bredt,

as we told you already during your visit to Germany and at Rev. Dieter Hecker's visit to Zambia, we would like to invite you as a representative of the Christian Council of Zambia to participate in the celebrations of the 150 years' jubilee of the G.E.L. Church in India. The jubilee celebrations are from the 31st of October to the 2nd of November 1995. There is however a Seminar with Ecumenical participation on the problem of social awareness in the church and the social responsibility of the G.E.L. Church for the rapidly changing Society of the industrial belt of Chotanagpur, the main and central area of this church. this seminar will take place from the 17th to the 23rd of October 1995 and the G.E.L. Church has also invited participants from Germany and Nepal.

We would appreciate very much, if representatives of different churches and church organisations, to whom Gossner Mission had working relationships could come, participate and share the experiences of their own context. So the celebrations will not be without consequences, but the jubilee will be an occasion for a critical evaluation of the work in the past and give new perspectives for the future. In this respect we would appreciate your participation, since Christians in Zambia have had special experiences as a majority religion and you have studied and discussed the role of the International Economical Order and its effects on the position of women much more extensively than the G.E.L. Church has done so far. Therefore we would look forward to your contribution to this seminar. We shall send you a detailed program by about July or August. We would naturally bear the costs for your travel and stay in India as part of the seminar.

We do hope, that the conflicts you had with the government could be sorted out and the CCZ will continue to raise its voice whenever necessary. Looking forward for a positive reply to this invitation we remain with all good wishes and kind regards,

Yours sincerely,

Rev. Dieter Hecker  
Director

Rev. Ursula Hecker  
India Desk



Landeskirchenamt Postfach 21 53 32711 Detmold

An die  
Gossner Mission  
Fernstraße 31  
  
12439 Berlin



Bearbeitung: Matthias Melchert  
Durchwahl: 976-857

Az.: 241-4 Nr. 1899 (1.2) Me/kai  
*Bitte bei jeder Antwort angeben!*

Datum: 23.02.1995

150jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran Church in Indien

Sehr geehrte Damen und Herren,

Landeskirchenrat und Missionsrat haben übereinstimmend beschlossen, Pfarrer Uwe Wiemann als Delegierten der Lippischen Landeskirche zur 150-Jahr-Feier der Gossner Evangelical Lutheran Church in Indien vom 11. bis 30.10.1995 als Delegierten der Lippischen Landeskirche zu entsenden.

Wir bitten um Kenntnisnahme und weitere Veranlassung.

Mit freundlichen Grüßen



( Dr. Haarbeck )

**KOMITE NG SAMBAYANANG PILIPINO**

Filipino People's Committee

Korte Jansstraat 2A  
3512 GN Utrecht  
The NetherlandsTel. + 31 (0)30 - 367 376  
Fax + 31 (0)30 - 321 379Rabo Bank 39.42.94.440  
Post Bank 18 79 014

TO  
BERNT KRAUSE  
BERLIN

UTRECHT  
17/2-95

PEOPLE IN IPD (INSTITUTE FOR POPULAR  
DEMOCRACY) PROBABLY KNOW WHERE  
TO FIND ED DELA TORRE.

ED IS TRAVELLING MUCH, SO THERE  
IS NO GUARANTEE THAT HE IS IN  
THE PHILIPPINES RIGHT NOW.

IPD

TEL 004632-9214054

FAX +632-9223889

0063

GOOD LUCK!

Eva K  
for KSP staff

0049-30-009

6317809

0361198

95

11 -

25. Okt

Telefonat am 21.2.  
Terminist besetzt. Es  
macht Vorschlag für  
andere Personen bis  
spätestens am  
24.2.95  
fax.

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To  
Rev. CSR Topno  
KSS Office  
GEL Church Comp.  
Ranchi 34001  
INDIA

January 23, 1995

Dear Rev. Topno,

it is late, but I hope not too late. Here is my message for your jubilee edition. Hope you are alright. Yishu Sahay.

Yours,

Rev. Ursula Hecker  
Secretary for India

Dear Sisters and Brothers in Christ,

150 years is a long time to look back, but not too long not to feel concerned anymore with this history. God's grace and mercy has accompanied you through all these decades. He has guided you through hopeful and challenging events but also protected and saved you in dangerous and frustrating situations.

Gossner Mission is connected with you and your history in solidarity and with affection. We are happy to celebrate this jubilee with all of you and we are one in our prayer that God may have mercy with the world and give us strength to be united in solving the difficult tasks for the future of a world in humanity and peace.

We Christians have the promise and the task to be the light of the world - and there is still so much darkness around us. It is not enough to look back thankfully. Through this jubilee you in the Gossner Church and we in Gossner Mission shall be strengthened to work for the coming of His kingdom also in future.

Rev. Ursula Hecker  
Secretary for India



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Gurukul Lutheran Theological College  
& Research Institute  
attn Rev. Dr. M. Bage  
94, Purasawalkam High Road  
Kilpauk, MADRAS-600 010

January 20, 1995

Dear Dr. Bage,

we hope you have started the new year in good health and with a lot of good ideas and energy. We wish you and your wife God's blessings that you may be able to continue to work for the good of His kingdom.

You can imagine that Gossner friends are excited about the result of the peacetalks and we really pray that this time the solution will be definite and really for the benefit of all people. It needs people like you who have the wisdom of experience and the freedom from own interests to promote the idea of the new church.

No matter how the work with a new constitution will go on we trust that the jubilee will be a jubilee in unity. We in Germany are also starting preparations. We want to edit a special issue of our magazine - larger and with more articles than usual. And we want to ask you to write an article of two DIN A4 pages about the Gossner Church today. I will send you also an outline of the whole magazine then you can see what other articles are planned.

We would like to request you also to mention the split, because we from the German side don't want to write about it, it might create unnecessary tensions. And we trust that you are fair enough to write about it objectively as far as possible.

Now there is a problem maybe, we need this article as soon as possible and as lively as possible. It should not be a magazine for academic reasons, but for the benefit of the congregations. If you could send us a copy till the 5th of March we would be much obliged.

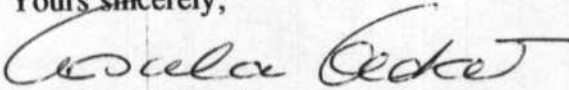
As far as I know, Dr. Roeber will also visit Madras in the beginning of March. Maybe you could give it to him.

It would be nice if you acknowledge this letter that we know you are ready to write this article. Thank you very much!

My husband is in Zambia right at the moment. At Christmastime Mr. Dang and Mr. Kispotta had been in Berlin, it seems that both have been adjusted now and that they really get a broader view of the world, but still sticking to their good principles and their traditions.

Please give my best regards to your wife and all the students of GELC in Madras. Hoping to hear from you soon I remain

Yours sincerely,



Rev. Ursula Hecker  
Secretary for India

Prof. Dr. Hans Grothaus  
Norderlueck 28  
D- 24943 FLENSBURG  
Germany

16. 01. 1995

To the Pramukh Adhyaksh of GELC  
Rev. C.S. R. Topno  
GELC Church Compound - KSS Office  
RANCHI/BIHAR  
INDIA

Dear brother Topno,

following your request I like to send you my sincere greetings and a message for your jubilee-souvenir. It was a wonderful experience to attend the last meeting of the Restructure and Drafting Committee, GELC and NW GELC at Madras Nov. 25.- 27. 1994. I really hope that you will proceed in fixing the new constitution. In case you can reach the unification in time and celebrate the final Jubilee-celebration as one reunified GELC I will be happy to follow your invitation to attend the final celebration together with my wife.

With many thanks and prayerful wishes,

yours sincerely



Dear sisters and brethren in the Gossner Evangelical Lutheran Church,

At your 150. Aniversery my prayers and sympathizing thoughts are with all of you and I like to express my feelings with some sentences of St. Paul 1. Korinthians 1, 4 - 9 :

*"I give thanks to God always for you because of the grace of God which was given you in Christ Jesus, that in every way you were enriched in him with all speech and all knowledge - even as the testimony to Christ was confirmed among you - so that you are not lacking in any spiritual gift, as you wait for the revealing of our Lord Jesus Christ; who will sustain you to the end, guiltless in the day of our Lord Jesus Christ.*

*God is faithful, by whom you were called into the fellowship of his Son, Jesus Christ our Lord."*

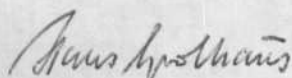
In these 150 years you really have experienced Gods grace who has guided and blessed you even in time of war and inner conflicts.

The seed which was spread out by German missionaries and by your own evangelistic efforts has brought manyfold fruits. But it also has been a time in which we followed our own ideas seperating from one another and not practising Gods love and will. For this we have to repent and to ask for Gods mercy and forgiveness.

But "God is faithful" as St Paul says and we trust in Him that He will give us a new chance to live in peace in order to testify Gods mercy and love. May God help us, Gossner Mission as well as the one reunified Gossner Church, to practice brotherhood and to proclaim the Good News that God has become flesh in Jesus Christ in oder to save the world.

Let us praise God and celebrate this wonderful event of 150. Aniversery with exceeding joy and gladness and may God bless you in the years to come.

Always your brother in Christ





# Gossner Mission



Handjerystraße 19-20  
1000 Berlin 41 (Friedenau)  
Telex: 186 655 blnmw d  
Telegramme: Weltmission Berlin

Gossner Mission · Handjerystraße 19-20 · 1000 Berlin 41 (Friedenau)

Telefon: (030) 850004-31

- ☐ Indien -30
- ☐ Nepal -35
- ☐ Zambia -32
- ☐ Öffentlichkeit -35
- ☐ Gemeindedienst -34
- ☐ Buchhaltung -33/78
- ☐ Zentrale (BMW) -0

Einladungen zu den Jubiläumsfeierlichkeiten 1995 in der Gossner Kirche

Rundbrief, am 23.1.95 verschickt an:

Helmuth Borutta, Schlüterstr. 6, 90480 Nürnberg

➤ Schwester Ilse Martin, Jenaer Str. 20, 10717 Berlin

Marianne und Hermann Kloss, Kommendebreite 28, 37081 Göttingen

➤ Ursula von Lingen, <sup>-Sondag</sup> Philipp-V.-Heck-Str. 10, 72076 Tübingen

Klaus Schwerk, Johannisberger Str. 28, 14197 Berlin Tel. 8214262

Familie Albrecht Bruns, Pappelhof, 26842 Ostrhauderfehn-Potshausen

➤ Monika Schutzka, Blumenstr. 1/1, 72072 Tübingen

Dr. theol. Thomas Dell, Zweifalltorweg 12, 64293 Darmstadt

➤ Ansgar Kelber, Martin-Kärcher-Str. 28, 68623 Lampertheim

Wolf-Dietrich Tomforde, Kolberger Str. 13, 26441 Jever

Familie Helmut Hertel, Silcherstr. 9, 71638 Ludwigsburg

Manfred Kmitta, Bergstr. 112, 76646 Bruchsal

am 26.1.95:

Familie Maria und Eberhard Peusch, Waidmannstr. 6, 71083 Herrenberg

➤ Marlies Gründler, Peter-Goessler-Str. 7, 72076 Tübingen

Dr. W. Rohwedder, Bachstr. 11, 74906 Bad <sup>n</sup>Rappemau

Am 18.5.95

➤ Wilh. Schultze, Ernst-Wichert-Weg 14, 29227 Cella  
Tel 05141-81920

➤ Bettina Rohwedder  
Im Otterthal 5  
74889 Gersheim

Janssen, Lambertsloof 11, 26603 Auroch

Berlin, 23.1.95

Liebe Frau Hecker!

Hier sind die gewünschten  
Adressen:

● Maria + Eberhard Pensch  
Waidmannstr. 6  
71083 Herrenberg ✓

—  
Frau Mari's Gründler  
Peter-Goessler-Str. 7  
72076 Tübingen ✓

—  
● Dr. W. Rohwedder  
Bachstr. 11  
74906 Bad Rappenau ✓

—  
x Schwester Hedwig Schmidt

Lübeck

Gossner

x Hilfe in  
Mission

Ihnen später mit,



HOTEL  
COLON  
INTERNACIONAL



Marianne + Hermann Kloss  
Kommendebreite 28  
37087 Göttingen

---

Familie Bruns  
Pappelhof  
26842 Potshausen

---

Fam. Helmut Hertel  
Sülicher str. 9  
71638 Ludwigsburg

---

Schwester Monika Schentzka  
Blumenstr. 1/1  
72076 Tübingen / Weilheim

---

Mit herzlichem Grüssen  
Ihre Marlin

Du

Peter Mithenluber — kein Kontakt mehr

Horst Adomeit — 4 4

X Augar Keller; Martin-Kärcher-Str. 28, 68623 Lampertheim

Volker Götz ?

X Wolf-Dietrich Tomforde, Kolberger Str. 13, 26441 Jever

Paul Reck ?

Benhard Ruprecht ?

Dietrich Dammert kein Kontakt mehr

Hedwig Schmidt

Manfred Kmitte

X Bergstr. 112 } → D. Hedrich  
76646 Badminal

Von Güter Hee: (Ende Juni aus den Staaten  
zurück!)

Katharina Sinnram  
Sonreysstr. 1  
37170 Uslar

(Tochter von  
Dr. Schulz  
(53-8 in  
Buden)

Adressen:

Gossner Missionare

- X Helmut Borutta; Schläferstr. 6, 90480 Nürnberg 30
- X Schw. Ilse Martin; Jenaer Str. 20, 10717 Berlin
- X ⊗ Hermann Kloss; Kommandobrode 28, 37081 Göttingen
- Schw. Maria (Schatz) Peusch; ✓
- X ✓ Schw. Ursula v. Lingen; Philipp-v.-Hede-Str. 10, 72076 Tübingen
- Schw. Marius Gründler ✓
- Werner Thiel
- Dr. med. Wille. Rohwedder ✓
- X Klaus Schweske; Johannisberger Str. 28, 14197 Berlin (S)
- ⊗ Schw. Marianne (Koch) von Hermann Kloss
- X Albrecht Bräuns; Pappelhof, 26842 Osterhanderfelm-Potthausen
- X Schw. Mouna Schutka; Blumenstr. 1/1, 72072 Tübingen
- X Dr. Heide. Thomas Dill; Zwickauerweg 12, 64293 Darmstadt
- X ○ Helmut Hertel Silcherstr. 9  
(Frau Hecker) 71638 Ludwigsburg



ad 16.1.



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6351198

030/6361198

16.1.1995

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Dienste in Übersee

Nikolaus-Otto-Str. 13  
PF 10 03 40

70771 Leinfelden-Echterdingen

Sehr geehrte Damen und Herren,

In diesem Jahr finden in Indien Feierlichkeiten anlässlich der Gründung der Gossner Kirche in Indien vor 150 Jahren statt, zu denen ehemalige Missionare und Mitarbeiter über DÖ eingeladen werden sollen.

Könnten Sie uns bitte behilflich sein bei den Adressen folgender Personen:

Peter Mittenhuber X  
Horst Adomeit X

2 Volker Götz  
2 Wolf-Dietrich Tomforde

Paul Rech  
Bernhard Ruprecht  
Dieter Dammer. X

Kolberger Str. 13, 26441 Jever

Herzlichen Dank für Ihre Mühe.

Mit freundlichen Grüßen

Gossner Mission

Fennstraße 31  
12439 Berlin

(Weinert)

Sekretärin für das Indienreferat

X keine Kontakte

# GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH

IN CHOTANAGPUR & ASSAM

( Registered Under Societies Registration Act. XXI of 1860 )

Vide No. 273-J of 30-7-1921

Rev. C.S.R. Topno  
M.A.B.D.M. Th.  
Pramukh Adhyaksh

XXXX  
Rev. S.K. Jojo  
Up. Pramukh Adhyaksh

Shri J. S. Topno  
B. A. ( Hons. ) B. Ed.  
Secretary

Mr. U. Sanga  
XXXXXXXXXXXX  
XXXXXX  
Treasurer

Head Office :  
K. S. S. Office  
G. E. L. Church, Ranchi  
Bihar/India; Phone 311513

Ref.....



4.11.1994

Date.....

To

Evangelisch-Lutherische Kirche in Bayern  
Landesbischof Hermann von Loewenich

12004

Most Rev. Bishop,

With exceeding joy and gladness, it is to say that the Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur and Assam was established on November 2, 1845 by four German Missionaries sent by Father Johannes Evangelista Gossner from Berlin.

Now ist is going to complete by the Grace of God, 150 years. The Kendriya Salahkari Sabha (the highest executive body of the Church) in consultation with its Jubilee Committee took a decision to have a year long celebration of the sesqui - centennial Jubilee begining on 2nd November 1994 and culminating on 2nd November 1995.

During the one year period Jubilee celebrations will be held right from the Mandli (Congregation) level to the Anchal (Diocese) level. The concluding and final celebration will be held from 31. 10. 95 to 2. 11. 95 when people from other places will also congregate here.

Requests have gone out to the Church functionaries at different levels to organise functions befitting the occasion. They have also been told to fix up the dates in such a manner, after due consultation with each other, that the celebrations are spread over covering the entire year.

On our request, the Bible Society of India is bringing out a special edition of the Hindi Bible to commemorate this occasion. We are also working on publishing a Church history covering the period from 1845 to date. Work is going on in full swing on this. And, of course, we will bring out a Sovenir in 1995 containing articles on several matters connected with the Church and its activities.

It is our earnest request that you may kindly give your blessings on what we are doing in connection with the Jubilee celebrations and graciously send your message and also your passport photograph for inclusion in the Sovenir by 15th January 1995.

Further, we extend our warmest invitation to you to make out time and participate either personally or by your representative in the concluding and final Jubilee celebrations from 31. 10. 95 to 2. 11. 95.

We shall be highly obliged for a line of confirmation.

With kind regards ,

Yours sincerely

Topno.  
(Rev. C.S.R. Topno)

# EVANGELISCH-LUTHERISCHE LANDESKIRCHE HANNOVERS

DER LUTHERISCHE LANDESSUPERINTENDENT  
FÜR DEN SPRENGEL OSTFRIESLAND

Fernruf 04941-2672  
Telefax 04941-3250  
Postfach 1468

JULIANENBURGER STRASSE 23  
26584 AURICH  
am 4. 11. 1994

Rev. C.S.R. Topno  
Pramukh Adyaksh  
K.S.S. Office  
G.E.L.Church  
Ranchi

Sehr verehrter Herr Pramukh Adyaksh, lieber Bruder Topno!

Nachdem ich am 3. November nach einem angenehmen Flug zu Hause angelangt war, habe ich heute gleich die Briefe mit den Einladungen fertig geschrieben und an die sechs beteiligten Landeskirchen abgeschickt.  
Es sind:

Evangelisch-Lutherische Landeskirche in Bayern  
Landesbischof Hermann von Loewenich

Evangelische Kirche in Berlin-Brandenburg  
Bischof Prof. Dr. Wolfgang Huber

Evangelisch-Lutherische Landeskirche Hannovers  
Landesbischof D. Horst Hirschler

Evangelische Kirche in Hessen und Nassau  
Kirchenpräsident Prof. Dr. Peter Steinacker

Lippische Landeskirche  
Landessuperintendent D. Dr. Ako Haarbeck

Evangelische Kirche in Westfalen  
Präses D. Hans-Martin Linnemann

Ich lege als Muster den Brief an die Evangelisch-Lutherische Landeskirche in Bayern bei.

In meinem Brief habe ich die Einladung noch einmal meinerseits warm empfohlen.



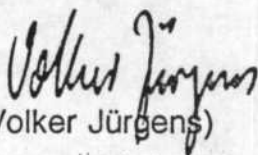
Für die von Ihrer Kirche mir in den letzten Wochen erwiesene Gastfreundschaft möchte ich mich noch einmal herzlich bedanken. Ich habe in den Tagen in Ranchi und New Delhi so viele überwältigende Eindrücke erfahren, daß ich noch gar nicht fähig bin, sie alle zu ordnen.

Über den Besuch werde ich noch lange nachdenken müssen. Eines ist mir aber ganz klar: Ihre Kirche braucht die enge Verbindung zu anderen Kirchen, wie wir die Verbindung zu Ihrer Kirche brauchen. Darum sind wir als Glieder des einen Leibes Jesu Christi aufeinander angewiesen. Ich wünsche dem Jubiläumsjahr darum weiterhin einen gesegneten Verlauf und bin stolz darauf, ein ganz klein wenig an der Vorbereitung beteiligt gewesen zu sein.

Grüßen Sie bitte alle Mitarbeiter und Mitglieder des K.S.S. herzlich von mir, ebenso Rev. Dr. Singh!

Mit allen guten Wünschen bin ich

Ihr

  
(Volker Jürgens)



Entwurf:

EVANGELISCH-LUTHERISCHE LANDESKIRCHE HANNOVERS

DER LUTHERISCHE LANDESSUPERINTENDENT  
FÜR DEN SPRENGEL OSTFRIESLAND

Fernruf 04941-2672  
Telefax 04941-3250  
Postfach 1468

JULIANENBURGER STRASSE 23  
26584 AURICH

← am 4. 11. 1994

Sehr verehrter Herr Präses D. Linnemann !

Gestern bin ich von einem Besuch der Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur and Assam zurückgekehrt. Während meines Besuches in Ranchi bei dem derzeitigen Pramukh Adyaksh, Rev. C. S. R. Topno, sprachen wir über die Gestaltung des 150. Jubiläums der Gossnerkirche und über die Absicht Rev. Topnos, die Leitenden Geistlichen der mit seiner Kirche besonders verbundenen deutschen Kirchen einzuladen. Ich habe ihm die Eilbedürftigkeit einer solchen Einladung eindringlich dargestellt. Angesichts der postalischen Verhältnisse besonders im Staate Bihar kamen wir überein, daß ich die Briefe Reverend Topnos mit nach Deutschland nehmen und hier, mit einigermaßen korrekten Adressen versehen, auf die Post geben sollte.

Darunter ist nun auch das diesem Brief anliegende Einladungsschreiben an Sie, Bruder Linnemann. Ich schreibe nicht nur, um zu erklären, wie ich in den Besitz der Briefe gekommen bin, sondern auch, um der Einladung, wenn möglich, ein wenig mehr Dringlichkeit zu verleihen. Die Gossnerkirche ist nach meinem Eindruck auf oekumenische Kontakte mehr denn je angewiesen. Eine der Gefahren, die der Kirche drohen, scheint mir die zu sein, zu einer bloßen Adivasikirche zu werden. Sie muß eine Adivasikirche sein, weil sie zu mehr als 95% aus Angehörigen dieser nichtarischen und nichthinduistischen Völker besteht, aber sie darf es nicht nur sein, wenn sie als älteste christliche Kirche des Bereiches nicht zu einer Kirche mit bloß lokaler Bedeutung verkommen soll. Ein Indiz für die Größe der Gefahr scheint mir das Nachlassen der Englischkenntnisse unter den jüngeren Pfarrern zu sein. Da kann ein solches Jubiläum eine Chance sein, die Kontakte durch persönliche Begegnung fester werden zu lassen. Im übrigen wird Ihnen die Problematik durch S. em. Dr. von Stieglitz bekannt sein.

In der Hoffnung, daß Sie an dem Jubiläum teilnehmen können, bin ich mit freundlichem Gruß

(Jürgens)

**EVANGELISCHE KIRCHE  
IN HESSEN UND NASSAU**  
**KIRCHENVERWALTUNG**

**Pfarrer und Oberkirchenrat  
Dr. Klaus-Martin Beckmann**

Kirchenverwaltung der Evangelischen Kirche in Hessen und Nassau  
☐ 64276 Darmstadt

Herrn  
Landessuperintendent Jürgens  
Julianerburger Str. 23

26584 Aurich

Darmstadt, 23. November 1994  
☎ 0 61 51 / 405- 428  
Aktenzeichen: 1586A-21 (B/Gün)

Der luth. Landessuperintendent  
für den Sprengel Ostfriesland

Tgb.-Nr. 1652

Eingang am 29. 11. 94

Abgang am

**Gossner Evangelical Lutheran Church in Indien**

Lieber Bruder Jürgens,

im Auftrag unseres Kirchenpräsident Professor Steinacker bestätige ich Ihr freundliches Schreiben vom 4.11.1994 mit der beigefügten Einladung der Gossner Kirche zu ihrem 150jährigen Jubiläum vom 31.10. bis 2.11.1995.

Wir können von der EKHN aus an diesen Feierlichkeiten nicht teilnehmen, einmal weil wir für 1995 und fast dieselbe Zeit seit langem einen Besuch bei unseren Partnerkirchen in Südafrika und Namibia planen und zum anderen, weil wir keine einzige direkte Verbindung von Gemeinden unserer Kirche zur Gossner Kirche in Indien m. W. haben. Unsere Verbindung zur Gossner Mission ist sehr stark durch das Mainzer Zentrum bestimmt.

Mit freundlichen Grüßen

- auch von unserem Kirchnepräsidenten Dr. Steinacker -

Dr. K. M. Beckmann

# EVANGELISCHE KIRCHE IN BERLIN-BRANDENBURG

BISCHOF DR. WOLFGANG HUBER

Der Bischof der Evangelischen Kirche  
in Berlin-Brandenburg

Neue Grünstraße 19-22  
10179 Berlin

Herrn Landessuperintendent  
Jürgens  
Julianenburger Straße 23

26584 Aurich

Berlin, den 1. Dez. 1994

Telefon: (030) 278 02 - 0  
Durchwahl: (030) 278 02 - 200  
Telefax: 279 11 55

1362/94

Az:

(Bei Antwort bitte angeben)

Der luth. Landessuperintendent  
für den Sprengel Ostfriesland

Tgb.-Nr. 1677

Eingang am 02.12.94

Abgang am

Lieber Bruder Jürgens!

Haben Sie herzlichen Dank für Ihren Brief vom 4. November 1994. Er hat mich zusätzlich veranlaßt, die Möglichkeit einer Reise nach Indien sehr ernsthaft zu prüfen. Leider ist die Terminkollision mit wichtigen landeskirchlichen Veranstaltungen zum Reformationstag nicht behebbar. Deshalb muß ich den Besuch bei der Gossnerkirche auf eine andere Gelegenheit verschieben.

Ich wollte Ihnen dies direkt mitteilen, weil mir Ihr Brief die Dringlichkeit einer Reise besonders deutlich gemacht hatte. Aber verschiedene Umstände machen mich zu diesem Zeitpunkt hier unabkömmlich.

Es grüßt Sie mit herzlichem Dank  
Ihr

Wolfgang Huber



Phone : 311314

Fax : 0091-651-30 09 79

**NORTH WESTERN  
GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH  
MAIN ROAD, RANCHI - 834 001 INDIA**

**Bishop : Rev. Dr. Nirmal Minz  
Asstt. Bishop (Elect.) : Rev. N. Lakra  
Arch Deacon : Rev. B. K. Toppo**



**Secretary : Shri Dhiraj Lakra  
Treasurer : Shri S. K. Toppo**

Ref. No. 519/93-94/F 169

Date 15/03/94

To,

Rev. D. Hecker  
Director,  
Gossner Mission,  
Fenn STR, 31, 0-1190,  
Berlin, Germany.

1) Liste erstellt  
20.4.94

2) Nachsendung  
durch Frau Hecker 25. März 1994  
22.4.94

3) Photos von ca 1900

Eingegangen

Erledigt:

Subject:- 150 years Jubilee Celebration.

Respected Rev. Hecker,

Yisusahay,

Almost six months have elapsed I did not hear any news about my letter with regard to the above mentioned subject. May I once again remind you to kindly refer to my previous letter dated 28th July '93. In this letter I had requested you to kindly send the photos of the Missionaries who came from Germany to India in the Gossner Church, and especially in Chhotanagpur, right from the first Missionaries sent by Father Gossner. Of course, this task is not an easy one, as you have most busy schedule. Yet may I request you to kindly help me to approach the persons concerned who can send the photos of the Missionaries. Or you, yourself can depute some persons from your office to do this work. As the time is passing very fast, we need the photos for the souvenir by October 1994. We also need the following information:-

Cont..... 2/-

// 2 //

1. From which place of Germany did they come ?.
2. When did they come ?.
3. Where did they work ?. and
4. How long did they stay ?.

What ever the sources do you have, either through Library or persons concerned kindly do the needful and oblige.

Looking forward to hear from you soon.

A Happy Easter to you, your colleagues and your family members.

With Love and Prayer,

Yours for His service,

Rev. B. K. Toppo  
15.3.94  
( Rev. B. K. Toppo )  
Arch Deacon,  
NWGEL Church, Ranchi.

CC to:-

1. Bishop Dr. N. Minz, Ranchi.
2. Secretary, Mr. Dhiraj Lakra, Ranchi.
3. Asstt. Bishop, Rev. N. Lakra, Chairman,  
Jubilee Committee, Ranchi.



100 YEARS JUBILEE SAMITY  
G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR & ASSAM  
K. S. S. OFFICE, RANCHI.

A.20.04

Rev.C.S.R. Topno,  
Chairman,  
Jubilee Samity.

Shri A.P.Purty,  
Secretary,  
Jubilee Samity.

Ref: KSS/JS-95- 1.

Dated 20-7-1993.

From

Shri A.P.Purty,  
Secretary,  
150 Yrs.Jubilee Samity,  
K.S.S. Office,Ranchi.

To

All Anchal Adhyaksha.

Dear Sir,

Greetings in the name of our Lord Jesus Christ.

You are aware that the 150 Yrs. Jubilee Samity has been functioning for sometime. Some preliminary work has been done. The plan which was drawn by the Jubilee Samity for the celebration of the Jubilee was submitted to the K.S.S. in its last meeting. While generally approving the plan of the Samity the K.S.S. had decided that to meet the expenses of the Jubilee at the central level donations should be collected from each family of the entire Church, at the rate of Rs.20/- per family in the Rural area and Rs.100/- per family in the Urban area. The amounts indicated are the minimum that a family is expected to contribute. Those who are in a position to contribute more than the above amounts should be requested to contribute larger amounts also

In order that the collection of donation is done in a systematic manner the Jubilee Samity has got printed two sets of Receipts Books (containing 50 pages and 25 pages with duplicates so that carbon copies of the receipts remain in the Books).

We have done an exercise here on the basis of whatever data is available in the K.S.S.Office in the Census Forms submitted by you, as regards number of Mandalies/Parishes/Elakas and the number of families in those units. We have taken into account these figures while determining the number of Receipt Books that you would require in collecting donations. For the Mandalies having less than 25 families, the Receipt Books having 25 pages may be used, while for larger Mandalies 50 pages Receipt Books may be used.

Our calculation of your requirement of the Receipt Books may not be accurate and for some areas you may need more Receipts Books while doing the actual collection work. In that case you may ask for more Receipt Books from us. But you and the Elaka Chairman must first make sure that there is actual requirement of more Receipt Books.

You are requested to make over the Receipt Books as per the number indicated in the attached list to the Elaka Chairman concerned after obtaining receipt for the same from them. It will be advisable that you maintain a small register for this purpose where the number of Receipt Books serial number of the receipts should be mentioned. Similarly the Elaka Chairman also should maintain register in which they should make entry of the serial number of the receipts while supplying the Receipt Books to the



to the collectors and obtain receipts from them in the registers. In this way a particular collector can be made responsible for the collections made by him through the Receipt Books used by him and that he deposits the collected amount with the Elaka Chairman/Treasurer, who in turn will deposit the amount with the K.S.S. Treasurer. The Ranchi Headquarters Congregation collectors should deposit the collected amount direct to the K.S.S. Treasurer.

The Elaka Chairman/Treasurer or the collectors while depositing the collected amount must also deposit the used up Receipt Books with the K.S.S. Treasurer and obtain receipts for it from him.

As many of the Schemes/work are to be started immediately so that they may be completed before the actual celebrations begin it is very necessary that the collections are made and the amounts deposited with the K.S.S. Treasurer finally by 31st October, 1993. Part collections may be deposited even before that date, which will be much appreciated, as the Jubilee Samity has no funds of its own at present.

You are requested to distribute the Receipt Books among the Elaka Chairman quickly and also request that they in turn distribute the Receipt Books to the different Mandalies in their areas quickly. You should also explain the procedure of collection and deposit of the collected money to the Elaka Chairman and through them to the other persons engaged in this work.

An appeal directed to the entire Church has been got printed and is being supplied to you along with this letter in sufficient number so that 2 - 3 printed appeals may be distributed in each Mandali. This will facilitate in making each member of the Church aware about the important features of the Jubilee celebration and most importantly that individual participation of each Church member in the celebration is very essential. The appeal will be printed in the August, 1993 issue of 'GHARBANDHU' which the members may also see. The appeal may also be read out in the Churches during Sunday Services.

Sd/- A.P. Purty  
Secretary,  
150 Yrs. Jubilee Committee.

Copy forwarded to Pramukh Adhyaksh Rev. C.S.R. Topno for information.

Sd/- A.P. Purty.  
Secretary,  
150 Yrs. Jubilee Committee.

Copy forwarded to All Elaka Chairman/Pastor.in-charge Headquarters Congregation, Ranchi for information and necessary action. They are requested to obtain the Receipt Books as well as the pamphlets from their Anchal Adhyaksha and proceed with the work of explaining the programme of the Jubilee celebration and collect donations from all families in their jurisdiction through the usual collecting agencies. They should complete the collection of donations quickly and deposit the collected amount with the K.S.S. Treasurer before 31st OCTOBER, 1993.

*A.P. Purty*

( A.P. PURTY )  
SECRETARY,  
150 YRS. JUBILEE COMMITTEE

.....

Phone : 311314

Fax : 0091-651-30 09 79

NORTH WESTERN  
GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH  
MAIN ROAD, RANCHI - 834 001 INDIA

Bishop : Rev. Dr. Nirmal Minz  
Asstt. Bishop (Elect.) : Rev. N. Lakra  
Arch Deacon : Rev. B. K. Toppo



Secretary : Shri Dhiraj Lakra  
Treasurer : Shri S. K. Toppo

Ref. No. 624/93-94/F 169

Date 28/04/94

To,

✓ Rev. D. Hecker  
Director,  
Gossner Mission,  
Fenn STR 31,0-1190,  
Berlin, Germany.

el

2004

Subject:- 150 Years Jubilee Celebration.

Respected Rev. Hecker,

Yisusahay,

Let me extend my sincere and hearty Thanks to you and your staff for sending me the list of Gossner Missionaries in Chotanagpur, right from the first missionaries up to the last. Kindly convey my special christian greetings and thanks to Rev. Martin Seeberg who labouriously compiled the list of the Missionaries.

Once again I request you, if possible, to kindly send some of the Photos of the Missionaries which are available in your Library.

I also thank Mrs. U. Hecker who handed over me the list while she was in India on 26.4.94.

May God bless you and guide you to fulfill the Work of His Ministry.

With kind regards,

Yours in His Service,

Rev. B. K. Toppo  
28.4.94

CC to:-

1. Bishop Dr. N. Minz, Ranchi.
2. Secretary, Mr. D. Lakra, Ranchi.
3. Asstt. Bishop, Rev. N. Lakra,  
Chairman Jubilee Committee, Ranchi.

( Rev. B. K. Toppo )  
Arch Deacon,  
NWGEL Church, Ranchi.



NORTH WESTERN  
GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH  
MAIN ROAD, RANCHI-834 001 INDIA

Bishop : Rev. Dr. Nirmal Minz  
Arch Deacon : Rev. B. K. Toppo



Secretary : Shri B. Ekka  
Treasurer : Shri J. A. Tirkey

Ref. No. 789/92-93/F 169

Date 28/07/93

To,

✓ Rev. D. Hecker  
Director,  
Gossner Mission,  
Fenn STR, 31, 0-1190, Berlin,  
Germany.

12007

Subject:- 150 years Jubilee Celebration.

Dear Rev. Hecker,

Warm Greetings in the Precious name of our Lord Jesus Christ. This is my first letter to you after being elected as an Arch Deacon of the NW-GEL Church. Our Church has decided to celebrate the 150 years Jubilee in the year 1995. For the grand success of this Jubilee the Church has formed a committee, known as "Jubilee Committee of the NW-GEL Church". The Jubilee Committee has made me responsible to collect all the names and photos of the Missionaries. May I, therefore, request you to kindly take trouble and spare time and send the Names and photos of the Missionaries beginning from the four missionaries who were sent by Father Gossner and later sent up by the Gossner Mission in Germany. If possible, the following information will help us to publish the Jubilee souvenir - From which place did they come ?. When did they come ?. Where did they work ?. How long did they stay ?. For a few minutes I met your wife, Mrs. Hecker, in the Vestry room of Christ Church, Ranchi during the last summer and had told her to inform you verbally. She might have told you earlier about this matter.

Cont..... 2/-



// 2 //

I hope, even in the midst of your busy schedule, you - yourself or through some body, may kindly find out the Names and photos of the Missionaries and send them to me and oblige.

My Yisusahay to you Mrs.Hecker and the Children.

With kind regards,

Yours in Lord's Service,

Rev. B.K.Toppo  
28.7.93

( Rev. B.K.Toppo )  
Arch Deacon,  
N.W.G.E.L. Church, Ranchi.

CC to:-

1. Bishop, NWGEL Church.
2. Secretary, NWGEL Church.
3. Rev. N. Lakra, Chairman,  
Jubilee Committee.

Gossner Evangelical Lutheran Church In Chotanagpur And Assam.

150 Years Jubilee Committee

Church History Sub-Committee

*Feeling the same*

Members:-

1. Prof.Dr.P.C. Horo, Hazaribagh.
2. Rev.Dr.C.K.Paul Singh, Director, BEL.
3. Shree N.E. Horo (MLA).
4. Rev. Cyril Hmbrom, Lecturer.
5. Dr. Paulus Kerketta.
6. Mrs. Daisy Kongari
7. Prof. Suleman Bading, Joint Convener.
8. Rev.Dr.C.A. Bixel Tirkey, Convener.

Dear Friends,

Greetings in Jesus name. The Third meeting of the Church History Sub-Committee will meet at the premises of K.S.S. Office, GEL. Church, Ranchi as scheduled at 2:00 p.m. on Friday the 20th August 1993.

All the respected members are invited to attend the meeting without fail and make it a success. This meeting will make the final decision about the proposed contents of the book on Church History. Your presence is a must.

Time is scheduled at 2:00 p.m. according to the convenient of Prof.Dr.P.C. Horo, as he wishes to return Hazaribagh on the same day. Please be punctual and kindly co-operate in this great effort.

Thanks.

Yours Sincerely,

*C.A.B. Tirkey*  
(Rev.Dr.C.A.B. Tirkey) 17-83

Convener,

Church History Sub-Committee  
Gossner Theological College  
Ranchi 834 001.

Dated: 31.7.93

Agendas:-

1. Prayer - Prof.Dr.P.C. Horo
2. Minutes of the Second meeting
3. Matters arising out of the minutes
4. Discussion on the Proposed Contents
5. Distribution of Writers, inviting some others also,  
e.g. Rev.Jumul Topno, Rev.C.B.Minz etc.
6. Any other matters
7. Prayer - Mrs. Daisy Kongari.



CONTENTS

Part One: Seed Sowing and Harvesting

- Chapter One: Work of Gossner Mission in Chotanagpur (1836-1858)
- (a) Life History of Father Johanness Gossner Evangelista and the Establishment of Gossner Mission (Photo of Father Gossner)
  - (b) Pre-Missionary situation of Chotanagpur
  - (c) Brief history of the first four missionaries - Schatz, Janke, Brandt and Batsch (with their photoes)
  - (d) Brief History of the missionaries' work.
- Chapter Two: Decad of Expansion and division after so-called Sepoy Mutiny (1859-1869)
- Chapter Th ree: (a) Period of steady growth, and the arrival of R.C. Church and  
(b) Consolidation of the Mission (1870-1919)
- Chapter Four: History of Autonomous Gossner Church (1919-1947)
- Chapter Five: Autounomous Church after Indian Independence (1948- 1977)
- (a) Constitutional crisis in the church
  - (b) Fianancial crisis.
- Chapter Six: Church at present time (January 1977 till date)

Part Two: Garnering:

- Chapter One: Brief life history of Gossner Mission Directors (with their photoes)
- Chapter Two: Brief history of different individual Anchals.
- Chapter Three: Brief history of Church Presidents/Pramukh Adhyakshes (with their photoes)
- Chapter Four: History of Headquartersr Congregation, Ranchi.
- Chapter Five: History of Secualr, Theological and Bibilcal (Pracharak & Tabita Training centres) Education.
- Chapter Six: History of Evangelistic enterprises of the autonomous Church.
- Chapter Seven: Church's national and international relation, and Ecumenical partnership (BCC., NCCI., FELCI., UELCI., SCM., YMCA., LWF., WCC.)
- Chapter Eight: Church Particiaptiom in Nation building and socio-developmental activities.
- Chapter Nine: Brief history of children's, youth's, women(s and laymen's role and participation in the life and work of the church.

\* Note: Please come along with its Hindi Translation.



150 YEARS JUBILEE SAMITY  
G.E.L. CHURCH IN CHOTANAGPUR & ASSAM.  
K.S.S. OFFICE RANCHI

-----0000-----

Rev.C.S.R.Topno,  
Chairman.

Shri A.P.Purty,  
Secretary,

Ref:- KSS/JS-95-31.

Ranchi, the 10th August '93.

From

Shri A.P.Purty,  
Secretary,  
150 Yrs. Jubilee Samity.  
K.S.S. Office, Ranchi.

To

Rev.  
Anchal Adhyaksha,  
Anchal.

Sub:-Preparation of list of programmes for the  
150 Yrs.Jubilee of the G.E.L.Church.

Dear Sir,

Greetings in the name of our Lord Jesus Christ.

Earlier I had addressed you a letter where the procedure of collection of donation for the Jubilee celebrations was explained. Along with the letter required number of Receipt Books as well as copies of Appeal in which the outline has been given of the Jubilee celebrations at different levels from Mandli to Anchal Headquarters and then the final programme at Ranchi.

The Congregations at different levels are free to frame and organise their own programmes only indications of a few programmes have been given in the Appeal. What has impelled me to write this letter is that the programme should be scheduled in such a manner that the date fixed for a Congregation may not, as far as practicable, collide with the date of programme of another congregation at least within a Parish, if not in the Elaka. If the dates for the programmes are fixed keeping in view the entire Anchal it will be all the more better. If this is done the programmes of one Congregation can be attended by members of other Congregations also. and the Church officials of different levels may also attend the celebration at as many places as possible. The Schedule of the programmes for the entire Anchal area have, therefore, to be made in a meticulous way. We have got one year in which to spread out the programmes, so it may not be difficult to set the programmes in such a way that the dates fixed for different places would not collide. You may think of setting apart different months for different Ilakas and the Ilaka Chairman may indicate to the Parish/Mandli the week or dates on which they should have their programmes. It will be better if you first discuss these things with the Ilaka Chairmen who will thereafter discuss it with the Parish/Mandali functionaries on the basis of the decision taken at the Anchal level. This discussion at the Ilaka level should be directed to fixing up datewise programmes for the three levels i.e. Mandli, Parish and Ilaka. The programmes/celebrations at each of these levels may extend to 4 - 5 days or even a week, and different types of programmes may be gone through on different days. We have no intention of binding you down to any particular type of programme, and in the Appeal issued only indication of the programmes that may be adopted has been given. You may go beyond these proposed programmes and include other programmes as per popular demand of the area.

The programmes decided upon for each Mandli should be listed datewise . Similarly it should be done for each Parish Hdqrs. Then a consolidated list of the programmes of all the Mandli/Parish Hdqr. should be prepared. This consolidated list should contain the programmes proposed for the Ilaka, Hdqrs. also. Thereafter each Ilaka should send the consolidated list of the programme of the Ilaka to the Anchal Adhyaksha. These lists of programmes of all the Ilakas of the Anchal should be forwarded by the Anchal Adhyaksha along with the proposed programmes of Anchal Hdqrs. to the Secretary, 150 Yesrs Jubilee Samity, G.M.L.Church, K.S.S.Office, Ranchi 31st December, 1993, so that it can be publicised in the entire Church through the Gharbandhu and other means. The early finalisation of the programmes of each level and communicating the same to the Jubilee Samity at Ranchi is therefore very necessary.

In this connection I may also mention that though most most of the foreign friends may participate in the final programme at Ranchi it is very likely that groups of foreign friends may come earlier to participate in the programmes in the entire inter er areas. The places where the early Missioneries worked and some of them died has special significance, and whatever relics of these missioneries have remained till now, should be preserved. The graves of the Missioneries who died should also be maintained properly. Similarly the graves of the first baptised Oraon, Munda, Kharia and other communities should also be maintained properly and necessary data regarding them should be etched on stone or cement.

In the Pamphlet which has been circulated the due date by which the list of programmes of the entire Anchal should be sent to us by 31st March, 1994, but it has been felt that after that date we will have very short time left for publicising the programmes in the entire Church, and also through this letter I am requesting you to send the list of the programmes by 31st December, 1993 at the latest.

Yours Sincerely,

CHH 8-93  
( A.P. Purty )  
Secretary.

Copy forwarded to all Ilaka Chairmen for information and necessary action as requested in the letter.

PROFORMA FOR PROPOSED PROGRAMMES.

Name of Anchal-

Name of Ilaka-

Name of Mandli/Parish-

Sl.No. | Date | Name of Programme | R E M A R K S.

- 1.
- 2.
- 3.

Emory College,  
Kennesaw  
Sept 10, '93

Dear Rev (Mr) W. Hecken  
and Rev. D. Hecken (Director):

Greetings!

Hope everything is well. The  
committee members have asked  
me to request you to kindly  
send the detailed information  
of four first missionaries,  
with their photos, to complete  
the History Book on the G.E.C.  
Church in Chotanagpur  
and Assam.

Please find a copy of the minutes  
written detailed about the  
allotment of workers for you  
kind information and  
necessary action.

With regards,

Bickel

10.9.93



CHURCH HISTORY SUB-COMMITTEE MEETING 20.8.1993.

Church History Sub-committee held its meeting on 20.8.1993 at 2 p.m. in the K.S.S. chapel. The meeting started with prayer led by Prof.Dr.P.C.Horo. Following members attended the meeting:

1. Rev.Dr.C.A.B. Tirkey - Convener
2. Prof.Dr. P.C. Horo - member
3. Rev.Dr.C.K.P. Singh - ,,
4. Rev. C. Hembrom - ,,
5. Prof. S. Bading - Joint Convener.

Proceedings of the meeting

Item No. 1: Minutes of the previous meeting held on 24.7.93 was read and confirmed.

Item No. 2: Matters from the Minutes

Amendments: i) In Item No.2, the name 'Rev.D.Hecker' should be read instead of 'Rev.Hecker'.

ii) In Item No.I of the minutes of the meeting dated 9.7.93, these words, " and Prof.S.Bading as Joint Convener" should be added after the sentence "The Jubilee Committee, therefore elected him in her place as Convener"

iii) In Appendix Part - I Chapter I the title should be "Work of Gossner Mission In Chotanagpur And Assam (1845-1858)" and not "Work of Gossner Mission In Chotangapur 1836-1858)".

The reason for this change, the members felt, was that the omission of the word 'And Assam' will hurt the sentiments of the members of the Church in Assam. Again, the name of the Church itself is 'G.E.L. Church In Chotanagpur and Assam'.

Further, the period from 1836 to 1844 may have historical relevance for Ganga Mission but not for Gossner Mission In Chotanagpur And Assam. But this period and Ganga Mission should get due place particularly in sub-title under 'd' of this chapter (Chapter I) and wherever necessary.

Item No. 3: Allotments of Chapters to writers

Keeping in mind the special knowledge of the subject and source materials within their easy reach, the committee decided to allot history chapters to be written as stated in the Appendix to persons as follows:-

"History of the G.E.L.Church In Chotanagpur And Assam"

P A R T - I

Chapter I: Work of Gossner Mission in Chotangpur and Assam (1945-1958)

Chapter I (d): Brief history of Missionaries' work &

Chapter II: Decade of Expansion and division after the so-called Sepoy Mutiny (1859-1869)

----- Prof.Dr.P.C. Horo.

Chapter I (a): Life History of Father Johanness Gossner Evangelista .

& (c): Brief history of first four missionaries. . . . .

----- Rev.C. Hembrom.

Chapter I++:(h): Pre-missionary situation in Chotanagpur--Prof.S.Badi

Chapter III(a): Period of steady growth and arrival of R.C.Church and

(b): Consolidation of the mission - - Rev.P.D.Burh.

Chapter IV: History of Autonomous Gossner Church (1919-1947)--Mr.I Horo & Prof. S. Bading.

Chapter V: Autonomous Church after Indian Independence (1948-1977)

(a) Constitutional crisis in the church,

(b) Financial crisis. . . . . Prof.S.Bading &  
Mr.N.E.Horo

Chapter VI: Church at present Time(Jan. 1977- till date)

. . . . . Rev.Dr.C.K.P.Singh

P A R T II G A R N E R I N G

Chapter I: Brief Life history of Gossner Mission Directors (with their photos) . . . Mrs.D.Kongari

Chapter II: Brief History of different individual Anchals: Present Anchal Adhyakshes.

Chapter III: Brief History of Church Presidents/Pramukh Adhyakshes (with their photos) . . Rev.Dr.M.Bage

Chapter IV: History of Headquarters Cngregation, Ranchi. .  
. . . Rev.Dr.C.A.B. Tirkey

Chapter V: (a) History of Secular Education - Mr.M.P. Kongari

(b) History of Theological and Biblical (Pracharak & Tabita Training Centres) Education. . .  
. . . Rev.Dr.R. Dang

Chapter VI: History of Evangelistic Enterprises of the Autonomous Church (G.E.L.Church) . .Rev.Dr.C.K.P. Singh

Chapter VII: Church's national and International relation and Ecumenical Partnership. . Rev.Albert Minz

Chapter VIII: Church's Partieipation in nation building and Socio-<sup>u</sup>developmental activities . . Rev.Dr.M.Bage

Chapter IX: (a) Brief History of children's and Youth 's role and participation in the life and work of the church...  
. . . Mr.R.K.Topno(Cand) Youth Secretary,GELChurch

(b) Women's and Laymen's role and participation in the life and work of the church. . Miss Helen Bhengra  
President, Mahila Samiti.

Item No.4: Resolved that the Convener should write a letter to Rev.Dr.R.Dang, Principal, Theological College, Librarian Rev.Y.Soreng and Mr.K.Horo (Typist) expressing thanks and gratitude for typing outthe Minutes of Church History Sub-Committee.

Item No.5: Resolved that name of all the missionaries right from the beginning till date with duration of work be appended in the history book.

The Sub-Committee resolved to meet again on 15.9.93 in the K.S.S. premises at 2 p.m.

~~XXXXXXXXXXXXXXXXXXXX~~  
prayer led by Rev.C.Heabrom.

The meeting closed with

Sd/ *S. Bading*

21.8.93

*C. AB. Widgey*  
*convener*  
*2.9.93*



## Workshop

(zum Jubiläum 1995)

### Vorarbeit

#### Ansprechpartner:

Anchal Adhyakshs  
Ilaka Chairmen  
Dr. Bage  
Dr. Singh  
C.S.R. Topno  
Leute aus allen Initiativen

Es gilt herauszufinden:

Was sind die Schwerpunkte auf dem sozialen Sektor?

Welche sozialen Probleme müssen in der Gossner Kirche angepackt werden?

Wo gibt es schon Beispiele, die weitergeführt und weiterverbreitet werden können?

Zum Workshop möglichst viele einladen aus der ganzen Kirche. Alle, die irgend etwas mit einer sozialen Initiative zu tun haben.

#### Ablauf:

Zu Beginn ein Mensch mit Visionen?  
Charismatiker?  
Prophet?  
(von der GELC, von anderen indischen Kirchen,  
von der Oekumene GM, Deutschland?)

zu der Frage: Mission today  
Auftrag der Gemeinde für die Welt  
The holy spirit empowers for action

Danach Darstellung der verschiedenen Ebenen sozialen Engagements, dargestellt von Mitgliedern der Gossner Kirche, die in den verschiedenen Bereichen arbeiten:

health education  
rural development  
income generating education  
community organizing

Danach Gruppen zu den einzelnen Bereichen, möglichst mit einem Spezialisten für die Themen aus der "3. Welt".

Drafting committee, um Ergebnisse aus den Gruppen zusammenzubündeln --- Ergebnispapier.



Plenum: Ergebnispapier wird diskutiert, ein Plan ausgearbeitet, wie in der Gesamtkirche das soziale Engagement auf eine breitere Basis gestellt werden könnte.

Schwerpunktsetzung?

Einzelne Projekte?

Ziel des workshops (könnte sein):

Allgemein:

In den Gemeinden Bewußtsein für die soziale Aufgabe wecken.

In den Anchals eine Gruppe finden, die soziale Aktivitäten koordiniert.

Trainingsprogramm und Fortbildung, entweder durch ein URM-Trainingszentrum für Initiativen (evtl. in Khuntitoli?) oder/und durch die Missionsabteilung, durch New life light centre, Vikar Maitri und UMCA.

Zum Ablauf:

Es ist wichtig, daß am Anfang eine Präsentation passiert, die die Teilnehmer begeistert und hoffnungsvoll macht für das Gelingen eines solchen Unterfangens (eventuell mit jemanden, der ein solches gelungenes Programm darstellen kann).

Bei der Darstellung von verschiedenen Ebenen muß deutlich werden, auf welchem Gebiet der Schwerpunkt liegen soll.

Repräsentanten, die solche Programme bereits durchführen, sollten inhaltliche Hilfen geben.

1

—

2

—

3

—

4

—

5

—

6

—

7

—

8

—

9

—

Seit  
12.-21.  
Okt.

0

y



**Trennblatt**  
hellchamois mit  
Organisationsdruck

56/6194

Gossner  
Mission

GELC Human Resources and Development Centre

GEL Church, Ranchi 834001, Bihar, India

Seminar on : 'Social Responsibility of the Church Today'

Oct, 16-21, 1995; at HRDC

### Recommendations

During the Seminar on 'Social Responsibility of the Church Today' Oct, 16-21,95, through Bible Studies, subjects presentations, discussions in plenaries and groups the participants have been benefitted; Participants have seen and experienced the importance need and urgency of various responsibilities of the Church Today. They may be summerised as two aspects of the Church's responsibilities, viz 'Spiritual' and 'Social'. The participants of this Seminar therefore recommends the following points to the Church/Church units/and Institutions:

1. That There must be programmes/Seminars on 'awareness building' of these two aspects of Church's responsibilities through out the whole Church/Church Units and Institutions.
2. That in Church/Church Units/Institutions(Academic and Non-Academic) administrative Committees GB and MC be made responsible to include such curriculum be included in all academic Institutions: G.T.C, Gossner College, Gossner High School, Bethesada High School, BBD College, Bethesada Teachers Training College, High Schools etc.
3. That as continuation of this Seminar and in addition to such Seminars 'Leadership Training' for Administrative members/decision making Units' members be conducted, specially on social Responsibility of the Church centrally, regionally as well as locally.
4. That Training for 'Organisers' be conducted from grass root level to top levels.
5. That Training for 'Local Activities' of programmes be arranged regionally and Locally.
6. In all such Training programmes Exposure and Exchange of Experiences of plans and projects item be included.
7. That ecumenical(participation) efforts and exchange of Experiences be strengthened in and through such Training Programmes and Seminars.
8. That by and for such programmes/projects means and methods be worked out to strengthen and deeper the Partnership between the Church here and abroad.
9. That there always a feed back of the 'Action Plans',- 'Programmes' in various places/Units,
10. That efforts be made to continue to feed back and to exchange experiences of future or further Action plans by the Participants of this Seminar.





# Dawson UK Ltd., Book Division

Crane Close, Denington Rd, Wellingborough, Northants NN8 2QG, England  
Tel. 01933 274444 - Fax 01933 225993  
Registered in England No. 1285678  
Registered Office: Cannon House, Folkestone, Kent CT19 5EE

Document INVOICE B886085  
Date 7 July 1995

## INVOICE TO

GOSSNER MISSION  
  
FENNSTRASSE 31  
D-12439 BERLIN  
GERMANY

## DELIVER TO

DR P. SINGH  
KSS  
G.E.L. CHURCH COMPOUND  
RANDHI 834001  
INDIA

UK Bankers  
Barclays Bank Business Centre  
66 High Street, Ashford, Kent TN24 8TL  
Sort Code 20-02-62  
Account No. 20318191  
Account Name Dawson UK Ltd  
Post Office Giro No: 508 0053  
VAT Registration No. GB 201 1182 38

Account No. 28107.001-01

Commodity code: 49019900

Page 1

| QTY                                                      | ITEM                                                                                                                     | UNIT PRICE | DISCOUNT | COST  | VAT | VAT VALUE |
|----------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------|----------|-------|-----|-----------|
| 1                                                        | Order Ref: Date: 17/05/95<br><br>TRAINING FOR TRANSFORMATION<br>3 vols<br>Dawson ref: 486438-001<br><br>ISBN: 0869222562 | 15.51      |          | 15.51 |     |           |
| <i>Rechnungen wurden bereits mit Kreditkarte bezahlt</i> |                                                                                                                          |            |          |       |     |           |
| <i>Bitte überweisen Sie die Rechnung u.be</i>            |                                                                                                                          |            |          |       |     |           |

## Remarks

81  
WEIGHT 1.1KG

Gossner  
Mission

## VAT CODE

PAYMENT DUE BY 05/09/95.

SERVICE COST

FREIGHT COST Registered Airmail Post

TOTAL COST

TOTAL VAT

AMOUNT DUE

15.51

14.96

£ 30.47

## Gossner Mission

Fennstr. 31, D-12439 Berlin - Tel. 0049-30- 631 78 09 / Fax: 636 11 98

### **Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church and Gossner Mission: "Social Responsibility of the Church Today" from 17th - 21st October at Ranchi / Bihar - India**

The G.E. L. Church in Chotanagpur and Assam and Gossner Mission Berlin are commemorating 1995 the 150th anniversary of the arrival of the first five missionaries at Ranchi / Chotanagpur sent by Johannes Evangelista Gossner. The G.E.L. Church in Chotanagpur and Assam, which came out of this event as a predominantly Adivasi church, will be celebrating its 150 Years' Jubilee from October 30th to the 2nd November 1995 at Ranchi. In this connection the G.E.L. Church and Gossner Mission at Berlin thought it useful, not only to have solemn celebrations, but to use this occasion for a seminar to build awareness for the present social and political problems in the church, since the highly sensitivetribeal area of Chotanagpur is determined today by the highest concentration of heavy industry in India. Industrialization and urbanization have created big problems especially for the Adivasi population, which had rather to bear the disadvantages of this modern development than could enjoy the advantages .

On the other hand this church is still mainly a rural church, which has not taken up the challenges of the urban and industrial development, but is also lacking a systematic study and training in its own social responsibility in the villages. So there is a need for more awareness of the problems both for the rural and the urban situation. This seminar tries to make a new start to bring together parish members, people responsible in the church on higher levels and members of social action groups in Chotanagpur with ecumenical resource persons who have experience in community organizing outside Chotanagpur in India and abroad. The outside participants will be from Germany, Nepal and Zimbabwe. The total number of participants will be about 60 - 80 persons.

#### **Programme of the Seminar**

- 12th - 15th Oct.:** **Exposure programme**  
This is meant for people from outside, who are not familiar with the situation in India and Chotanagpur.
- 16th October:** **Arrival of the participants**
- 17th - 19th Oct.:** **Seminar on: "Social Responsibility of the Church today"**  
The structure of each day will be:
- **Bible Study**
  - **Lectures on the following topics:**
    - \* Political and social situation of Chotanagpur
    - \* New Economic Developments (World Bank, IMF, etc.) and its consequences for the Indian Society
    - \* The answer of the church to these challenges.
  - **Group work** on the lectures and exchange of own experiences.
  - **Workshops** about methods of communication like the use of drama, music, dances, songs and other media.
  - **Social Gettogether** in the evenings.
- 20th Oct.** **Feed back, Evaluation and further Planning. - Closing Service.**
- 21st Oct.:** **Departure.**

A detailed programme will be available in September 1995 and sent to the participants.

#### **The persons responsible for the planning in India are:**

Dr. Paul Singh, Director, Mission Department of G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Ranchi 834001.  
Dr. Nirmal Minz, Bishop, North-West G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Main Road, Ranchi 834 001.

#### **In Germany, for further information, please contact:**

Rev. Ursula Hecker, India Desk; Rev. Bernd Krause, Social and Community Services, Gossner Mission .

Berlin, 20th July 1995

Rev. Dieter Hecker  
Director

Rev. Ursula Hecker  
India Desk

Rev. Bernd Krause  
Social and Community Services

# SEMINAR ON : 'SOCIAL RESPONSIBILITY OF THE CHURCH TODAY'

(Under : Church Mission/Ministry and Development)

SPONSORED BY GOSSNER MISSION, BERLIN AND G.E.L. CHURCH THROUGH BD OF EVANGELISM AND LITERATURE  
AT GELC HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT CENTRE (BEL), GEL CHURCH, RANCHI OCT, 16-21, 1995

| Day/Date | TENTATIVE PROGRAMME SCHEDULE                                                                                             |                                                             |                                         |                                                               |                                                                         | 9.00-10.00PM    |
|----------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------|-----------------------------------------|---------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------|-----------------|
|          | 8.00-9.45AM                                                                                                              | 10.00-11.00AM                                               | 11.30-1.00PM                            | 2.30-3.30PM                                                   | 3.30-4.30PM                                                             |                 |
| 16.10.95 | -----                                                                                                                    | -----                                                       | -----                                   | ARRIVALS AND REGISTRATION                                     | Get Together<br>Introductions<br>Discussions<br>Exchange of Experiences | Cul<br>Proc     |
| 17.10.95 | DEVOTION<br>Welcome,<br>Bible Study<br>(Pranukh Adhy.)                                                                   | Introductory<br>'Key Note<br>Address'<br>SINH               | Self Introduc-<br>tion Discussi-<br>ons | Social-Poli-<br>tical situa-<br>tion in the<br>region Bar     | Sharing of<br>Experiences<br>'IRDP                                      |                 |
| 18.10.95 | DEVOTION<br>Bible Study<br>NINAN<br>Eph. 4:11-16                                                                         | World/Indian<br>Economy and<br>its Impact<br>in Church life | Discussions<br>in groups                | Ecology & En-<br>vironment-<br>their impact<br>in Church life | Sharing of<br>Exp. UIM                                                  | Plenary         |
| 19.10.95 | DEVOTION<br>Bible Study<br>NINAN<br>Lk 4:18ff                                                                            | RESPONSE of<br>the Church<br>NINAN                          | Discussions<br>in groups                | Religious-Soc-<br>ial Scenario<br>in the Region               | Sharing of Ex.Discussions<br>CMD/THUM<br>Exchange of<br>Experiences     | Plenary         |
| 20.10.95 | DEVOTION<br>Bible Study<br>SINH<br>Mk. 9:24                                                                              | Plenary<br>Reports etc,                                     | Discussions<br>For 'Action<br>plans'    | Recommendations<br>for Follow up/<br>Action Plans             | Evaluations<br>Media Commu-                                             | Closing Service |
| 21.10.95 | Mealtimes, etc,<br>7.30-8.00AM<br>11.00 Coffee break<br>1.00-2.00PM Lunch & rest<br>4.30PM Tea Break<br>8-9.00 PM Supper |                                                             |                                         |                                                               |                                                                         |                 |

10.00PM-5.00AM Rest Lights Off  
15 minutes of 'Response' by appointed person may follow to some presentation  
as Supplementary  
Bible Studies, LK 4:18ff §-Isa. 61:1-3, Eph. 4:11-16; MK 9:2-29



SEMINAR on: Christian/Church Ministry and Development (social involvement)

I. Time : October 1995 (During Puja Holidays)

II Venue: HRDC/ GELC, Ranchi

III Participants: 8 participants from each Anchal and Hd Qtrs Cong.

as follows : 1. Decision making rpre 2  
(Samiti Memb.)

2. Woman Work officers 2

3. Youth Work officers 2 (1+1 Male-Fem.)

4. Children Work leaders 2 2  
(Sunday School etc.)

= 48 Members participants

10 ecumenical participants from neighbouring churches

12 resource persons (mixed: f/m, local/ecum. etc.)

Total 70 participants

IV Expenses:

a) Fooding @Rs 40/- for 6 days of 70 participants Rs 16800.0

b) T.A. @Rs 300/- (average) for 70 participants 21000.0

c) Accomodation 25/- (average) 50 parti. (6 days) 7500.0

d) Miscellaneous, Contig. 700.0

Total Rs 46000.0

"25% may be collected locally by way of registration fees.

Following subjects and sub-subjects may be dealt with during the seminar by way of lectures and response, discussion groups, etc:

Main Theme: Christian Ministry and Development (Today)

1 Bible Study : Isa. 61:1-3, Lk 4:16ff, Titus 1-3 Chps., etc

2 Key Note Address: Re-Valuation of our Christian Ministry and Development in and through our Church(es)

3. What is Christian Ministry in Christ's Way (Preaching, Teaching and Healing) Today? *Holistic approach!*

4. What is Development? A Christian Understanding/Approach?

5. What is "Today"? Changing and Worsening Situations in Church and Society - in ref. to Christian faith, Human rights, Environmental Problems, ecology, etc.

6. Implications of World Bank, International Monetary Fund, GATT, etc.

7. Role/Implications of NGO's in Church and Society ✓
8. Identification of Situations of different Issues of Children, Youth, Man/Woman(wife/husband)\_ Parenthood, Seniors, etc.:
  - a) Children: Education, Christian Education, Health, child labour, begging, rags collecting, pickpocketing, various form of other exploitations-
  - b) Youth : Education, professional Training, Employment, Drug Edict alkohlism, marriage Problems, Jouvenile diseases, etc
  - c) Man/Woman: Merrital life, both working Partners, Parental respo responsibilities, Equal rights, etc.
  - d) Seniors :Untimely/unprepared retirments, Loneliness, obstacle in independent growth of the Youngsters, etc.
9. Analysis of the Situations(as shownabove etc)in one's own family church/Congregation and society of the Participants'
10. Action Plans for further/better Christian Ministry and Development to be acted upon in given situations as analysed of the family, church and society.
11. Propasal/Point of Follow up programmes seem to be a MUST Dec1995Feb.1996 with some financial assistance for the lower level Work shops in Anchal/Ilaka.  
Expected results can be evaluated only after/during such follow up programmes.

C. K. P. S. Sh  
916894

Questions of Industrial Centres

Question of a similar workshop for the Theol. College and  
Ranchi people.

Ziel des Seminars!

- Bewusstere Beteiligung an Gemeinschafts-  
prozessen und -Platzen  
(community organising als ~~advers~~  
story telling als Bewusstseins- u. Problem + Lösung)  
Erfahrung der Traditionen und eigener Projekte als resource)
- Mission heute als Aktion für Gerechtigkeit  
(Widerstandsförderung - Einkünder, Ränge  
sozialer Dienst für das Zusammenleben)  
(Globe und weltweite Aktion)

Schritte:

- Bewusstseinsbildung durch Erzählen  
eigener Geschichte (siehe unten handeln)
- Beratung von Initiativen und  
~~Organisationen~~ Gemeinschaften
- Erfahrungsaustausch (der z.B.  
über HRDC weitergeführt und systema-  
tisiert werden soll)
- Anlegen eines Programms in der lokalen



Post giro Berlin West  
BLZ 100 100 10  
Konto 520 50-100  
EDG Kiel (Fil. Berlin)  
BLZ 100 602 37  
Konto 139 300

Gossner Mission Fennstraße 31 D-1190 Berlin

Telefon 003 72 / 635 11 98  
Telefax 003 72 / 635 11 98

Gossner Mission

Gossner Mission

- 5 Seiten -

okay

(D. Feder  
12.9.)

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To Mr.  
Rajan Singh  
c/o NCCI - UIRM  
Industrial Service Institute  
Residency Road  
Opp. Coffee House, Sadar

Nagpur 440001

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

FAX 0091 712 532 802

September 11, 1995

Dear Mr. Singh,

First of all we are very grateful that you are willing to help us in the Seminar of the GELC. We think it will be a good challenge for the people in Chotanagpur/Bihar to learn about the situation of URM work and groups of India.

As you may know, the Gossner Church is celebrating 150th anniversary and is quite established as a church, even if there are a lot of difficulties, fractions, short comings also. And they have to suffer quite a lot through the more and more growing fundamentalistic Hindu society. The Gossner Church is a mainly Adivasi Church, that means not coming from the Hindu but from an animistic background. These people had been oppressed for centuries and now they experience a new oppression through the new-strongly overwhelming economic system. But somehow the traditional social pattern was still working in the past, now it is getting more and more deteriorated and undermined through the modern development.

The church has no answer, but is realizing that preaching praying, evangelization is not the only and always appropriate answer to the problems. So slowly there is a growing awareness, but also a fearful uncertainty. This seminar, held in the context of the 150th anniversary, should initiate a process of conscientization for social problems and should give courage to start. I am afraid that the conception and the outlines of the seminar doesn't stand the test of the so called community organizing concept. It is drawn in the pattern of how the Church is used to do the work - with some openness. Therefore I find it extremely necessary and helpful to have participants and people who have another experience, who come from outside and can indicate another way. And - I think this is a very important factor - to give hope. I for myself I am not a community

organizer and I am not sure that I have described correctly what the outcome of the seminar should be. It might be a very small outcome, but I think everything is worth to try to help people to look for their own dignity.

We would be very happy if you could join the Seminar which will be held from the 17th-21st of October. The Seminar is financed through a German agency, so there will be no expenses for you. May be it would be also helpful if you could contact the Indian counterpart directly, it is:

Dr. Paul Singh  
KSS Office  
GEL Church Compound  
Ranchi 834 001  
India

Tel. 0091-651-311513, Fax: 0091-651-300716

It would be very nice if you could give us an outlook about recent economical developments in India and about the related consequences for the day to day live of ordinary people and the Indian society. We would also appreciate if we could have an opportunity for evaluating the Seminar and for further cooperation.

I am looking forward in meeting you in India. With many greetings, also from Bernd Krause,

Yours sincerely,



Ursula Hecker  
Secretary for Asia



**SEMINAR on: Christian/Church Ministry and Development (social involvement)**

**I. Time :** October 1995 (During Puja Holidays)

**II Venue:** HRDC/ GELC, Ranchi

**III Participants:** 8 participants from each Anchal and Hd Qtrs Cong.

as follows : 1. Decision making rpre 2  
(Samiti Memb.)

2. Woman Work officers 2

3. Youth Work officers 2 (1+1 Male-Fem.)

4. Children Work leaders 2 2  
(Sunday School etc.)

= 48 Members participants

10 ecumenical participants from neighbouring churches

12 resource persons (mixed: f/m, local/ecum. etc.)

**Total 70 participants**

**IV Expenses:**

|                                                   |           |
|---------------------------------------------------|-----------|
| a) Fooding @Rs 40/- for 6 days of 70 participants | Rs 16800. |
| b) T.A. @Rs 300/- (average) for 70 participants   | 21000.    |
| c) Accomodation 25/- (average) 50 parti. (6 days) | 7500.     |
| d) Miscellaneous, Contig.                         | 700.      |

**Total Rs 46000.**

\*25% may be collected locally by way of registration fees.

Following subjects and sub-subjects may be dealt with during the seminar by way of lectures and response, discussion groups, etc:

**Main Theme:** Christian Ministry and Development (Today)

1 Bible Study : Isa. 61:1-3, Lk 4:16ff, Titus 1-3 Chps., etc

2 Key Note Address: Re-Valuation of our Christian Ministry and Development ~~####~~ in and through our Church(es)

3. What is Christian Ministry in Christ's Way (Preaching, Teaching and Healing) Today? : *Holistic approach!*

4. What is Development? A Christian Understanding/Approach?

5. What is "Today"? Changing and Worsening Situations in Church and Society - in ref. to Christian faith, Human rights, Environmental Problems, ecology, etc.

6. Implications of World Bank, International Monetary Fund, GATT, etc.

7. Role/Implications of NGO's in Church and Society ✓

8. Identification of Situations of different Issues of Children, Youth  
Man/Woman(wife/husband)\_ Parenthood, Seniors, etc.:

- a) Children: Education, Christian Education, Health, child labour, begging, rags collecting, pickpocketing, various forms of other exploitations-
- b) Youth : Education, professional Training, Employment, Drug Abuse, alcoholism, marriage Problems, Juvenile diseases, etc
- c) Man/Woman: Marital life, both working Partners, Parental responsibilities, Equal rights, etc.
- d) Seniors : Untimely/unprepared retirements, Loneliness, obstacles in independent growth of the Youngsters, etc.

9. Analysis of the Situations (as shown above etc) in one's own family church/Congregation and society of the Participants

10. Action Plans for further/better Christian Ministry and Development to be acted upon in given situations as analysed of the family, church and society.

11. Proposal/Point of Follow up programmes seem to be a MUST  
Dec 1995 Feb. 1996 with some financial assistance for the lower level  
Work shops in Anchal/Ilaka.

Expected results can be evaluated only after/during such follow up programmes.

C. K. P. Sh  
916894

Questions of Industrial Centres

Question of a similar workshop for the Theol. College and  
Ranchi people.

## Gossner Mission

Fennstr. 31, D-12439 Berlin - Tel. 0049-30- 631 78 09 / Fax: 636 11 98

### **Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church and Gossner Mission: "Social Responsibility of the Church Today" from 17th - 21st October at Ranchi / Bihar - India**

The G.E. L. Church in Chotanagpur and Assam and Gossner Mission Berlin are commemorating 1995 the 150th anniversary of the arrival of the first five missionaries at Ranchi / Chotanagpur sent by Johannes Evangelista Gossner. The G.E.L. Church in Chotanagpur and Assam, which came out of this event as a predominantly Adivasi church, will be celebrating its 150 Years' Jubilee from October 30th to the 2nd November 1995 at Ranchi. In this connection the G.E.L. Church and Gossner Mission at Berlin thought it useful, not only to have solemn celebrations, but to use this occasion for a seminar to build awareness for the present social and political problems in the church, since the highly sensitivetribeal area of Chotanagpur is determined today by the highest concentration of heavy industry in India. Industrialization and urbanization have created big problems especially for the Adivasi population, which had rather to bear the disadvantages of this modern development than could enjoy the advantages.

On the other hand this church is still mainly a rural church, which has not taken up the challenges of the urban and industrial development, but is also lacking a systematic study and training in its own social responsibility in the villages. So there is a need for more awareness of the problems both for the rural and the urban situation. This seminar tries to make a new start to bring together parish members, people responsible in the church on higher levels and members of social action groups in Chotanagpur with ecumenical resource persons who have experience in community organizing outside Chotanagpur in India and abroad. The outside participants will be from Germany, Nepal and Zimbabwe. The total number of participants will be about 60 - 80 persons.

#### **Programme of the Seminar**

- 12th - 15th Oct.:** **Exposure programme**  
This is meant for people from outside, who are not familiar with the situation in India and Chotanagpur.
- 16th October:** **Arrival of the participants**
- 17th - 19th Oct.:** **Seminar on: "Social Responsibility of the Church today"**  
The structure of each day will be:
- **Bible Study**
  - **Lectures on the following topics:**
    - \* Political and social situation of Chotanagpur
    - \* New Economic Developments (World Bank, IMF, etc.) and its consequences for the Indian Society
    - \* The answer of the church to these challenges.
  - **Group work** on the lectures and exchange of own experiences.
  - **Workshops** about methods of communication like the use of drama, music, dances, songs and other media.
  - **Social Gettogether** in the evenings.
- 20th Oct.** **Feed back, Evaluation and further Planning. - Closing Service.**
- 21st Oct.:** **Departure.**

A detailed programme will be available in September 1995 and sent to the participants.

#### **The persons responsible for the planning in India are:**

Dr. Paul Singh, Director, Mission Department of G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Ranchi 834001.  
Dr. Nirmal Minz, Bishop, North-West G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Main Road, Ranchi 834 001.

#### **In Germany, for further information, please contact:**

Rev. Ursula Hecker, India Desk; Rev. Bernd Krause, Social and Community Services, Gossner Mission.

Berlin, 20th July 1995

Rev. Dieter Hecker  
Director

Rev. Ursula Hecker  
India Desk

Rev. Bernd Krause  
Social and Community Services



00-49 - - 80 - 6361198

NCCI-UIRM

Industrial Service Institute,  
Residency Road,  
Opp. Coffee House, Sadar,  
Nagpur - 440001

Tel : (0712) 532802  
Fax : (0712) 532802

Date : 22.8.95

To,

Mr. Bernd Krause  
Gossner Mission  
Fennestraße 31,  
D-12439,  
BERLIN

Dear Bernd,

After your communication of 5th January and my cable to you of 6th Jan confirming the dates for the Seminar between 17th to 24th Oct.

I am enclosing here with the minutes of the 1995 National Committee for your kind perusal.

Please send me some more information on the 150th Anniversary of Gossner Church in Chhotanagpur. This will help me in my preparation for the Seminar.

Please convey my best wishes and greetings to Rev. Mrs. Ursula Hecker.

This comes with best wishes to you and the Gossner Mission, Berlin.

Yours Sincerely,

  
Mr. Rajan Singh

Encl : Five Pages.



# NASIK DIOCESAN SOCIETY FOR HOLISTIC DEVELOPMENT

Chairman  
Rt. Rev. Dr. A. George Ninan  
Bishop of Nasik  
Bishop's House, I, Outram Road, Tarakpur,  
Ahmednagar - 414 001.

Secretary

☎ : [0]  
Fax : [0]

Oct. 4,

Dear Colleagues,

Greetings to you,

This is to inform you that with effect from 1st Oct.'95, I have joined Nasik Diocesan Society for Holistic Development. This was a very significant development with Bishop Ninan inviting me to join the NDSHD team.

Kindly, therefore note that all future correspondence be addressed to the above Address, Telephone and Fax Numbers.

The office of the Secretary NCCI UIRM shall now function from the above address which kindly note.

Please remember me and my family in your prayers. My wife Patricia, Shashaank and daughter Shiraaji will continue to be in Nagpur.

This comes with warm wishes from A'nagar.

Yours sincerely,

  
RAJAN SINGH

RS/SB

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

To Mr.  
Anthony Titley  
c/o United Mission to Nepal  
P.O. Box 126

Kathmandu  
NEPAL

21. August 1995

Dear Anthony,

today I was phoning to Karin and Thomas Döhne who have arrived in Germany safely. They informed me that you were willing to take part in the Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church in India about the "Social Responsibility of the Church". And you would come also with your Nepali colleague. First of all we are very grateful that you are willing to do this, I think it will be a good challenge for the people in Chotanagpur/Bihar to learn about the situation in Nepal.

As you may know, the situation of the Churches or Christians in India is quite different from the situation in Nepal. The Gossner Church is celebrating 150th anniversary and is quite established as a church, even if there are a lot of difficulties, fractions, short comings also. And they have to suffer quite a lot through the more and more growing fundamentalistic Hindu society. The Gossner Church is a mainly Adivasi Church, that means not coming from the Hindu but from an animistic background. These people had been oppressed for centuries and now they experience a new oppression through the new-strongly overwhelming economic system. But somehow the traditional social pattern was still working in the past, now it is getting more and more deteriorated and undermined through the modern development.

The church has no answer, but is realizing that preaching praying, evangelization is not the only and always appropriate answer to the problems. So slowly there is a growing awareness, but also a fearful uncertainty. This seminar, held in the context of the 150th anniversary, should initiate a process of conscientization for social problems and should give courage to start. I am afraid that the conception and the outlines of the seminar doesn't stand the test of the so called community organizing Concept. It is drawn in the pattern of how the Church is used to do the work - with some openness. Therefore I find it extremely necessary and helpful to have participants and people who have another experience, who come from outside and can indicate another way. And - I think this is a very important factor - to give hope. I for myself I am not a community organizer and I am not sure that I have described correctly what the outcome of the seminar



should be. It might be a very small outcome, but I think everything is worth to try to help people to look for their own dignity.

Karin or Thomas Döhne might have given you the first informations.

We would be very happy if you and a Nepalese colleague could join the Seminar which will be held from the 17th-21st of October. There should be some time before for an exposure, one week or at least 3, 4 days. The Seminar is financed through a German agency, so there will be no expenses for you. May be it would be also helpful if you could contact the Indian counterpart directly, it is:

Dr. Paul Singh  
KSS Office  
GEL Church Compound  
Ranchi 834 001  
India

Tel. 0091-651-311513, Fax: 0091-651-300716

It would be very nice if you could give us a positive reply as soon as possible. I am looking forward in meeting you in India. With many greetings

Yours sincerely,



Ursula Hecker  
Secretary for Asia

To Anthony Titley  
UHN

To  
The Director of Rural Development Department  
of the United Mission to Nepal  
Ms Karin Doehne  
P.O.Box 126  
Kathmandu - Nepal

Kathmandu. 1.5.95

Dear Karin Doehne,

As a result of our discussions about the plans of a seminars about "Social Awareness about the Problems in Chotanagpur" to be held in cooperation of the Gossner Evangelical Lutheran Church of Chotanagpur and Assam and Gossner Mission at Ranchi from 16-21 October, 1995, we would like to put the following request to your department.

Could you please send two persons as resource persons for this seminar, who are experienced in matters of conscientization of people to take up social responsibilities in their own context. They should have also been involved in organizing similar seminars in Nepal. From the expected dynamics of the seminar and the language it would be the best, if this could be one expatriate and one Nepali person.

The background of this seminar is the following: The G.E.L. Church has a 150 years' tradition in Christian faith and witness to the gospel. They have been independent since 1919 and are completely self supporting in their basic life and have a very active Department of Mission with 180 pastors and evangelists, who are doing faithful work with good results in respect to the growth of the church.

The church feels however a weakness in responding to the social challenges of the world around her, which is characterized by two factors mainly:

- Basically, the members are living mostly in a rural setting as farmers, predominantly belonging to the Tribal population (Adivasi).
- At the same time in Chotanagpur the heavy industry of India has been developed in the last 40 years with steel plants, mining and other heavy industries, so that it has been called the "Ruhrgebiet of India".

**Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church and Gossner Mission:  
"Social Responsibility of the Church Today"  
from 17th - 21st October at Ranchi / Bihar - India**

The G.E. L. Church in Chotanagpur and Assam and Gossner Mission Berlin are commemorating 1995 the 150th anniversary of the arrival of the first five missionaries at Ranchi / Chotanagpur sent by Johannes Evangelista Gossner. The G.E.L. Church in Chotanagpur and Assam, which came out of this event as a predominantly Adivasi church, will be celebrating its 150 Years' Jubilee from October 30th to the 2nd November 1995 at Ranchi. In this connection the G.E.L. Church and Gossner Mission at Berlin thought it useful, not only to have solemn celebrations, but to use this occasion for a seminar to build awareness for the present social and political problems in the church, since the highly sensitivetribeal area of Chotanagpur is determined today by the highest concentration of heavy industry in India. Industrialization and urbanization have created big problems especially for the Adivasi population, which had rather to bear the disadvantages of this modern development than could enjoy the advantages .

On the other hand this church is still mainly a rural church, which has not taken up the challenges of the urban and industrial development, but is also lacking a systematic study and training in its own social responsibility in the villages. So there is a need for more awareness of the problems both for the rural and the urban situation. This seminar tries to make a new start to bring together parish members, people responsible in the church on higher levels and members of social action groups in Chotanagpur with ecumenical resource persons who have experience in community organizing outside Chotanagpur in India and abroad. The outside participants will be from Germany, Nepal and Zimbabwe. The total number of participants will be about 60 - 80 persons.

**Programme of the Seminar**

- |                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|--------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>12th - 15th Oct.:</b> | <b>Exposure programme</b><br>This is meant for people from outside, who are not familiar with the situation in India and Chotanagpur.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
| <b>16th October:</b>     | <b>Arrival of the participants</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |
| <b>17th - 19th Oct.:</b> | <b>Seminar on: "Social Responsibility of the Church today"</b><br>The structure of each day will be:<br><ul style="list-style-type: none"> <li>- <b>Bible Study</b></li> <li>- <b>Lectures on the following topics:</b> <ul style="list-style-type: none"> <li>* Political and social situation of Chotanagpur</li> <li>* New Economic Developments (World Bank, IMF, etc.) and its consequences for the Indian Society</li> <li>* The answer of the church to these challenges.</li> </ul> </li> <li>- <b>Group work</b> on the lectures and exchange of own experiences.</li> <li>- <b>Workshops</b> about methods of communication like the use of drama, music, dances, songs and other media.</li> <li>- <b>Social Gettogether</b> in the evenings.</li> </ul> |
| <b>20th Oct.</b>         | <b>Feed back, Evaluation and further Planning. - Closing Service.</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
| <b>21st Oct.:</b>        | <b>Departure.</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |

A detailed programme will be available in September 1995 and sent to the participants.

**The persons responsible for the planning in India are:**

Dr. Paul Singh, Director, Mission Department of G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Ranchi 834001.  
Dr. Nirmal Minz, Bishop, North-West G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Main Road, Ranchi 834 001.

**In Germany, for further information, please contact:**

Rev. Ursula Hecker, India Desk; Rev. Bernd Krause, Social and Community Services, Gossner Mission .

Berlin, 20th July 1995

Rev. Dieter Hecker  
Director

Rev. Ursula Hecker  
India Desk

Rev. Bernd Krause  
Social and Community Services



The church has so far not been able to respond properly to the needs of both situations. Therefore, this seminar is an attempt to bring together people, who have been active already in social initiatives and action groups inside and outside the church with representatives of the church administration at different levels with participation of ecumenical guests, who will contribute their own experiences in different contexts. These will consist of members of other churches in India, participants from Germany, Zambia and the two persons from UMN.

You will find the tentative programme as enclosure to this letter. We would expect from the two participants of the UMN, that they would share with the seminar their own experiences in motivating and organizing people in a situation with very limited resources and also be present during the group discussions as resource persons.

It would be helpful, if they could arrive on the 10th October already to take part in an exposure programme in the villages of Chotanagpur to get an idea about the difference of that situation to the villages in Nepal. Gossner Mission will naturally bear the costs for travel and the seminar.

Thanking you in advance for your kind cooperation we remain with best wishes for your work and kind regards.

Yours sincerely,

Dieter Hecker, Director

Ursula Hecker, Nepal Desk

TELEFAX  
Please forward to:

**Gossner Mission**

Fennstr. 31, 12439 Berlin  
Tel. 030 / 631 78 09 - Fax: 030 / 636 11 98

Rev. Dr. Paul Singh  
c/o KSS Office

*G.E.L. Chwath Comp.*  
Ranchi 834 001

- 1 -

7. August 1995

Dear Dr. Singh,

I should have written to you earlier, but it doesn't mean that we didn't work on the planning of the seminar. It is quite difficult to get different people to the same place at the same time - but partly we had been successful.

I thought I already informed you that the money for the seminar had been granted. So there is one worry less and I think I have sent to the KSS one copy of the letter we have sent to people whom we wanted to invite. But after weeks of absence from the office may be everything is a little uncoordinated. Sorry for that.

May be the intention of the seminar is also not so clear among us. At least Rev. Krause and I had hot discussions about that. He thinks the seminar should be for grassroot people but than our program as we were talking about in Ranchi would not be suitable. I thought to interpret you correctly would be that people working and related to the church should get a motivation for social responsibilities that includes also people should participate who are doing already some social work. I think there is a fight between ideologies - The grassroot idea is a better one, but I assume that this is already a step too far and a seminar wouldn't be the best means for working with grassroot people. So we try to motivate other people, having in mind that the real change of the situation can only come from the people themselves. - I hope I have anticipated your idea somewhat correctly.

Now to the program and guests:

Two people from Nepal - probably one Nepali and one American who is working in a community program in Surkhet.

One from Zimbabwe working with social initiatives

one lady from Germany who is working with social underprivileged and organising them (Mrs. Claudia Schwarz).

Rev. Uwe Wiemann (who is member of our Curatorium and the official representative of the Lippe Church during the jubilee) who is also very much interested in the social responsibility of the Church.

Rev. Bernd Krause  
and  
Rev. Ursula Hecker.

Dr. Günter Krusche cannot attend the seminar because he has to be in Ranchi for the

official jubilee celebrations and he cannot be absent from Germany for such a long period. I am sorry for that.

While I was in Ranchi I already contacted Mr. Bara of Vikas Maitri and he agreed to attend the seminar and have a lecture about the political and social situation of Chotanagpur. May be it would be good if you could contact him as he has a lot of experience for such sort of work and if he and maybe somebody from the YMCA could be member of the preparation committee together with you and Dr. Minz.

Concerning your suggestions of resource persons: Bishop Ninan from Ahmednagar agreed to come for a lecture of the topic "The answer of the Church to the social and economic Challenges."

I also requested C.T. Kurien to come, but from him I got a negative reply. May be it would be good if you could write to Bishop Ninan from your side and arrange with him directly the practical steps for his coming (May be you also could indicate more clearly what his task should be).

There is also the possibility of the coming of Ranjan Singh from Nagpur (URM), but from our conversation in March. I had the feeling that you and Dr. Minz aren't so happy with his coming. Is that right or should we confirm his coming.

I am sorry that I could not do more. At the beginning I was thinking Dr. Krusche and Dr. Minz could do the Bible Studies alternatively. But as Dr. Krusche is not coming - may be you have another idea. One thing which worries me also is the technic of communication. As I hope the finances will be sufficient may be you could take advice for a sort of - "Übersetzungsanlage" - (May be Vikas Maitri has some experience).

As for the exposure: I hope the Zimbabwean and the Nepali participants can arrive in Ranchi a week before the seminar and there I would ask you to arrange for an exposure program. Rev. Krause and I can only come at the 12th of Oct. to Ranchi as we have some appointments here and the other German participants will not be able to come before the 13th. That means there is not much time for an exposure before only the weekend. But they all have time after the seminar and may be there can be arranged something meaningful. I will write to the Pramukh about that. But it could be that during the seminar there will be invitations spontaneously, I hope I haven't forgotten anything important concerning the seminar. I send a copy of the letter I wrote to Bishop Ninan and an outline of the seminar according to our understanding. But I think the program you should finalize as to the needs of the Gossner Church. This program which we sent from here is only a proposal according to my understanding of our talk in March.

Please contact Bishop Ninan his address: Rt. Rev. Dr. George Ninan, Bishop of Nasik, Bishop's House, Outram Road Tasakpur, Ahmednagar 414001, Maharashtra, Tel. 0241/26746, Fax 0241/28682.

May be it is also quite helpful if you write to the Director of the Rural Department, United Mission to Nepal, P.O. Box 126, Kathmandu, referring to my letter from the 1.5.1995. Mrs. Doehne has returned to Germany in July, but she was promising to arrange everything. May be it is good to ask her successor once more.



Thank you very much for your detailed "stories" from the mission field. You got a fax of the translation, I hope. The will be of great help in our work with the congregations.

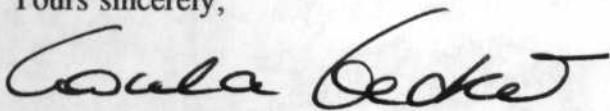
We have been translating in our work with the congregations. We get very seldom some information about the unification process. But we definitively expect that at least the jubilee will be celebrated together as it was decided in Madras last November. And we also support that the Seminar is a joint venture.

You should not drop the idea of the solar panels. If it may have time till we come in October we may talk about it. Rev. Wiemann has a friend who has been installing solar systems in 3rd World Countries. May be we can take his advice. It may be a good example for the "Energy plan" of the Church but side by side you should think about a reliable "Handwerker" (technician) who will get some additional training that HRDC and may be on the long run all Church Compound institutions could be provided with a good maintenance.

Today is my first day in the office after a 2 weeks holiday in St. Petersburg where we heard and saw something of the Gossner tradition. It was quite interesting and you will get a short article about that quite soon.

I hope you and your family are alright, give our kind regards to them. All the best

Yours sincerely,



Ursula Hecker

Please read the following letter about St. Petersburg and forward a copy to Rev. Risto Lehtinen and to the Rannukh

Fennstraße 31  
D - 12439 BerlinTelefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 1198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Mr. Langton Kuveya  
ERTC  
HARARE  
Zimbabwe

## F A X M E S S A G E

to: Mrs. Langton Kuveya  
Fax: 0026 34 573073  
from: Gossner Mission/Friederike Schulze  
date: 27-07-1995  
pages: 1

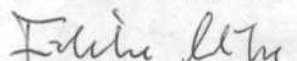
Dear Langton,

thank you for your quick response. Unfortunately, I cannot say a clear Yes or No to your proposal. I understand your reasons. I learned, however, from my colleagues that the conference is mainly meant for grass root people coming from communities and congregations. Those people shall exchange their experiences and perspectives. A few church leaders are invited either as lecturer or in their capacity as listeners. The ecumenical resource persons are asked to report on their specific experiences in community organizing: How a rural or urban community tackles its problems. Therefore, I think, an active member of one of the LPS pilote projects or a socially committed pastor or a participant of the LFT course would be the right person. So you are. Unfortunately, my colleagues who organize that seminar are not in the office. They will be back on the 7th of August, only. I can discuss the issue with them, after they returned. That might be late, since I understood that you will be going on leave, the full of August. That would mean that we have to postpone the decision, whom to invite for India, until September. This again might be late for all the travel arrangements. Or will Mrs. Tanyonganga decide whom to send?

To postpone our visit to Zimbabwe seems a bit difficult, too. Gunnar must start his new term at the university in the end of October. The people in Neuruppin and Halle, I could not contact, until now. As far as my plans are concerned I was planning to go to South Africa, after Zimbabwe, together with somebody of our Solidarity Committee, in order to discuss our further cooperation with partners there. That member of our Solidarity committee will not come to Zimbabwe but join me in South Africa. These plans are not fixed yet. I have to be back, however, around the 15th of November, latest. Whether we could go to SA first and then to Zimbabwe, this I don't know.

For the moment I see only two possibilities: you nominate either somebody else to go to India or you arrange a programm for us for October without your presence. Any other suggestion needs further discussion with the people concerned which takes more time. I will let you know the outcome as soon as possible.

With best wishes

  
Friederike Schulze



## PERSONNEL PLANNING AND HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT PROGRAMME

### PROGRAMME CO-ORDINATOR

ECUMENICAL RESOURCE AND  
TRAINING CENTRE  
27 ST PATRICKS RD.  
PO BOX 11 133  
HATFIELD  
HARARE

**FAX TO:**

Friederike Schulze  
GOSSNER MISSION

FAX NUMBER:

110 49 030 635 11 98

**FAX FROM:**

Langton Kuveya  
ZCC DEVELOPMENT EDUCATION  
OFFICER

**FAX NUMBER:**

110 263 4 573073

27 July 1995

Dear Friederike

We have seen the programme of the India Conference and we brainstormed over it.

It seems all what we are doing in the Learning For Transformation and Development Education Programmes are included in the India Conference Programme.

We feel that if we send one person from any one community, that person has limited knowledge on social, economic and political situations in Zimbabwe. The person can not share what he or she would have gained from the conference with many communities in Zimbabwe because there will be no machinery for that person to call for national conferences or meetings or workshops. The person will be representing a very small community.

.../2

 791208/790100  
TELEX: 26243 OIK ZW



-2-

Therefore, it is felt that I should attend the India Conference simply because what I would have gained from the conference can be shared through our national and international courses on Learning For Transformation and Development Education Programmes. This will also enable the Training Centre to let the Zimbabwean Community know about the work of Gossner Mission. This will also reinforce and enrich our Training Programmes because Gossner Mission and ZCC are doing almost the same work trying to empower the poor and the marginalised people. I will participate fully during the conference because I have heard a lot from the grassroots people.

If this does not upset your programme of coming to Zimbabwe, we suggest that you come here as from 27 October and then end your visit any time in November. This will give me a week to settle down before we start our programme. There will still be a chance to see the Learning for Transformation Course in operation because it starts on 15 October to 18 November.

I will make the programme and all necessary arrangements of your visit to Zimbabwe before I go to the conference.

Please let us know if this suits you or not so that we can make other arrangements. We are not saying this must be done but this is how we see it.

Methodist Church - Mr Gwatiringa (administrator)'s phone number: 724069 Harare.

Wish you the best.

Langton Kuveya *Langton Kuveya*  
DEVELOPMENT EDUCATION OFFICER

Fennstraße 31  
D- 12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 1198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin  
Mr. Langton Kuveya  
ERTC  
Fax no: 0026 34 573073

F A X M E S S A G E

26th of July 1995

Dear Langton,

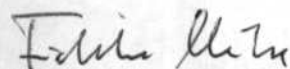
sorry for misinforming you on the phone. After our phonecall I found out that the fax mentioned arrived and that Mr. Krause has posted a reply to you dated 19/07/95. Due to the holiday season in Germany I didn't get that information.

I send you Mr. Krause's letter plus the invitation letter for the conference by fax, too, since posted letters need relatively long to reach the receiver.

I hope you get all informations required.

Since the conference in Ranchi/India coincides temporally with our intended group visit to Zimbabwe, I think that somebody else than you should go to India. I suppose we need you in Zimbabwe for all the necessary arrangements and discussions. The decision is, of course left with you and Mrs. Tanyongana.

With best regards



Friederike Schulze

*Abel.*

Mr.  
Langton Kuveya  
ZCC Development Education Officer  
27 StPatricksRd  
PoBox H133  
HATFIELD  
HARARE / ZIMBABWE

19-7-1995

Dear Mr. Kuveya,

thank you for your assistance for organizing a participation from Zimbabwe in our conference in India in October 1995. Included you will find a programme for the seminar which also shows the date from the 17th - 21st October at Ranchi-Bihar INDIA.

It is planned to have an exposure programme at least five days before the seminar, so the participants should arrive about the 10th or 11th of October at Ranchi.

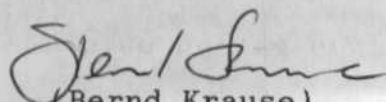
The conference tries to bring together committed people and activists from different social projects within the Gossner Church. They should realize that they are all together in a joint action. We want to strengthen their self-confidence, their commitment and their perspectives and strategies.

The ecumenical participants should help in the process to identify the challenges and the priorities, should share their experiences and should contribute a kind of spiritual encouragement.

As far as the person is concerned we would like to have <sup>as a</sup> participation from Zimbabwe: It would be good to have somebody who is linked in the movement of URM, Community Organizing, learning for transformation or training for popular democracy. We would prefer an experienced grassroot activist, who is able to listen to the stories of the people and at the same time prepared to strengthen the self-initiative and hope of the people.

I hope you can find somebody in the network of your programme and we can as soon as possible start with the detailed preparation like visa, ticket and so on.

We wish you all the best and much success in your work.  
Sincerely yours,

  
(Bernd Krause)  
Vice director



Epiphaniastagesdienst am 6.1.1995 in der Kaiser-Wilhelm-Gedächtniskirche

Lied 66,1-3 und 8

Indien - ein Land mit vielen verschiedenen Menschengruppen und Religionen, ein Land mit alten Traditionen und vielen neuen Herausforderungen und Problemen.  
Korea - ein geteiltes Land, aufstrebend in seiner wirtschaftlichen Entwicklung.  
Das sind die beiden Länder, mit denen sich die Gossner Mission und das Berliner Missionswerk in diesem Jahr besonders beschäftigen werden.

In der christlichen Tradition hat der heilige Tag Epiphania mit Mission zu tun. Die Geschichte der Weisen, die von weither gekommen sind, um das Kind in Bethlehem anzubeten, symbolisieren die Arbeit der Mission. Menschen gehen zu Jesus Christus, und ihr Leben ändert sich. Nicht nur in Beziehung zu Gott - auch im Zusammenleben der Menschen. Wo Mangel und Fehler sind, können wir auf Veränderung hoffen und neue Wege gehen.  
In unserer Welt herrscht Mangel und Bedürfnis von Gerechtigkeit.

In diesem Gottesdienst bedenken wir, was es heißt: Miteinander leben in Gerechtigkeit. Und dies bedenken wir im Namen des Vaters und des Sohnes und des heiligen Geistes.

Psalm - im Wechsel

Psalm 111

~~Der Herr gedenkt ewig an seinen Bund~~

Halleluja! Ich danke dem Herrn von ganzem Herzen  
im Rate der Frommen und in der Gemeinde.

Groß sind die Werke des Herrn,  
wer sie erforscht, der hat Freude daran.  
Was er tut, das ist herrlich und prächtig,  
und seine Gerechtigkeit bleibt ewiglich.  
Er hat ein Gedächtnis gestiftet seiner Wunder,  
der gnädige und barmherzige Herr.

Er gibt Speise denen, die ihn fürchten;  
er gedenkt ewig an seinen Bund.  
Er läßt verkündigen seine gewaltigen Taten  
seinem Volk,

daß er ihnen gebe das Erbe der Heiden.  
Die Werke seiner Hände sind Wahrheit und Recht;  
alle seine Ordnungen sind beständig.

Sie stehen fest für immer und ewig;  
sie sind recht und verlässlich.  
Er sendet eine Erlösung seinem Volk;  
er verheißt, daß sein Bund ewig bleiben soll.

Heilig und hehr ist sein Name.  
Die Furcht des Herrn ist der Weisheit Anfang.  
Klug sind alle, die danach tun.  
Sein Lob bleibt ewiglich.

CHOIR



# ZIMBABWE COUNCIL OF CHURCHES

PERSONNEL PLANNING AND HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT PROGRAMME



572122  
HIRE: 57122-43079  
GRAMS: OIKOLMENE  
TELEX: 26243 OIK ZW

ECUMENICAL RESOURCE AND  
TRAINING CENTRE  
77 ST PATRICKS RD  
PO BOX 11133  
HATHFIELD  
HARARE

Friderike Schulze  
GOSSNER MISSION

Langton Kuveya  
ZCC DEVELOPMENT EDUCATION OFFICER



Z. C. C REGIONAL OFFICE

*General Secretary*

Assistant General Secretary

Gossner  
Mission

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Mr. Langton Kuveya  
Zimbabwe Council of Churches  
Ecumenical Resource and Training Centre  
P.O.Box H 133  
HATFIELD - HARARE  
ZIMBABWE

12th of Juni 1995

Dear Langton,

finally you get my report on your visit. It took more time than expected since other office things had to be done as well. In the meantime I spent also a ten days holiday in Italy which was very nice.

I hope you found your family in good health and mood, and your father in law back from hospital. Locadia wrote a letter indicating that your flight home was safe and exciting, and you all proceeded to your homes the same morning which was good to know.

Looking back I think the programme was too fully packed leaving not enough time for reflection. The next time we must have at least two to three days in the beginning to elaborate guidelines for our reflection and assessment. And we must include a three days workshop/seminar in the end of the visit, to discuss our observations and impressions in a more systematic way. Those issues raised in the evaluation meeting on the 3rd of May need a deeper reflection, I think.

Going through your reports I was missing a more detailed assessment of our situation in Germany. Apart from some critical remarks on non profit making ABM projects nothing is mentioned about the general situation as you see it, about developments in our economy, about our lifestyle, our poverty, culture, the role of the church etc. You would really help us in revealing your feelings and observations. I strongly believe that we need your provocation (in the real meaning of the word) in order to do the little we can to raise awareness on justice and a more humane development in our society.

Concerning our next visit to Zimbabwe, I am planning to come in October, any time after the 7th. September has already been fully packed with meetings, and our governing board where I must be present, will meet from the 5th to the 7th of October. Together with me Gunnar Theißen would like to come, and almost likely somebody from Neuruppin and somebody from the group in Halle. Do you think four persons are okay? Gunnar comes likely in the end of September, already, and would like to have partly his own programme. He has a particular interest in making contacts with the university. Please, let me know soon, which time is most suitable for you and the communities. We would like to spend most of the time with the communities.



The Siachilaba adult literacy group Bunsiba has sent an application letter in order to get \$ 5.550 as drought relief support from us or any donor agency in Germany. I will reply directly to them in saying that we don't have programmes for drought relief. Who runs such programmes in Zimbabwe? Is it Christian Care or the Zimbabwean government? I understand, that the group wants to make use of us as overseas partner. We agreed however that Gossner Mission should not and cannot function as donor, we don't have any charity funds available. If they need finances for their activities - besides drought relief - we must find other solutions either through ZCC and its development programme or through donor agencies here. Or, what do you recommend? Shall I ask the congregations around Neuruppin to collect some money which will certainly take some time.

Rev. Inge Burkhardt from Halle will send us about 1.000,--DM that was collected at a baptism and is meant for the "work with children done by Mr. Kuveya". Do you want that money to be donated to the Buhera people for the school?

The staff of the Gwembe South Development Project in Zambia plans an excursion to Gwange and Binga for July, the 14th to 17th. I don't know their programme but they might contact BIDA as well. We gave them BIDA's address. Please, let Lizzi know that these people may come. Since they arrange their own programme I don't think it will be useful for you to make an extra trip to Binga. If you should be there by chance, you can take the opportunity to meet them.

Last but not least: I don't know whether you learned whilst being with us that the Gossner Church in India celebrates it's 100 anniversary in October and November this year. Part of the celebration will be a workshop about the social responsibility of the Church. That workshop is meant for grassroot people from the Gossner Church in India with some participants from Germany and resource persons from both countries, India and Germany. The workshop will be take place from October the 15th to the 21st.

Gossner Mission likes to invite somebody from Zimbabwe to participate in that workshop, with a programme prior to and after the workshop so that the whole time for a visit to India can cover the period October 12th to 25th. The person coming should be preferable a women which is not a must, work on the grassroot level in the field of "Learning for Transformation" and be familiar with the philosophy behind the three volume publication "Learning for Transformation" issued by the ZCC which is well known and well used in India. Gossner Mission will of course stand for all expenditures for that visit. Whom shall we invite? Please, give us a name. Would Selina be the right person? Or Miss Chipo Khupe? Or anybody else?

I wish you all the best and look forward to hearing from you. Please, convey my best regards to your director, Mrs. Tanyongana, to your secretary Janet and all the other colleagues.

With kind greetings.

Yours,

*Friederike Schulze*

Friederike Schulze

cc. to: Mr. Claasen, Mr. Hess, Mr. Mai, BfW  
Rev. Kuchera and Mrs. Tanyongana, ZCC

Per Telefax!  
Fax: 004122/7910361

Fennstraße 31  
D - 12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

An  
Rev. Gert Rüppell  
c/o WCC  
150, Route de Ferney

CH-1211 Genf, Schweiz

Berlin, den 27. Juni 1995

Dear Gert (or to whom it may concern in the department),

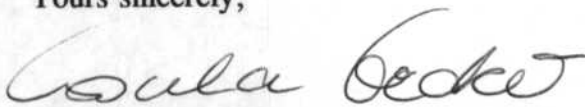
we are glad to have heard, that you have become the successor of Gerhard Linn in the WCC. We congratulate you (belated) for this call and wish you all the best for your work. We do hope to meet at some occasion. We might also be coming from Gossner Mission for talks with different persons and departments about common interests in the second half of this year.

Today we have a very simple request. We are planning a seminar in October at the occasion of the 150 years' jubilee of the Gossner Evangelical Lutheran Church in Ranchi. For that we would like to contact C.T. Kurien, but donot have his address. I think, it should be an easy thing for you to get hold of it and either send a short fax message or a phone call to either one of us (Phone and fax are one number each for the whole office: Tel. 0049-30-6317809 - Fax: 6361198).

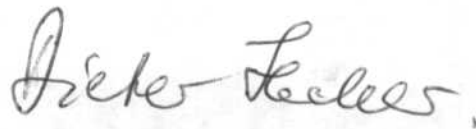
We are sorry to bother you with such trivial things, but we have contacted th UELCI ion India with no response since quite a time.

Thanking you in advance for your trouble we remein with best wishes,

Yours sincerely,



Ursula Hecker  
India Desk



Dieter Hecker  
Director

*Herzlichen Gruß!*

**By Telefax! - 0091-241-28682  
Urgent Message!**

Fennstraße 31  
D - 12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 1198

To the Rt. Rev.  
Bishop George Ninan  
Ahmednagar - India

Berlin, 22. June 1995

**Ref.: Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church and Gossner Mission on  
"Social Responsibility of the Church" from 17th - 21st October at Ranchi / Bihar**

Dear Bishop George Ninan,

we wanted to write already since some weeks to you, but didnot have your latest address. Just last week we met Rev. Joshi from BUILD at the Evangelische Kirchentag at Hamburg, who gave us the same.

We would like to invite you to give a lecture at an Ecumenical Seminar of the G.E.L. Church together with Gossner Mission at Ranchi in October. We shall give a short description of the aims and objectives of this seminar, so that you can get an idea of it. If you still are free at this date and can manage to come, we would send you more details immediately after your reply.

We are not aware, how far you are familiar with the situation of the G.E. L. Church in Chotanagpur and Assam, which is a predominantly tribal church and will be celebrating its 150 Years' Jubilee from October 30th to the 2nd November 1995 at Ranchi. In this connection the G.E.L. Church and its main oversea's partner, Gossner Mission at Berlin thought it useful, not only to have solemn celebrations, but also use this occasion for a seminar to build awareness for the present social and political problems in the highly sensitive area of Chotanagpur. You certainly know, that the environment in Chotanagpur is determined by the heavy industry and all the problems connected with this, especially for the Adivasi population, which had to bear more disadvantages than enjoying the advantages of this modern development. - On the other hand this church is still mainly a rural church, which has not taken up the challenges of the urban and industrial development and is also lacking a systematic study and training in its own social responsibility both for the rural and the urban situation. This seminar tries to make a new start to bring together parish members, people responsible in the church on higher levels and members of social action groups in Chotanagpur with ecumenical resource persons who have experience in community organizing. The outside participants will be from Germany, Nepal and Zimbabwe. The total number will be about 60 - 80 persons.

./.

**The basic structure of the seminar will be as follows:**

- \* For people from outside, who are not familiar with the situation in India and Chotanagpur we have planned an exposure programme from 12 -15 October.
- \* **16th October: Arrival day.**
- \* **17th - 19th Oct. The main part with the same structure each day:**
  - Bible Study
  - Lectures about different topics:



- \* Political and social situation of Chotanagpur
  - \* New Economic Development and its consequences (World Bank, IMF, etc.)
  - \* The answer of the church to these challenges.
  - **Group work** on the lectures and exchange of own experiences.
  - **Workshops** for methods of communication like the use of drama, music, dances, songs and other media.
  - **Social Gettogether** in the evenings.
  - **Feed back, Evaluation and further planning.**
  - **Closing Service.**
- \* 20th Oct.
- \* 21st Oct.: **Departure.**

This is the rough outline. We would request you to take the lecture on: "The answer of the Church to the Social and Economic Challenges." - We have been asking you, although you may not be familiar with the situation in Chotanagpur itself so much, but you have been working in an urban and industrial setting in India for a long time and have also experiences about the ecumenical discussion in Asia and beyond. - We would appreciate, if you could also be available as resource person during the seminar. The date which we have reserved for your topic is th 19th October.

The persons responsible for the planning in India are:

Dr. Paul Singh, Director of the Mission Department of G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Ranchi 834001.

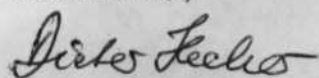
Dr. Nirmal Minz, Bishop of the North-West G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Main Road, Ranchi 834 001.

You will know the two persons, especially Dr. Nirmal Minz, from other occasions and ecumenical meetings.

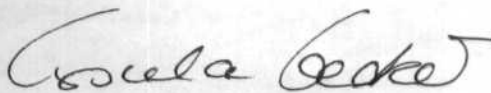
It would be helpful for us, if you could send us your reply, if you will be able accept our request as soon as possible to our address in Germany (preferably by Telefax: 0049-30-6361198). All the other details could be settled later. Since this seminar is sponsored by the Church Development Service, you could naturally come by flight to Ranchi to save time.

Hoping to hear from you soon, we remain with best wishes and kind regards,

Yours in Christ,



Rev. Dieter Hecker  
Director



Rev. Ursula Hecker  
India Desk



Bishop's House  
Outram Road, Tarapur  
Ahmednagar 414001, Maharashtra, India  
Tel: 0241/26746  
26th June 95.

Dear friends,

Thank you for your fax regarding the seminar at Ranchi in October 17-20, 95. I will be happy to accept the invitation to make a presentation on "Social Responsibility of the Church" on 19th October. I have to leave for Bangladesh on 20th October. Please send me details of the seminar.

With all good wishes.

Yours sincerely,

+ A. G. C. H. H. H.

Rt. Rev. Dr. George Ninan  
Bishop of Nasik

GN/BJ

**Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church and Gossner Mission:  
"Social Responsibility of the Church Today"  
from 17th - 21st October at Ranchi / Bihar - India**

The G.E. L. Church in Chotanagpur and Assam and Gossner Mission Berlin are commemorating 1995 the 150th anniversary of the arrival of the first five missionaries at Ranchi / Chotanagpur sent by Johannes Evangelista Gossner. The G.E.L. Church in Chotanagpur and Assam, which came out of this event as a predominantly Adivasi church, will be celebrating its 150 Years' Jubilee from October 30th to the 2nd November 1995 at Ranchi. In this connection the G.E.L. Church and Gossner Mission at Berlin thought it useful, not only to have solemn celebrations, but to use this occasion for a seminar to build awareness for the present social and political problems in the church, since the highly sensitivetribeal area of Chotanagpur is determined today by the highest concentration of heavy industry in India. Industrialization and urbanization have created big problems especially for the Adivasi population, which had rather to bear the disadvantages of this modern development than could enjoy the advantages .

On the other hand this church is still mainly a rural church, which has not taken up the challenges of the urban and industrial development, but is also lacking a systematic study and training in its own social responsibility in the villages. So there is a need for more awareness of the problems both for the rural and the urban situation. This seminar tries to make a new start to bring together parish members, people responsible in the church on higher levels and members of social action groups in Chotanagpur with ecumenical resource persons who have experience in community organizing outside Chotanagpur in India and abroad. The outside participants will be from Germany, Nepal and Zimbabwe. The total number of participants will be about 60 - 80 persons.

**Programme of the Seminar**

- |                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|--------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>12th - 15th Oct.:</b> | <b>Exposure programme</b><br>This is meant for people from outside, who are not familiar with the situation in India and Chotanagpur.                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
| <b>16th October:</b>     | <b>Arrival of the participants</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |
| <b>17th - 19th Oct.:</b> | <b>Seminar on: "Social Responsibility of the Church today"</b><br>The structure of each day will be:<br><ul style="list-style-type: none"> <li>- <b>Bible Study</b></li> <li>- <b>Lectures on the following topics:</b> <ul style="list-style-type: none"> <li>* Political and social situation of Chotanagpur</li> <li>* New Economic Developments (World Bank, IMF, etc.) and its consequences for the Indian Society</li> <li>* The answer of the church to these challenges.</li> </ul> </li> <li>- <b>Group work</b> on the lectures and exchange of own experiences.</li> <li>- <b>Workshops</b> about methods of communication like the use of drama, music, dances, songs and other media.</li> <li>- <b>Social Gettogether</b> in the evenings.</li> </ul> |
| <b>20th Oct.</b>         | <b>Feed back, Evaluation and further Planning. - Closing Service.</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
| <b>21st Oct.:</b>        | <b>Departure.</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |

A detailed programme will be available in September 1995 and sent to the participants.

**The persons responsible for the planning in India are:**

Dr. Paul Singh, Director, Mission Department of G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Ranchi 834001.  
Dr. Nirmal Minz, Bishop, North-West G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Main Road, Ranchi 834 001.

**In Germany, for further information, please contact:**

Rev. Ursula Hecker, India Desk; Rev. Bernd Krause, Social and Community Services, Gossner Mission .

Berlin, 20th July 1995

Rev. Dieter Hecker  
Director

Rev. Ursula Hecker  
India Desk

Rev. Bernd Krause  
Social and Community Services



MADRAS INSTITUTE OF DEVELOPMENT STUDIES

41 25 89  
41 22 02  
Phone : 41 22 95  
41 97 71

வளர்ச்சி ஆராய்ச்சி நிறுவனம் - சென்னை

Fax : 0091-44-412202

Telex : 041-210 60 PCO IN PP : WDT 17

79, Second Main Road  
Gandhi Nagar, Adyar  
Madras 600 020,  
India

Dr C T Kurien  
Emeritus Professor

Eingegangen

28. Juli 1995

Erledigt:.....

Ref: 1979 / 95

July 20, 1995

Dear Rev. Ursala Hecker,

I am sorry that your Fax letter of 12th July has remained unanswered for over a week. This was because I was away during the last few days.

Thank you very much for inviting me to make a presentation at the seminar on Social Responsibility of the Church at Ranchi from October 19 to 21. I regret very much that because of commitments that I have already taken up and for certain family reasons I cannot be away from Madras in the second half of October. I request you to excuse me. I wish the seminar all success.

With warm regards,

Yours sincerely,

*C.T. Kurien*

C.T. Kurien

Rev. Ursala Hecker  
India Desk  
Gossner Mission  
Fennstrabe-31  
D-12439, Berlin  
Germany

# BOARD OF EVANGELISM AND LITERATURE

Gossner Evangelical Lutheran Church  
(Regd. under Societies Registration act. XXI of 1860)

Director & Secretary

Rev. Dr. C.K. Paul Singh, B.D. Dr. Theol (Berlin)

Ref. Memo No. 34/95 BEL

Rev, Mrs U. Hecker

Asia Secretary, GM

Fennstr 31

12439 BERLIN, GERMANY

Dear Rev, Mrs Hecker,

As I did not get any further information or confirmation regarding the ensuing Seminar on "Church Mission and Society oriented Service" at Ranchi, I am writing this letter requesting you to kindly confirm the programme. It shall be conducted during Oct, 17-21, 1995. I hope, you have received a green signal for help from EMW, similarly you have the list of Bible Study conductors, Resources persons, sharing persons and the participants from various countries as proposed by you during our talks at Ranchi; I also shall be glad to receive names and personalia of the participants, who would be interested in Exposure Programmes, kindly write to Pramukh Adhyaksh regarding places, congregations - rural, urban, small, big .. etc. As the Church situation seems to be uncertain due to non-completion of talks between GELC and NWGELC under the Umbrella of UELCI, Joint Jubilee Celebrations and other activities seem to be jeopardized. However I would personally like that the Seminar be conducted as Scheduled. Rev, Dr. Minz also would like to have the confirmation regarding the Seminar. I shall invite the participants from GELC/NWGELC and the neighbouring churches only after your confirmation.

We had a Seminar for Pastors and some Laities on the subject in June. Participants enjoyed it and many say it to be of great success, but I am not quite satisfied, because the Action Plans are too general, although as preparatorial Seminar it was quite good.

HRDC is not yet completed, but the structure has been finished, inside and outside works are in progress. I am thinking of, its inauguration on 12th or 16th Oct. I had an enquiring for 'Solar System', an overhead light unit costs ca. Rs. 30000/- and 'Pump Set' ca Rs. 38000/-.

With Many Greetings to you all,

Yours Sincerely

*C. K. Paul Singh*  
(Rev, Dr. C.K. Paul Singh)

Director, BEL

*Ps. Sorry, I could not send the letter  
by fax on above given nr.  
C.K.P.S.*

**Per Telefax! Urgent Message!**

**Fax: 0091-44-23 50 305**

To  
Prof. C.T. Kurien  
Madras Institute of Development Studies  
79, II Main Road - Gandhi Nagar, Adyar  
Madras 600 020 India

Berlin, 12th July 1995

**Ref.: Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church and Gossner Mission on  
"Social Responsibility of the Church" from 17th - 21st October at Ranchi / Bihar**

Dear Prof. C.T. Kurien,

please excuse us for writing so late for a request concerning a seminar already in October in Ranchi. We were desperately looking for your address, until Dr. Gert Ruppell from Unit II 2G1 from the WCC gave it to us.

We would like to invite you to give a lecture at an Ecumenical Seminar of the Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur and Assam together with Gossner Mission at Ranchi in October. Our Indian partners in the Preparation Committee were very much eager to have you for one of the lectures of this seminar. We shall give a short description of the aims and objectives of this seminar, so that you can get an idea of it. If you still are free at this date and can manage to come, we would send you more details immediately after your reply.

We are not aware, how far you are familiar with the situation of the G.E. L. Church in Chotanagpur and Assam, which is a predominantly tribal church and will be celebrating its 150 Years' Jubilee from October 30th to the 2nd November 1995 at Ranchi. In this connection the G.E.L. Church and its main oversea's partner, Gossner Mission at Berlin thought it useful, not only to have solemn celebrations, but also use this occasion for a seminar to build awareness for the present social and political problems in the highly sensitive area of Chotanagpur. You certainly know, that the environment in Chotanagpur is determined by the heavy industry and all the problems connected with this, especially for the Adivasi population, which had to bear more disadvantages than enjoying the advantages of this modern development. - On the other hand this church is still mainly a rural church, which has not taken up the challenges of the urban and industrial development and is also lacking a systematic study and training in its own social responsibility both for the rural and the urban situation. This seminar tries to make a new start to bring together parish members, people responsible in the church on higher levels and members of social action groups in Chotanagpur with ecumenical resource persons who have experience in community organizing. The outside participants will be from Germany, Nepal and Zimbabwe. The total number will be about 60 - 80 persons.

./.



The basic structure of the seminar will be as follows:

- \* **12th - 15th October.**
- \* For people from outside, who are not familiar with the situation in India and Chotanagpur we have planned an exposure programme.
- \* **16th October: Arrival day.**
- \* **17th - 19th Oct.** The main part with the same structure each day:
  - Bible Study
  - **Lectures** about different topics:
    - \* Political and social situation of Chotanagpur
    - \* New Economic Development and its consequences for the Society (World Bank, IMF, etc.)
    - \* The answer of the church to these challenges.
  - **Group work** on the lectures and exchange of own experiences.
  - **Workshops** for methods of communication like the use of drama, music, dances, songs and other media.
  - **Social Gettogether** in the evenings.
  - **Feed back, Evaluation and further planning.**
  - **Closing Service.**
- \* **20th Oct.**
- \* **21st Oct.:** Departure.

This is the rough outline. We would request you to take the lecture on: "The New Economic Developements in India and its consequences for the Society." - We have been asking you, although you may not be familiar with the situation in Chotanagpur itself so much, but you have been working on economic developments in India from a social point of view and its relevance for the Churches and Christians for a long time and have also experiences about the ecumenical discussion in Asia and beyond. - We would appreciate, if you could also be available as resource person during the seminar. The date which we have reserved for your topic is th 18th October.

**The persons responsible for the planning in India are:**

Dr. Paul Singh, Director of the Mission Department of G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Ranchi 834001.

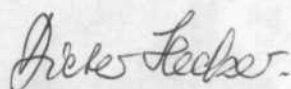
Dr. Nirmal Minz, Bishop of the North-West G.E.L. Church, G.E.L. Church Compound, Main Road, Ranchi 834 001.

You will know the two persons, especially Dr. Nirmal Minz, from other occasions and ecumenical meetings.

It would be helpful for us, if you could send us your reply, if you will be able accept our request as soon as possible to our address in Germany (preferably by Telefax: 0049-30-6361198). All the other details could be settled later. Since this seminar is sponsored by the Church Development Service, you could naturally come by flight to Ranchi to save time.

Hoping to hear from you soon, we remain with best wishes and kind regards,

Yours in Christ,



Rev. Dieter Hecker  
Director



Rev. Ursula Hecker  
India Desk

- 1 -

To Dr. P. Singh  
GEL Church Comp.

To  
The Director of Rural Development Department  
of the United Mission to Nepal  
Ms Karin Doehne  
P.O.Box 126  
Kathmandu - Nepal

Kathmandu. 1.5.95

Dear Karin Doehne,

As a result of our discussions about the plans of a seminars about "Social Awareness about the Problems in Chotanagpur" to be held in cooperation of the Gossner Evangelical Lutheran Church of Chotanagpur and Assam and Gossner Mission at Ranchi from 16-21 October, 1995, we would like to put the following request to your department.

Could you please send two persons as resource persons for this seminar, who are experienced in matters of conscientization of people to take up social responsibilities in their own context. They should have also been involved in organizing similar seminars in Nepal. From the expected dynamics of the seminar and the language it would be the best, if this could be one expatriate and one Nepali person.

The background of this seminar is the following: The G.E.L. Church has a 150 years' tradition in Christian faith and witness to the gospel. They have been independent since 1919 and are completely self supporting in their basic life and have a very active Department of Mission with 180 pastors and evangelists, who are doing faithful work with good results in respect to the growth of the church.

The church feels however a weakness in responding to the social challenges of the world around her, which is characterized by two factors mainly:

- Basically, the members are living mostly in a rural setting as farmers, predominantly belonging to the Tribal population (Adivasi).
- At the same time in Chotanagpur the heavy industry of India has been developed in the last 40 years with steel plants, mining and other heavy industries, so that it has been called the "Ruhrgebiet of India".

-2-

The church has so far not been able to respond properly to the needs of both situations. Therefore, this seminar is an attempt to bring together people, who have been active already in social initiatives and action groups inside and outside the church with representatives of the church administration at different levels with participation of ecumenical guests, who will contribute their own experiences in different contexts. These will consist of members of other churches in India, participants from Germany, Zambia and the two persons from UMN.

You will find the tentative programme as enclosure to this letter. We would expect from the two participants of the UMN, that they would share with the seminar their own experiences in motivating and organizing people in a situation with very limited resources and also be present during the group discussions as resource persons.

It would be helpful, if they could arrive on the 10th October already to take part in an exposure programme in the villages of Chotanagpur to get an idea about the difference of that situation to the villages in Nepal. Gossner Mission will naturally bear the costs for travel and the seminar.

Thanking you in advance for your kind cooperation we remain with best wishes for your work and kind regards.

Yours sincerely,

Dieter Hecker, Director

Ursula Hecker, Nepal Desk



- Kopie -

To  
Mr.  
Ed de la Torre, IPD

delivered by Annette Flade

7-11-1994

Dear Ed,

my cordial greetings and by that occasion, the visit of the women's group, you can see, that we are still sympathetic with hard and mind to the people of the Philippines and their struggle.

We even need at the moment very much your solidarity to overcome the events of the breakdown of socialism on our strategies and our commitment.

One of the partnership programmes and hopeful developments is the Gossner Evangelical Lutheran Church in India (CELC) which is an Adivasi church which was very much encouraging for their struggle. The CELC is celebrating their 150th anniversary at the 2nd November 1995.

For that occasion they are planning together with us a churchwide seminary for social service and social responsibility in church and congregation.

We want to gather activists from different regions, different concerned groups and even partners from other denominations to start a kind of experience exchange, networking and training programme.

The whole thing is a very new move. That means we need somebody who is able to inspire them, to help them to adequate analyses and to enable them to more selfconfidence, and that somebody should be you. Therefore my official request:

Could you please assist us in Ranchi, India, from almost October 16th 1995 for at least one week seminary with the above described task. It would be very nice if you could stay there until the festival procedure at the 2nd November.

All the expenses will be payed by Gossner Mission.

I am very much involved in the preparation of that seminary and it is a fascinating idea for me to work together with you at that occasion. Please let us know as soon as possible whether you are still free to join us in the preparatory group.

With cordially greetings, sincerely yours,

(Bernd Krause)

# BOARD OF EVANGELISM AND LITERATURE

Gossner Evangelical Lutheran Church  
(Regd. under Societies Registration act XXI of 1860)

Director & Secretary

Rev. Dr. C. K. Paul Singh. B. D. Dr. Theol. (Berlin)



G. E. L. Church,  
Ranchi-834001  
Bihar/India  
Phone 23358

Ref. Memo No. \_\_\_\_\_

The 9th June 1994

Rev D. Hecker

Director, GMFe

Fennstr. 31

Berlin

Dear Rev Hecker,

Thank you very much for your kind letter dt 2. Mai 1994. I am very sorry that I could not write to you earlier.

Meanwhile I had been to Andamans and Nicobar Island along with Rev M. Barjo and Rev J. Topno (Secretary Bd of Properties). We saw and discussed various

plans and projects as well as problems including the possible works under BEL. We have agreed to send two workers (a Pastor and an Evangelist) to be found out by the Anchal Adhyaksh Rev M. Barjo. Due to extreme heat I fell sick with high fever and its weakness compelled me to cancel various programmes of Youth and Women conventions except that of SE Anchal Yuwa Sangh

From 6-13 June 1994 we have the Refresher Course and Work Camp for the workers of EWFs at Ranchi. 105 members from all fields have come together and we are holding classes in the Christ Church Ranchi with three working (morning-evening) at the site of HRDC. Some youths from Ranchi also joined for an hour or so.

The foundation works of the HRDC have been started with the amount given by GM along with the amount for the Mini Library (amounting to Rs 100000).

The work is being delayed due to various unavoidable reasons however we are going ahead according to the plan. Meanwhile we have got the information from EMW that they have granted the amount of Dm 75 000.- We have stated the process to get the amount as soon as possible so that we can go ahead with the construction works.

Herewith I am sending also the plan and estimate (proposed) for the Seminar 1995. We could not discuss the matter with the Pramukh Adhyaksh fully. The

time schedule, theme, different subjects of lectures and discussions etc are some of the ideas. You may kindly give your proposals after discussions with the Pramukh Adhyaksh. I would also like to propose for some preliminary Seminars for the "INTERESTED PEOPLE of the Church in October/November 1994.

We have not yet finalised the RINJORLESUNG for the Gossner Theological College. Dr. Dang seems to agree to the proposal, but it has to be discussed in the Faculty of the College. I hope that Dr Dang shall take positive steps to materialise the proposal of RINJORLESUNG.

When you have your proposals for the envisaged Seminar 1995, we shall send the final plan and estimate by the middle of July that it can be sent to the EMW.

As my office assistant is busy in arrangements for the Refresher course and Work Camp I typed the letter, therefore kindly excuse me for the mistakes and typing errors. With Greetings,

Yours sincerely

C. K. Paul Singh



GELC Human Resources Development Centre/ Department of Christian Ministry and Development

SEMINAR on: Christian/Church Ministry and Development (social involvement)

I. Time : October 1995 (During Puja Holidays)

II Venue: HRDC/ GELC, Ranchi

III Participants: 8 participants from each Anchal and Hd Qrtrs Cong.

as follows : 1. Decision making rpre 2  
(Samiti Memb.)

2. Woman Work officers 2

3. Youth Work officers 2 (1+1 Male-Fem.)

4. Children Work leaders 2 2 " (Sunday School etc.)

= 48 Members participants

10 ecumenical participants from neighbouring churches

12 resource persons (mixed: f/m, local/ecum. etc.)

Total 70 participants

IV Expenses:

|                                                   |            |
|---------------------------------------------------|------------|
| a) Fooding @Rs 40/- for 6 days of 70 participants | Rs 16800.0 |
| b) T.A. @Rs 300/- (average) for 70 participants   | 21000.0    |
| c) Accomodation 25/- (average) 50 parti. (6 days) | 7500.0     |
| d) Miscellaneous, Contig.                         | 700.0      |

Total Rs 46000.0

"25% may be collected locally by way of registration fees.

Following subjects and sub-subjects may be dealt with during the seminar by way of lectures and response, discussion groups, etc:

Main Theme: Christian Ministry and Development (Today)

1 Bible Study : Isa. 61:1-3, Lk 4:16ff, Titus 1-3 Chps., etc

2 Key Note Address: Re-Valuation of our Christian Ministry and Development ~~W###~~ in and through our Church(es)

3. What is Christian Ministry in Christ's Way (Preaching, Teaching and Healing) Today? *Holistic approach!*

4. What is Development? A Christian Understanding/Approach?

5. What is "Today"? Changing and Worsening Situations in Church and Society - in ref. to Christian faith, Human rights, Environmental Problems, ecology, etc.

6. Implications of World Bank, International Monetary Fund, GATT, etc.



7. Role/Implications of NGO's in Church and Society ✓

8. Identification of Situations of different Issues of Children, Youth, Man/Woman(wife/husband)\_ Parenthood, Seniors, etc.:

- a) Children: Education, Christian Education, Health, child labour, begging, rags collecting, pickpocketing, various forms of other exploitations-
- b) Youth : Education, professional Training, Employment, Drug Abuse, alcoholism, marriage Problems, Juvenile diseases, etc
- c) Man/Woman: Marital life, both working Partners, Parental responsibilities, Equal rights, etc.
- d) Seniors : Untimely/unprepared retirements, Loneliness, obstacles in independent growth of the Youngsters, etc.

9. Analysis of the Situations (as shown above etc) in one's own family church/Congregation and society of the Participants'

10. Action Plans for further/better Christian Ministry and Development to be acted upon in given situations as analysed of the family, church and society.

11. Proposal/Point of Follow up programmes seem to be a MUST

Dec 1995 Feb. 1996 with some financial assistance for the lower level Work shops in Anchal/Ilaka.

Expected results can be evaluated only after/during such follow up programmes.

C. K. P. S. Sh  
9/6/94

Questions of Industrial Centres

Question of a similar workshop for the Theol. College and Ranchi people.

- V. Role/Implications of NGOs in Church and Society
8. Identification of situations of different issues of Children, Youth, Man/Woman (wife/husband), Parenthood, Seniors, etc.:
- a) Children: Education, Christian Education, Health, Child Labour, begging, rags collecting, pickpocketing, various forms of other exploitations-
  - b) Youth: Education, professional training, employment, drug habit, alcoholism, marriage problems, juvenile diseases, etc.
  - c) Man/Woman: Marital life, both working partners, parental responsibilities, equal rights, etc.
  - d) Seniors: Untimely/unprepared retirements, loneliness, obstacles in independent growth of the youngsters, etc.
9. Analysis of the situations (as shown above etc) in one's own family, church/congregation and society of the participants.
10. Action Plans for further/better Christian Ministry and Development to be acted upon in given situations as analysed of the family, church and society.
11. Proposal/Point of Follow up programmes seem to be a MUST Decided 1995 with some financial assistance for the lower level work shops in Anchal/Alaka.
- Expected results can be evaluated only after/during such follow up programmes.

1

—

2

—

3

—

4

—

5

—

6

—

7

—

8

—

9

—

0

Schnitt-  
wechsel



56/6194

**Trennblatt**  
hellchamois mit  
Organisationsdruck



**LEITZ 1210**  
Made in West Germany

Recycling Papier  
(min. 98%)







# THE CHRISTIAN COUNCIL OF ZAMBIA

P.O. Box 30315  
Tel: 229551  
Telex: 45160 CHRIST  
Fax: 224308  
Lusaka, Zambia

All correspondence to be addressed to  
The General Secretary, Tel: 224308

Your Ref:

Our Ref:

April 5th, 1995

Rev Dieter Hecker  
Gossner Mission  
Fennstrabe 31  
D-12439  
Berlin  
GERMANY

Dear Rev Hecker

RE: INVITATION FOR THE 150 YEARS' JUBILEE OF THE GOSSNER  
EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH IN OCTOBER/NOVEMBER 1995

Thank you for your letter dated 24 March, 1995 which was hand  
delivered to us by Aloisia Shittematler.

I am very grateful for the invitation extended to me to attend  
the 150 years jubilee of the Gossner Evangelical Church from  
October/November, 1995.

Looking at the length of duration involved, it appears that I  
would only be able to attend part of the jubilee, say from 17th  
to 23rd or from 31st to the 2nd November. Kindly advise me which  
part you may feel would be most suitable for me to contribute to.

Thanking you once more for the invitation and looking forward to  
hearing from you.

Yours sincerely

*J. M. Bredt*  
REV V SAMPA BREDT  
GENERAL SECRETARY

C.C. Rev Ursula Hecker  
India Desk





Dr. M. Bage

Eingegangen

16. Feb. 1995

Erledigt: .....

Gurukul Lutheran  
Theological College  
94 Purasawalkam High Road  
Kilpauk  
Madras 600 010

8.2.1995

Rev. Ms Ursula Hecker  
Secretary for India  
Gossner Mission  
Fennstraße 31  
D-12439 Berlin  
Germany

Dear Mrs. Hecker,

Your letter of Jan. 20, 1995 was received here on 30th January. I appreciate Gossner Mission's plan to publish a special issue of Gossner magazine to participate in the 150th Jubilee celebration. I accept this work you are giving me and I hope that I may be able to send you the article through Dr. Roeber. I will meet him either at Ranchi or Gurukul.

Yesterday I also received a letter from Rev. Dierk Hansen from Dortmund. The letter mentions that they are members of the group you or Rev. Hecker is organising to visit India in April and that they on their way from Mangalore to Calcutta would like to stop at Gurukul on 6th April to 7th and leave on 8th morning. Although I will not be here at that time, I will certainly have arranged for their stay, with Gurukul people.

In the meanwhile, I am expecting from you the number of visitors (men and women) who will be at Govindpur on April 18-20, 1995.

With best regards,

Yours sincerely,

*M Bage*  
(M. BAGE)

हवाई पत्र  
Aerogramme



Rev. Ms Ursula Hecker  
Secretary for India  
Gossner Mission  
Fennstraße 31  
D-12439 Berlin  
GERMANY

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

भेजने वाले का नाम और पता:-  
Sender's Name and Address:-

Dr. M. Bagn, General Secy. G.M.  
94, Purasawalkam Bypass Rd.  
Kilpauk, Madras - 10

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये  
No Enclosures Allowed

600010  
INDIA

पहला मोड़ FIRST FOLD

größten Kohle- und Erzvorkommen liegen. Was die traditionelle Hindugesellschaft in Jahrtausenden nicht geschafft hat, nämlich die Adivasi zu entwurzeln, hat die moderne Zivilisation und Wirtschaft in verheerendem Maße begonnen. Ganze Landstriche werden umgesiedelt, die traditionelle Dorfgemeinschaft zerstört. Die Kirche muß sich mit großen sozialen Problemen und mit einer ihr unbekannten technisierten Welt auseinandersetzen. Für die Gossner Kirche ist es wichtig, Kontakte nach außen zu pflegen, damit sie kritische Bestärkung erhält auf ihrem Weg und Erfahrungen von anderen Kirchen fruchtbar machen kann.

Die direkte Einladung zum Jubiläum wird von der Gossner Kirche selbst noch ausgesprochen. Die Gossner Mission - wissend, daß in Deutschland Termine Monate vorher geplant werden - wollte Ihnen den Zeitraum des Jubiläums auf diesem Wege mitteilen, damit Sie sie bei Ihren Planungen berücksichtigen können und vorüberlegen, wer von der Kirchenleitung eventuell an den Feierlichkeiten teilnehmen kann. Die Gossner Mission ist auch bereit, zusammen mit der Gossner Kirche ein mehrtägiges Programm zu planen. Es wäre schade, wenn Besucher von hier nur die Erfahrung der großen Feierlichkeiten in Ranchi mit nach Hause nähmen und nicht einige Landgemeinden besucht hätten.

Mit freundlichen Grüßen, auch von der Indienreferentin Ursula Hecker,

*Dieter Hecker*

(Dieter Hecker)  
Direktor



Fennstraße 31  
D-12439 BerlinTelefon  
030/6317809  
Telefax

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

An die  
Leitung der Evangelischen  
Kirche von Westfalen  
z.Hd. Herrn OKR Dr. Ulrich Beyer  
Altstädter Kirchplatz 5

33602 Bielefeld

Berlin, d. 7.11.1994

Betr.: 150jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran  
Church in Chotanagpur und Assam

Sehr geehrte Damen und Herren!

Am 2. November 1845 kamen vier Missionare nach Ranchi in Chotanagpur, dem jetzigen Zentrum der Gossner Kirche. Sie waren von Johannes Evangelista Gossner in Berlin ausgesandt, um "die Liebe Christi zu verkündigen mit der Hände Arbeit". Ursprünglich war ihr Plan, nach Burma weiterzureisen. In Calcutta überzeugten Adivasi, die Ureinwohner Indiens, die vier Deutschen, daß sie nach Chotanagpur in Südbihar kommen sollten, um dort den Menschen nicht nur das Evangelium zu predigen, sondern sie auch zu unterstützen in ihrem Kampf gegen Unterdrückung und Ausbeutung, gegen Feudalherren und Kastenhindus.

Aus diesen Anfängen ist eine große Kirche gewachsen, die fast ausschließlich aus Ureinwohnern besteht und schon früh - 1919 - ihre Autonomie erreicht hat. Über die Gossner Mission hat sie immer Kontakt zu Deutschland gehalten. In den letzten Jahrzehnten entwickelte sich aber immer mehr eine Partnerschaft zu verschiedenen deutschen Kirchen, zu denen auch Ihre Landeskirche gehört.

Nächstes Jahr, vom 31. Oktober bis 2. November 1995, feiert die Kirche ihr 150jähriges Jubiläum. Dazu lädt sie auch Freunde und Partner aus der Oekumene ein und würde sich über eine Beteiligung der Evangelischen Kirche von Westfalen sehr freuen.

Die Kirche hat sich gerade in den letzten Jahrzehnten mit großen Problemen zu beschäftigen. Um ihre Identität bewahren zu können, waren die Adivasi vor den arischen Einwanderern in den Dschungel der Berge geflüchtet. Dort konnten sie bis nach der Unabhängigkeit Indiens ein relativ ungestörtes Leben führen. Jetzt hat sich herausgestellt, daß gerade in ihrem Gebiet die

Einladung

New Light Life Center

14. Feb. 1995

Govindpur.

Erledigt: ..... Date - 7/2/95.

Respected Mrs. Hecker,

Our Jeshu Sahai to you.

You are gladly informed that the decesion has been taken for Celebrating the Descenial Jubilee of the New Life Light Center on this occasion all of you are welcomed.

In this occasion you are requested to participate with your group according to the invitation letter.

Also you are requested to inform us in advance the total number of male and female participants.

You would get a letter from Dr. Bage regarding Jubilee Celebration.

With best wishes.

Again Yeshu Sahai.

Yours

S. Bhengra.

*S. Bhengra*

*N. L. L.*

*Govindpur.*

## NEW LIFE LIGHT CENTRE, GOVINDPUR

Jan. 5, 1995

To

Mrs. D. Hecker

Secretary, Gossner Mission

Hennstr. 31

GERMANY.

### INVITATION

Dear Sir / Madam :

On behalf of the NEW LIFE LIGHT CENTRE, GOVINDPUR I hereby take pleasure in extending an invitation to you to participate in the FIRST DESCENNIAL CELEBRATION of the New Life Light Programme, Govindpur to be held on April 18—20, 1995 at Govindpur. For necessary information in this regard please see on its back.

MAY THE NAME OF THE LORD BE PRAISED

Yours Sincerely,

Dr. M. Bage

Director

New Life Light Centre  
Govindpur



(Jan. 2, 1995)

### Celebration Programme

Dates : April 18 - 20, 1995

Place : G. E. L. Church Govindpur

April 15, Saturday Evening : Arrival of Foreign guests

April 17, Monday Evening : Arrival of Ex-students

April 18, Work-Camp at New Life Light Centre

April 19, Wednesday : Seminar

April 20 Forenoon — Thanks giving Service,

Afternoon — Sabha (Gathering)

April 21, Friday : Departure after break fast

MAY THE NAME OF THE LORD BE PRAISED

Yours sincerely,

Dr. M. Bage

Director

New Life Light Centre

Govindpur

**Please note :**

1. Detail programme will be available after arrival.
2. Travelling expenses to be met by the participants themselves.
3. Any donation to meet the Celebration Cost will be thankfully received by the N. L. L. Treasurer, Rev. A. B. Surin, Govindpur.
4. For any additional information required please write to Rev A. B. Surin, G E L Church Govindpur, At & P. O. Govindpur, Dt. Ranchi Bihar (INDIA) Pn. 83 5234
5. Each participant is requested to fill up the form below and return to Rev. A. B. Surin on address mentioned above.

Name : Rev. / Mr. / Miss / Mrs.....

Address : .....

Arriving Govindpur on..... th April.....

from.....by train / bus (Strike off if not required)

Leaving Govindpur on ..... th April .....

for.....by train / bus (Strike off if not required)

Place.....Date .....

Signature

## NEW LIFE LIGHT CENTRE, GOVINDPUR

Jan. 5, 1995

To

### INVITATION

Dear Sir / Madam :

On behalf of the NEW LIFE LIGHT CENTRE, GOVINDPUR I hereby take pleasure in extending an invitation to you to participate in the FIRST DESCENNIAL CELEBRATION of the New Life Light Programme, Govindpur to be held on April 18—20, 1995 at Govindpur. For necessary information in this regard please see on its back.

MAY THE NAME OF THE LORD BE PRAISED

Yours Sincerely,

Dr. M. Bage

Director

New Life Light Centre  
Govindpur



Jan. 2, 1992

To

## Celebration Programme

Dates : April 18 - 20, 1995

Place : G. E. L. Church Govindpur

April 15, Saturday Evening : Arrival of Foreign guests

April 17, Monday Evening : Arrival of Ex-students

April 18, Work-Camp at New Life Light Centre

April 19, Wednesday Seminar

April 20 Forenoon - Thanks giving Service,

Afternoon - Sabha (Gathering)

April 21, Friday : Departure after break fast

MAY THE NAME OF THE LORD BE PRAISED

Yours Sincerely,

Dr. M. Bage

Director

New Life Light Centre

Govindpur

**Please note :**

1. Detail programme will be available after arrival.
2. Travelling expenses to be met by the participants themselves.
3. Any donation to meet the Celebration Cost will be thankfully received by the N. L. L. Treasurer, Rev. A. B. Surin, Govindpur.
4. For any additional information required please write to Rev A. B. Surin, G E L Church, Govindpur, At & P. O. Govindpur, Dt. Ranchi, Bihar (INDIA) Pn. 835236
5. Each participant is requested to fill up the form below and return to Rev. A. B. Surin on address mentioned above.

Name : Rev. / Mr. / Miss / Mrs.....

Address : .....

Arriving Govindpur on..... th April.....

from.....by train / bus (Strike off if not required)

Leaving Govindpur on ..... th April .....

for.....by train / bus (Strike off if not required)

Place.....Date .....

Signature

Nürnberg, 11. II. 95

Helmuth Proebke.  
Sillhütstr. 6  
90480 Nürnberg  
Sillhütstr. 6



Liebe Frau Fleckert!  
Gut geht. Komme ich dann, Ihnen auf  
Ihren Brief vom 23. 1. 95 eine schriftl.  
liebe Antwort zu geben  
Telefonisch habe ich bereits meine  
Betrübsung mitgeteilt.  
Es bleibt dabei, daß ich leider nach  
Berlin und Indien zu den Feiern nicht  
kommen kann.  
Die Ursache für meine Betrübsung  
liegt in der rheumatischen  
Krankung. Bei Arbeitsmüdigkeit,  
jede schriftliche Tätigkeit aufzugeben.  
Für alle Vorkehrungen zu dem  
Jubiläum wünsche ich Ihnen viel  
Kraft und Gottes Segen.  
Mit herzlichem Grüssen an Sie  
und Ihren Mann bin ich  
Ihr  
Helmuth Proebke.



Frau Flecker,

Herr Pastor Bonetta mit an.

Er kann an der Indienreise und am Berlin-Treffen  
wegen seiner Schwerhörigkeit nicht teilnehmen.

Auch ist ~~es~~<sup>es</sup> ihm aus gesundheitlichen Gründen (Rheuma  
im Arm, der Aral empfahl ihm, nicht zu schreiben)  
nicht möglich, die Arbeit zu schreiben.

Koranschuck

# *Gossner-Mission in der DDR*

1195 Berlin,  
Rodelbergweg 6  
Ruf 6328077

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
**030/6351198**

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Herrn  
Helmuth Borutta  
Schlüterstr. 6

90480 Nürnberg

23.1.1995

Lieber Herr Borutta,

das 150jährige Jubiläum der Gossner Kirche ist für uns Grund zum Feiern und Dankbarsein, aber auch Grund zum Überdenken all der Versäumnisse und Fehler, die in der Vergangenheit passiert sind. Vielleicht hilft das, für die Zukunft neue Wege zu finden.

Wie ich Ihnen schon am Telefon gesagt habe, planen wir eine Jubiläumsausgabe unserer Zeitschrift. Die Gemeinden in Deutschland sollen möglichst anschaulich über die Gossner Kirche informiert werden. Dazu gehört die Geschichte der Kirche, aber auch das Umfeld, in dem die Kirche lebt - heute und früher. Deshalb möchte ich Sie bitten - und wer wüßte da besser Bescheid als Sie - über die sozialen Probleme und Bewegungen in der Vergangenheit etwas zu schreiben. Es sollte nicht so sehr innerkirchlich orientiert sein, sondern die Adivasigesellschaft im ganzen im Auge haben.

Sie können sich vorstellen, daß der Platz für einen solchen Artikel in einem Jubiläumsheft begrenzt ist. Zwei DIN A4-Seiten stehen Ihnen zur Verfügung. Wir wären Ihnen auch dankbar, wenn Sie uns bis zur 1. März-Woche diesen Artikel zusenden könnten. Haben Sie ganz herzlichen Dank!

Ihnen und Ihrer Frau wünsche ich Gottes Segen, möge er Ihnen beiden weiterhin Gesundheit schenken, daß Sie auch in Zukunft aktiv sein können. Alles Gute und herzliche Grüße, auch von meinem Mann, der gestern aus Zambia zurückgekehrt ist.

Ihre

(Ursula Hecker)  
Indienreferentin

P.S. Ich schicke Ihnen noch ein Inhaltsverzeichnis der geplanten Ausgabe mit, damit Sie sich an den anderen Themen orientieren können.



Gossner Zeitschrift 1995

1 Sonderausgabe anlässlich des Jubiläums der Gossner Kirche, englische Fassung der Ausgabe.

Auflage: 6000 Exemplare

Erscheinungsdatum: August/September 95

Titel: "Die indische Gossner Kirche in Chotanagpur und Assam"

**Inhalt:**

Grußwort:

Dr. G. Krusche

Grußwort:

CS. R. Topno

Vorwort:

D. Hecker

Einleitung:

U. Hecker

**Chotanagpur u. seine Menschen - gestern und heute**

Die Adivasi-  
traditionelle Stammesgesellschaft,  
Kultur und Religion

N. Minz

Soziale Bewegungen  
unter den Adivasi

A. Borutta

Soziale Bewegungen in der Gegenwart  
in Chotanagpur

W. Jakob

Die Rolle der Frau in der Adivasi-  
Gesellschaft

Rosi Kerketta

**Mission in Chotanagpur und Assam**

Geschichte der Mission in Chotanagpur

Dr. K. Roeber

Heutige Missionsarbeit in Chotanagpur

Dr. P. Singh

Die Arbeit einer Missionarin in  
Chotanagpur

I. Martin

Geboren in Assam - Martin Gohlke

M. Gohlke

**Die Gossnerkirche in Indien**

Die Gossnerkirche heute

Dr. Bage

Die Gossnerkirche im Konzert der  
lutherischen Kirchen in Indien

Rajaratnam

Frauen in der Gossnerkirche

Guria

Christus bekennen in der modernen  
Industriewelt Indiens

B. Krause

Neue Herausforderungen an die Gossener  
Kirche und die Gossener Mission

Dr. H. Grothaus

Die Gossener Kirche und ihre ökumenischen  
Partner

Erfahrungen in ökumenischen Beziehungen  
am Beispiel der indischen Gossner  
Kirche mit der Lippischen Landeskirche

Schmelter

Partnerschaft mit der Gossner Kirche  
und Gemeinden der ehemaligen DDR

E. Schülzgen

Anhang:

ehemalige deutsche Missionare in der indischen  
Gossner Kirche (Liste mit Fotos)  
Missionsgeschichte in Indien (ein Überblick)

Missionsstationen in Chotangpur (Karte)

Redaktionsschluß: 28.2.95

Artikellänge: 210 Zeilen 43 Anschläge (mit Bildmaterial entspricht das 4  
Seiten in der "Biene")

Bitte an die Autoren u. Autorinnen:

Wir wären sehr dankbar, wenn Sie - soweit vorhanden - Bildmaterial ihrem  
Beitrag beilegen würden, sowie die Artikel mit einem kurzen Vorspann und  
Zwischenüberschriften (etwa 6 pro Artikel) versehen würden.

Jubiläum 1. Brief (Ablage)



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax

030/6361198

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Herrn  
Helmuth Borutta  
Schlüterstr. 6

90480 Nürnberg 30

16.1.1995

Lieber Herr Borutta,

das Jahr 1995 wird ein aufregendes Jahr für die indische Gossner Kirche - nicht nur, daß es den Anschein hat, als könnte in diesem Jahr die GEL-Kirche und die NWGEL-Kirche wieder vereinigt werden und nach einer neuen Verfassung im Herbst die Kirchengremien wählen, es sind auch am 2. November 150 Jahre, seit die ersten deutschen Missionare in Ranchi angekommen sind.

Jahr für Jahr hat die Kirche dieses Datum als ihr Gründungsdatum gefeiert. Und Sie können sich vorstellen, daß sie das in diesem Jahr besonders und mit viel Freude tun will.

Zu einem Fest lädt man Freunde und Gäste ein. Die Gossner Kirche hat eingeladen - die offiziellen Vertreterinnen und Vertreter der mit ihr verbundenen Kirchen, die Gossner Mission, Freunde, die ihr auch in schwierigen Zeiten die Treue gehalten haben, und all die Mitarbeiterinnen und Mitarbeiter, die mit ihrer Arbeit in Indien ein Stück Geschichte der Kirche mitgestaltet haben.

Es soll ein großes, ein frohes Fest werden, zumal auf jeden Fall gesichert ist, daß das Jubiläum gemeinsam gefeiert wird, selbst wenn sich für die Vereinigung der Kirche bis zu diesem Zeitpunkt noch Schwierigkeiten ergäben.

Natürlich wissen die indischen Gastgeber auch, daß es nicht allen Eingeladenen möglich sein wird zu kommen, aber über eine große Zahl würden sie sich freuen.

Wir in der Gossner Mission haben uns angeboten, die Vorbereitungen zu koordinieren und zu unterstützen. Und deshalb dieser Brief an Sie. Könnten Sie sich vorstellen, in der Zeit des Jubiläums (Mitte Oktober bis 5. November 1995), die Gossner Kirche zu besuchen? Wenn ja, organisieren Sie Ihren Besuch selbst oder sind Sie an einer Organisation durch die Gossner Mission interessiert?. Wollen Sie dann einzeln oder in einer Gruppe reisen? Welche Orte und Projekte wollen Sie auf jeden Fall besuchen?

Wenn Sie uns bis Anfang Februar Ihre Vorstellungen mitteilen könnten, wäre ich Ihnen sehr dankbar.

Es tut mir leid daß wir Ihnen keinen finanziellen Zuschuß zu einer möglichen Reise zusagen können. Ich hoffe, Sie verstehen das.

/2



Falls Sie nicht nach Indien reisen können, haben Sie Gelegenheit, auch in Deutschland an dem Jubiläum sich erinnernd teilzunehmen. Die Gossner Kirche bedarf in diesem Jahr besonders unseres fürbittenden Gedenkens, und für viele Christen in der Gossner Kirche ist dieses Wissen um unsere Gebete eine Quelle der Kraft und Hoffnung. Und wir wollen auch miteinander feiern. Wir planen eine Veranstaltung in Berlin an dem Wochenende 6.-8. Oktober 1995 in Berlin. Es wäre gut, wenn Sie uns Ihr Interesse daran schon bald anzeigen könnten. Näheres würde ich Ihnen dann mitteilen, wenn wir konkreter geplant haben.

Im Juni wird auch eine Sondernummer unserer Zeitschrift erscheinen, die sich mit dem Jubiläum beschäftigt.

Für das gerade begonnene Jahr wünsche ich Ihnen Gottes Segen, viel Freude und Gesundheit, vielleicht werden wir uns in Indien treffen können.

Mit freundlichen Grüßen

Ihre

(Ursula Hecker)  
Indienreferentin







## Evangelisches Missionswerk in Deutschland

Association of Protestant Churches and Missions in Germany



EMW • Normannenweg 17-21 • D-20537 Hamburg

Frau  
Ursula Hecker  
Gossner Mission  
Fennstr. 31

12439 Berlin

Eingegangen

- 6. Nov. 1995

Erledigt:.....

• ☎ (040) 2 54 56- 175

• Az Re. ROE/el

• Datum Date 02.11.95

Liebe Frau Hecker!

Vielen Dank für die Einladung zum Arbeitskreis Indien am 9.11.95. Ich werde kommen und freue mich auf die Berichte vom Jubiläum in Ranchi. Ich schicke Ihnen auch die beiden Grußworte, die das EMW nach Ranchi geschickt hat, für Ihre Unterlagen als Kopie heute mit.

Eigentlich müßte ja auch Ihre Dienststelle ein Grußwort erhalten, denn Sie sind ja eine Mitgliedorganisation des EMW, deren Freuden und Schwierigkeiten wir hier mitbedenken. Bei der Gossner Mission, die ja nicht als regionales Missionswerk nur mit einer Landeskirche arbeitet, ist diese wechselseitige Anteilnahme zwischen Dachorganisation und Mitgliedwerk auch immer besonders wichtig.

Wir stoßen tatsächlich immer wieder auf Spuren der Mitarbeiter Ihres Werkes bei den Diensten in den anderen Werken und Regionen. Ich sehe auch einen Verdienst der Gossner Mission darin, daß nicht nur der Weg vom Missionsfeld zum Kirchengebiet durch die Gossner Missionare so zielstrebig bedacht und getan wurde. Auch bei der Gestaltung der Theorie und Praxis von Partnerbeziehungen sind von Ihrer Seite immer wieder wichtige Impulse gekommen. Diese Kompetenz möge Ihrem Werk und den Mitarbeitern erhalten bleiben.

Wir haben uns daran freuen können, als Sie vom 6. - 8. Oktober 1995 Freunde, Mitarbeiter und Gäste nach Berlin eingeladen hatten. Solche Begegnungen sind wichtig in einer Zeit, in der über Recht und Unrecht unserer missionarischen Bemühungen gerungen wird. Sie haben daran als Gossner Mission, nicht erst seit der Eröffnung des Missionsfeldes in Indien vor 150 Jahren, einen hohen Anteil. Sie werden uns alle daran gewiß erinnern, wenn mit dem 16.12.1996 der Tag zum 160. Male wiederkehrt, als einige junge Männer den Pastor J. E. Gossner drängten, daß er sie vorbereiten und aussenden möchte. Er hat seine Tür und viele Tore

aufgemacht. Die traurige alte Frau vor der verschlossenen Kirchentür, Titelbild für Ihre Jubiläumszeitschrift "150 Jahre Gossner Kirche in Indien" - regt an darüber nachzudenken, wie Kirche ohne Mission ist. Wir hoffen, daß Sie und Ihre Mitarbeiter mit solchen kritischen Anfragen durch Bilder und Worte in der EMW Gemeinschaft wirksam bleiben.

Herzliche Grüße,

Ihr

*Klaus Roeber*

Dr. Klaus Roeber  
(Referat Asien / Mittlerer Osten)

**Evangelisches Missionswerk**  
Association of Protestant Churches and Missions  
in Germany

Normannenweg 17-21 D-20537 Hamburg, FAX: 040-254 29 87  
TEL.: 040-254 56-175

**T E L E F A X**

Fax No.: 00 91-651-3 17 49 70  
An / To : Gossner Evangelical Lutheran Church in  
Calota Nagpur and Assam, KSS-Office  
z. Hd./Attn.: Rev. CSR Topno  
Von / From : EMW, Herbert Meissner and Dr. Klaus Roeber  
Datum / Date : 01.11.95

Seitenanzahl/Number of pages : 2

Dear Brother President Topno,

We greet you in the name of our Lord and Saviour Jesus Christ. We appreciate your invitation to participate in the celebrations to remember the arrival of the four German missionaries in Ranchi 150 years ago. Unfortunately, we are not able to come to India, therefore please accept our greetings and good wishes in writing.

Since their arrival the people of Chotanagpur accepted the messengers of the Gospel from different parts of Germany. So many of our congregations and missionboards are aware of Pastor Johannes Evangelista Gossner and of the missionaries, who in obedience to our Lord Jesus Christ were ordained and sent by Pastor Gossner and following directors of Gossner Mission. Your own evangelists, catechists, teachers and pastors, Bible women and many helpers were and are able to preach and to teach the Gospel in your own languages and in their own responsibility, because their hearts were converted to the grace of Jesus Christ. That's also the reason, that Gossner's name is still remembered. His understanding in mission was, that the whole church is involved in mission to develop the human resources deeply to fulfil the great task that there is more justice, more peace and integrity of the creation in church and in the society. We pray to God, that He may give your Church wisdom and empowerment for all your tasks and responsibilities, which have been vested in you after the changes from a German missionsfield into an autonomous Gossner Church. We pray for our brothers in the new leadership positions to find a common way in witness and service.



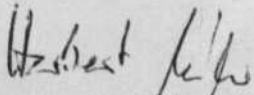
We are glad with you and praise the Lord, that he has given many gifts, talents, cultures and challenges to the Adivasi and all the people in India. This is an encouragement for us, because it not only preserves a great heritage, but also presents tremendous opportunities to participate in shaping church and society.

Our task as Association of Protestant Churches and Missions in Germany is to find a way for all our members to stay united in mission. On that way we are also connected with your church and churches and interdenominational church organizations in Chotanagpur.

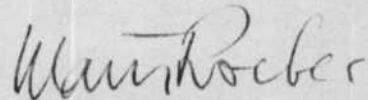
Together with you they celebrate your jubilee. We greet you, your church and your guests with the Watchword of the Bible of the 1st of November, 1995:

"You are the source of all life, and because of your light we see the light." (Ps. 36,9)

Yours sincerely,



Herbert Meissner  
Director



Dr. Klaus Roeber  
(Asia / Middle East Desk)

**Evangelisches Missionswerk**  
Association of Protestant Churches and Missions  
in Germany

Normannenweg 17-21 D-20537 Hamburg, FAX: 040-254 29 87  
TEL.: 040-254 56-175

**T E L E F A X**

Fax No.: 0091-651-20 24 71  
An / To : NW-GEL-Church  
z. Hd./Attn.: Bishop Dr. Nirmal Minz  
Von / From : EMW, Herbert Meissner and Dr. Klaus Roeber  
Datum / Date : 01.11.95

Seitenanzahl/Number of pages : 2

Dear Bishop Dr. Minz and all members of the Northwest-GEL-Church!

You sent us an invitation to participate in the celebrations commemorating the beginning of evangelization in Chotanagpur 150 years ago. There are different reasons that we are not able to send a member of our organization to follow your invitation. Therefore we send a letter to you to express and to strengthen our connection.

In the beginning of this event there was one tent and long five years later the first Oraon-Adivasi was baptized. Continuously the Gospel spread out and finally there were different churches confessing Christ in many denominations among the people and ethnic groups in Chotanagpur. We praise God, our Lord and Creator who has given wealth and abundance of cultures and characters to the people of India. But the Lord has also given us a vision of unity of all Christians and churches in witness and service.

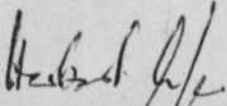
As Chairman of the Adivasi-Delegation you told us during your visit in EMW how you struggle for justice, peace and integrity of creation in Chotanagpur and India as a whole in solidarity with the Adivasi-People. In this struggle we want to support you.

You know, that our churches and missions were divided during the area of the Cold War into East and West. But the "Ecumenical Programme for Justice, Peace and Integrity of Creation and Liberation" helped us in the past but also today to find our way as churches together. With these experiences we might help you in your service with ecumenical fellowship and Adivasi-Solidarity. Therefore it was very important that you visited our Association here in Hamburg for which we thank you so much.

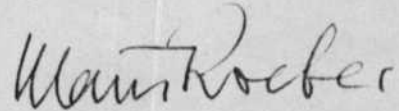
Please convey our greetings to your guests during the celebration days. For this month of November Christians and churches in Germany find guidance in the Watchword for this month written in the Bible (Nahum 1,7): "The Lord is good; He protects his people in times of trouble; He takes care of those who turn to him."

We greet you with this Watchword and wish you and the Christians in Chotanagpur, that God's blessings and His guidance be with you and all the people, who are committed to the spiritual and material growth of your communities.

Sincerely yours



Herbert Meissner  
Director



Rev. Dr. Klaus Roeber  
(Asia / Middle East Desk)



Die meisten der Kirchenmitglieder leben außerhalb der indischen Kastengesellschaft

In Berlin wird an 150 Jahre Predigt des Evangeliums in Chotanagpur erinnert

Berlin (epd). An 150 Jahre Predigt des Evangeliums in der indischen Region Chotanagpur will die Gossner Mission am 6. Oktober in Berlin erinnern. Der Berliner Oberkonsistorialrat Eckhard Schülzgen werde während der Jubiläumsveranstaltung die Festansprache halten, teilte der Direktor der Gossner Mission, Dieter Hecker, am Montag mit. Eine Agapefeier schließe sich an. In Indien werde das Jubiläum vom 31. Oktober bis 2. November gefeiert.

Am 2. November vor 150 Jahren trafen die ersten vier Missionare der Gossner Mission auf dem Hochplateau von Chotanagpur ein. Sie schlugen ihre Zelte in Ranchi im heutigen Bundesstaat Bihar auf. Heute zählt die aus der mühevollen Arbeit unter den Adivasi in Nordindien, den dortigen Ureinwohnern, entstandene Evangelisch-Lutherische Gossner Kirche in Chotanagpur und Assam (GELC) insgesamt mehr als 400.000 Mitglieder. Sie ist damit eine der größten der neun lutherischen Kirchen Indiens. Die meisten der Kirchenmitglieder seien auch heute noch Adivasi, die außerhalb der indischen Kastengesellschaft leben. Die Kirche wurde 1919 selbständig und damit die erste autonome protestantische Kirche in Indien.

Sie blicke auf ein Leben zurück, das getragen gewesen sei von "tiefer Frömmigkeit, bewegt durch gesellschaftliche und soziale Herausforderungen und den Schwierigkeiten, verschiedene Traditionen und Lebensmuster in einer Kirche zu integrieren", betont Hecker. Die 150jährige Geschichte der Kirche sei geprägt vom Kampf gegen Armut und Unterdrückung, gegen das Vergessenwerden bei der Entwicklung und der Erneuerung der indischen Gesellschaft.

Seit dem Zweiten Weltkrieg haben aus Deutschland nur noch einige Experten in Entwicklungsprojekten und Theologen am Theologischen College der Evangelisch-Lutherischen Gossner Kirche in Chotanagpur und Assam mitgeholfen. Zur Zeit seien keine deutschen Mitarbeiter in Indien. Seit 1969 erhalte die Kirche von außen keine Mittel für den allgemeinen Haushalts. Allerdings würden vor allem die Arbeit von etwa 200 indischen Gossner-Missionaren und einige Entwicklungsprojekte der Gossner Kirche finanziell von der Gossner Mission unterstützt. Nur 2,6 Prozent aller Inder sind Christen. Ein Vertreter der Gossner Kirche ist Mitglied im Kuratorium der Gossner Mission. Die Gossner Mission vermittelt die Partnerschaft zwischen sieben Landeskirchen in Deutschland und der Gossner Kirche, wobei eine besonders intensive Beziehung zur Evangelischen Kirche in Berlin-Brandenburg besteht. Gegenseitige Besuche zwischen Gemeinden und Christen in Indien und Deutschland bildeten die Grundlage für eine weltweite ökumenische Gemeinschaft.

Von der vor allem aus Angehörigen des Munda-Volkes bestehenden GELC hat sich vor 20 Jahren die ebenfalls evangelisch-lutherische Nord-West Gossner Kirche (NWGELC) abgespalten. Sie bestehe

überwiegend aus Orauns. Bemühungen zur Überwindung der Spaltung seien im Gange, betont Recker.

(Die Jubiläumsveranstaltung findet im Elisabeth Diakonissen- und Krankenhaus in Berlin-Tiergarten, Lützowstraße ....., statt. Beginn 19.30 Uhr).





Siehe Hecker!

1. X. 95

Es tut uns sehr nicht am Gedenktag  
am 6. X. teilnehmen zu können. Unser beider  
Gesundheitszustand ist schon seit Wochen  
nicht vom besten. So schreiben wir einen Grupp-  
brief, den Sie nach Gutdünken gebrauchen können.

Persönlich möchten wir Ihnen für alles Gedankens-  
mit mündlichen und schriftlichen Grüßen,  
herzlich danken: aus Indien u. St. Petersburg.  
Dass in dieser Stadt der Gossner-Segen deutsch ge-  
sungen wird, hat uns sehr erfreut.

Als ich vor Jahren in Moskau bei den „Evan-  
geliumskristen“ eine Ansprache halten durfte,  
wurden wir nach unserer Herkunft gefragt.

Als sie Berlin hörten, fragten Sie nach Gossner,  
denn seine Predigten und Gedanken wären  
damals von St. Petersburg bis nach Moskau gedrun-  
gen, hätten sie erfreut und gestärkt und seien  
bis jetzt unvergessen.

Wenn Sie nun nach Indien fahren, nehmen  
Sie unsere Segenswünsche mit und erzählen  
nach Rückkehr Ihre Erfahrungen. 1969 konnten  
wir noch dabei sein und können Sie tiefen Ein-  
drücke nicht vergessen.

Ihnen beiden, auch an Paulus und Siew  
herzliche Grüße u. Gott befehlen! Ihre Gossner



Martin Gohlke

Zum 150. Gedenktag: 6.10.1995  
der Gossner Mission

Allen Schwestern und Brüdern, den Gossner-  
geschwistern, aus Ausland und Inland  
Gott zum Gnuß und den gekreuzigten und Auf-  
erstandenen Heiland Jesus Christus zum Trost.



"Wir danken Gott, sooft wir Erer gedenken" daß Gott  
durch Vater Gossner ein Werk des Heils und der Heilung  
in Deutschland und Übersee angefangen und bis  
heute gesegnet hat.

Es ging in diesen 150 Jahren durch manzhe Strung  
und Wirrung, Not und Enttäuscherung, aber auch  
Rettung der Güte Gottes

An solchem Erleben hat unsere Familie seit  
100 Jahren teilgenommen: Der Vater kam 1895  
nach Raj-Gangpur, erbaute aus eigenen Mitteln  
und denen der Mutter ein eigenes Haus. Sie wollten  
lebenslang als Zeugen des Evangeliums in Indien  
bleiben. Als das Haus fertig stand, wurden sie vom Raja  
vertrieben: über Chakra-charpur, Gola u.a. kamen sie  
mit geschädigter Gesundheit, bei des Erstgeborenen  
1904 nach Baitthalbhang: Pioniermission unter den  
Assami, Sammlung der aus Chota-Nagpur in die  
Teegärten eingewanderten Gastarbeiter der Munda.

Unter dem sehr belastenden Klima in Assam litt der  
Gesundheitszustand weiterhin.

Die lebensbedrohte Mutter mit werdendem Kind wurde  
für ein Jahr nach Deutschland geholt.

Auf den strapaziösen Reisen und Fußmärschen in Assam,  
Übernachtungen auf Erdboden in Sehhütten, verlor der  
Vater das Gehör.



Nach Ausbruch des Ersten Weltkrieges 1914 wurde die Familie getrennt. Vater wurde in das Stacheldraht umwehrte Gefangenenlager Ahmed-nagar gebracht, in dem er bis Ende 1916 bleiben musste.

Mutter blieb mit zwei Kindern unter sehr schwierigen Verhältnissen auf der Missionsstation zurück. Anfang November etwa 1915 wurde sie unter "Polizeischutz" mit Schiff auf dem Brahmaputra und Eisenbahn nach Calcutta gebracht, wo die "Golconda" aufnahmebereit lag.

Nach 9 Wochen Fahrt wurde London erreicht.

Durch Vermittelung des G R K (Rotes Kreuz) wurden wir über Holland nach Berlin zu Gossners gebracht.

1916 Am 9. März bekamen wir ein Domizil in Blasheim, das uns der Ortspfarrer Husemann, ein Freund der Familie, besorgt hatte.

Ehe das Jahr zuende ging, kam der Vater dorn. Der Dienst in Indien ging nun nicht weiter, aber ein Reisedienst, insbesondere in Nordwestfalen, erforderte Einsatz bis ins hohe Alter.

Die Liebe und Verbundenheit zur Gossner-Mission u. Kirche hat auch in der nachfolgenden Generation nicht aufgehört.

Gäste waren uns stets willkommen

Wir grüßen wir alle Gossner-Geschwister u. Freunde in Berlin, und wünschen Ihnen / Euch allen ein gutes Wiedersehen und gesegneten Osterlauf des Treffens. Bitte, nehmen Sie auch unsere Grüße und Segenswünsche mit nach Indien.

Unsere Fürbitte begleitet Sie auch fernhin.

Ihre Martin u. Margarethe Gossner

Marie-Elise Gründler  
Peter-Goessler-Str.7  
72076 Tübingen

Eingegangen

18. Sep. 1995

Erledigt: .....

15.9.95

Liebe Frau Hecker,

erst heute sende ich Ihnen meinen Reisepass mit 2 Fotos und dem ausgefüllten Formular zu.

Ich hatte einen neuen Reisepass beantragt, doch habe ich ihn bis heute noch nicht erhalten - nun sende ich Ihnen meinen alten zu. Es sind nur noch 2 leere Seiten darin, eine ist Nr. 14 und die andere auf Seite 30. Da ich nicht weiss, wie schnell ein Visumsantrag beantwortet wird, warte ich nicht länger auf den neuen Pass.

Von Sr. Ilse Martin werden Sie gehört haben, dass ich mich gern ihr und dem Ehepaar Jansen anschliessen möchte, die ja noch einen Abstecher nach Südindien geplant hatten. Somit wäre der Rückflug für mich auch noch offen. Sr. Ilse meinte ja, dass wir evt. von Bombay zurückfliegen könnten, so ihre Aussage, als ich noch vor ihrer Abreise nach Canada mit ihr sprach. Sr. Ilse meinte, dass wir wohl die 2. Alternative wählen würden! Ich würde dann wohl von Calcutta aus? - mit ihr und Ehepaar Jansen von dort nach Mangalore fliegen! Ich weiss nicht, ob Sie mit ihr noch etwas anderes "erarbeitet" hatten.

Ich gehe noch kurz auf Ihren Brief ein, z.T. hatte ich diese Dinge schon mit Sr. Ilse besprochen.

- Da Herr Senda, Fr. (Sr.) Ursula von Lingen-Sendas Mann, nicht mitfliegen wird, könnte ich wohl mit bei Daisy Hamron übernachten, so meinte jedenfalls Sr. Ursula.

- Die erwähnten DM 35,- für das Visum werden Sie mit auf die Rechnung setzen, nehme ich an.

- Ich würde gern einen Schlafsack in New Delhi kaufen.

Zum Visumsantrag;

Wie Sie sehen werden, habe ich für "ca 2 Mon." beantragt. Wenn es Visa für Touristen auch für 3 Mon. gibt, oft ist es so, dass sie gleich für 3 Mon. ausgeschrieben werden, dann würde ich diese Zeitspanne nehmen, da ich noch nicht weiss, ob ich anschliessend noch etwas in Amgaon bleiben werde. Dr. Anni Horo hatte mich ja vor längerer Zeit schon gefragt, ob ich das Labor noch etwas "modernisieren" könnte. Wegen der dortigen Stromschwankungen ist es sicher schwierig, ein kl. Photometer aufzustellen. Das lässt sich wohl erst nach Erkundigungen in anderen kl. Hospitals entscheiden, was es für Geräte in Indien gibt und ob man "Stromregler" oder dergl. dort dazu bekommt, Ersatzteile u.a.. Sie fragte, ob ich ein neues Mikroskop mitbringen könne! Ich werde es wahrscheinlich vom "Difam" erhalten.

Ich hoffe, dass ich die wichtigsten Punkte erwähnt habe. Ich werde mich Anfang Oktober nochmals mit Sr. Ilse in Verbindung setzen.

Mit herzlichem Dank im voraus für alle Erledigungen btr. unserer Reise und Grüßen aus Tübingen,

M. E. Gründler  
(M.E. Gründler)

b. v.

p.s. Eben Ihre Einladung z. 6.10. erhalten,  
Fr. von Lingen-Sendo w. ich werden  
Licht kommen! L. E. G.



H

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

An die  
Leitung der Evangelisch-  
Lutherischen Landeskirche Hannovers  
z.Hd. Herrn OLR Homann  
Rote Reihe 6

30169 Hannover

Berlin, d. 7.11.1994

Betr.: 150-jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran  
Church in Chotanagpur und Assam

Sehr geehrte Damen und Herren!

Am 2. November 1845 kamen vier Missionare nach Ranchi in Chotanagpur, dem jetzigen Zentrum der Gossner Kirche. Sie waren von Johannes Evangelista Gossner in Berlin ausgesandt, um "die Liebe Christi zu verkündigen mit der Hände Arbeit". Ursprünglich war ihr Plan, nach Burma weiterzureisen. In Calcutta überzeugten Adivasi, die Ureinwohner Indiens, die vier Deutschen, daß sie nach Chotanagpur in Südbihar kommen sollten, um dort den Menschen nicht nur das Evangelium zu predigen, sondern sie auch zu unterstützen in ihrem Kampf gegen Unterdrückung und Ausbeutung, gegen Feudalherren und Kastenhindus. Aus diesen Anfängen ist eine große Kirche gewachsen, die fast ausschließlich aus Ureinwohnern besteht und schon früh - 1919 - ihre Autonomie erreicht hat. Über die Gossner Mission hat sie immer Kontakt zu Deutschland gehalten. In den letzten Jahrzehnten entwickelte sich aber immer mehr eine Partnerschaft zu verschiedenen deutschen Kirchen, zu denen auch Ihre Landeskirche gehört.

Nächstes Jahr, vom 31. Oktober bis 2. November 1995, feiert die Kirche ihr 150-jähriges Jubiläum. Dazu lädt sie auch Freunde und Partner aus der Oekumene ein und würde sich über eine Beteiligung der Landeskirche Hannover sehr freuen.

Die Kirche hat sich gerade in den letzten Jahrzehnten mit großen Problemen zu beschäftigen. Um ihre Identität bewahren zu können, waren die Adivasi vor den arischen Einwanderern in den Dschungel der Berge geflüchtet. Dort konnten sie bis nach der Unabhängigkeit Indiens ein relativ ungestörtes Leben führen. Jetzt hat sich herausgestellt, daß gerade in ihrem Gebiet die

größten Kohle- und Erzvorkommen liegen. Was die traditionelle Hindugesellschaft in Jahrtausenden nicht geschafft hat, nämlich die Adivasi zu entwurzeln, hat die moderne Zivilisation und Wirtschaft in verheerendem Maße begonnen. Ganze Landstriche werden umgesiedelt, die traditionelle Dorfgemeinschaft zerstört. Die Kirche muß sich mit großen sozialen Problemen und mit einer ihr unbekannten technisierten Welt auseinandersetzen. Für die Gossner Kirche ist es wichtig, Kontakte nach außen zu pflegen, damit sie kritische Bestärkung erhält auf ihrem Weg und Erfahrungen von anderen Kirchen fruchtbar machen kann.

Die direkte Einladung zum Jubiläum wird von der Gossner Kirche selbst noch ausgesprochen. Die Gossner Mission - wissend, daß in Deutschland Termine Monate vorher geplant werden - wollte Ihnen den Zeitraum des Jubiläums auf diesem Wege mitteilen, damit Sie sie bei Ihren Planungen berücksichtigen können und vorüberlegen, wer von der Kirchenleitung eventuell an den Feierlichkeiten teilnehmen kann. Die Gossner Mission ist auch bereit, zusammen mit der Gossner Kirche ein mehrtägiges Programm zu planen. Es wäre schade, wenn Besucher von hier nur die Erfahrung der großen Feierlichkeiten in Ranchi mit nach Hause nähmen und nicht einige Landgemeinden besucht hätten.

Mit freundlichen Grüßen, auch von der Indienreferentin Ursula Hecker,

*Dieter Hecker.*

(Dieter Hecker)  
Direktor





Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Frau und Herrn  
Janssen  
Lambertshof 11

D-26603 Aurich

15. August 1995

An alle, die gerne an der Jubiläumsreise nach Chotanagpur teilnehmen wollen,

Liebe Frau Janssen, lieber Herr Janssen,

zunächst möchte ich mich dafür entschuldigen, daß Sie erst heute wieder etwas von mir hören. Aber durch Sister Ilse haben ja viele von Ihnen nähere Informationen bekommen. - Die Gossner Kirche freut sich über jeden Gast, der zu ihrem Jubiläum kommt. Ich will Sie zu dieser Reise ermutigen. Es kommen viele verschiedene Gruppen zu dem Fest. Ich habe versucht, so gut es geht, die individuellen Wünsche zu berücksichtigen und hoffe, daß Sie mit der Gesamtplanung einverstanden sind.

**Zunächst die Kosten:**

Sie werden mit DM 2.500,- Gesamtkosten rechnen müssen, wobei die Gossner Mission die Flüge Deutschland-Indien, New Delhi, Ranchi und die gewünschten Touristenprogramme für Sie bucht und vorfinanziert. Alle anderen Ausgaben müssen Sie mit Ihrer Gruppe in Indien regeln. Zum Jubiläum wird es nicht möglich sein, alle Besucherinnen und Besucher privat in der Gossner Kirche unterzubringen. Wir haben mit der Gossner Kirche abgesprochen, daß die Besucherinnen und Besucher, die im Hotel untergebracht sind, auch für die Kosten des Hotels in Ranchi aufkommen. Der Kirche ist diese finanzielle Belastung nicht zuzumuten, denke ich. Bei allen anderen Besuchen von Gemeinden und Institutionen sind Sie Gast der Kirche. Die Gemeinden freuen sich über ein Grußwort, eine Predigt, einen kleinen Beitrag über das Leben in Deutschland und vielleicht (aber durchaus nicht nötig) über eine kleine Aufmerksamkeit, wie ein schönes Foto Ihrer Heimatkirche, einen schönen Wandteller, Kalender oder ein Kreuz.

Die verschiedenen Gruppen:

Über die Gossner Mission haben wir zu verschiedenen Zeiten Gruppen geplant:

1.Seminargruppe:

vom 11.10.-4.11.95

Ursula Hecker  
Bernd Krause  
Gossner Mission

Uwe Wiemann  
Offizieller Vertreter  
der Lippischen Landeskirche  
Claudia Schwartz

2.Gruppe:

vom 25.10.-14.11.

evtl. auch bis 11.11.

Ilse Martin  
Ursula von Lingen  
Katharina Sinram  
Franziska Schultz  
Marlies Gründler  
Herr Jansen  
Frau Jansen  
Magdalene Straube?  
Hiltrud Zoll?  
Ansgar Kelber?  
Frau Kelber?

vom 28.10.-11.11.

oder 14.11.

Bettina Rohwedder?  
Monika Schutzka?

3.Gruppe:

vom 28.10.-11.11.95

Harald Lehmann  
Offizieller Beauftragter der Westfälischen Kirche  
Leit Lehmann  
Wilhelm Schultz

4.Gruppe:

vom 22.10.-11.11.95

Dieter Hecker  
Gossner Mission  
Dr. Günter Krusche  
Kuratoriumsvorsitzender und Vertreter der EKibB  
Margret Krusche  
Frau Schülzgen

vom 25.10.-9.11.95

Volker Jürgens  
Vertreter der Hannoverschen Landeskirche



Ich habe hoffentlich niemanden vergessen. In den verschiedenen Gruppen sind die Besucher erfaßt, die über die Gossner Mission die Reise planen. Es gibt noch einige, die privat den Besuch organisieren. Wir wissen von Frau und Herrn Seeberg und von Frau und Herrn Dr. Grothaus.

**Reisebedingungen:**

Ihr Reisepaß muß noch mindestens ein halbes Jahr vom Zeitpunkt der Reise an gültig sein.

Ich schicke Ihnen einen Visumsantrag mit, den Sie zusammen mit zwei Paßbildern und Ihrem Reisepaß entweder an das Ihnen nächst gelegene indische Konsulat oder bis zum 18. September an die Gossner Mission schicken. Das Visum kostet DM 35,-.

Als Geld für Ihre Reise sollten Sie auf jeden Fall traveller cheques einer international bekannten Bank mitnehmen (DM oder \$), Kreditkarten kann man in den großen Städten benutzen.

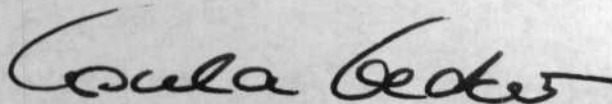
Die Gesundheitsvorsorge ist weitgehend eine Ermessenssache. Notwendig ist sicher eine Tetanusimpfung und Malariaprophylaxe. Zu empfehlen sind Impfungen gegen Kinderlähmung, Hepatitis und Meningitis. Eine Wasserflasche, in der Sie immer abgekochtes oder durch Micropur gereinigtes Wasser mitführen können, hilft Darmverstimmungen vermeiden. Fast lebensnotwendig ist auch eine Taschenlampe. Gut ist ein Jugendherbergsleinenschlafsack (den Sie aber auch in Neu Delhi beim deutschen Pfarrer kaufen können. Sie unterstützen damit noch ein Leprarehabilitationszentrum. Lassen Sie es uns wissen, wenn Sie daran Interesse haben).

Schon heute möchte ich Sie auch darauf aufmerksam machen (denn im Trubel des Feierns mag es vielleicht untergehen), daß Sie Ihren Rückflug unbedingt reconfirmen und bei der Rückreise noch 600/- Rs als Airporttax parat haben müssen.

Hinter manchen Namen in den Gruppen steht noch ein Fragezeichen. Bis 1. September sollten Sie uns verbindlich mitteilen, ob Sie an der Reise teilnehmen oder nicht. Für allgemeine Reiseinformationen stehen wir Ihnen oder vor allem auch Sister Ilse Martin, Jenaer Str. 20, 10717 Berlin, Tel. 030-8544660, zur Verfügung.

Wenn auch die Gossner Kirche und die Nord West Gossner Kirche aller Voraussicht nach bis zum Jubiläum nicht vereinigt sein werden, wird der Besuch in Indien bestimmt eine gute Erfahrung. Ich wünsche Ihnen viel Vorfreude für die Reise und grüße Sie herzlich

Ihre



Ursula Hecker  
Indienreferentin

Entwurf einer Reiseplanung nach gewünschten Angaben. Es gibt zwei Alternativen. Sie sollten anzeigen, welche der Möglichkeiten Sie bevorzugen. Wegen der Kürze der Zeit kann die Reise anstrengend werden. Falls Sie alle erst am 14.11. zurückfliegen könnten, wären noch ein paar Tage gewonnen.

25.10.95 ab Deutschland  
 26.10. Ankunft Neu Delhi  
 27.-29.10. Agra, Fatepur Sikri, Delhi  
 30.10. Flug nach Ranchi  
 31.10.-2.11. Offizielles Jubiläum in Ranchi

*/ Wahrscheinlich muß  
 man schon am  
 29. 10. nach  
 Ranchi fliegen*

#### 1. Alternative

3.11. Zugfahrt Ranchi-  
 Rourkela  
 Jeep nach Amgaon  
 4./5.11. Amgaon  
 6.11. nach Khuntitoli mit  
 Übernachtung  
 7.11. Takarma  
 Govindpur  
 Übernachtung  
 8.11. Govindpur  
 9.11. über Khunti nach  
 Ranchi  
 10.11. Ranchi - Delhi  
 11.11. Delhi - Deutschland

#### 2. Alternative

3.11. Takarma/Khuntitoli  
 Übernachtung  
 4.11. Fahrt nach Amgaon  
 5.11. Amgaon (mit  
 Gottesdienst)  
 6.11. Amgaon  
 7.11. Bhubaneshwar  
 8.11. "  
 mit Nachtzug nach  
 Calcutta  
 9.11. Calcutta  
 10.11. Flug nach Delhi  
 11.11. Delhi - Deutschland

17.9.1995

liebe Frau, lieber Herr Janßen,  
anbei der Rundbrief an alle  
Reisekonnexionsnehmerinnen und  
-konnexen. Ihr Flug ist  
vom 25.10. - 18.11. gebucht.  
Da ich ziemlich viel weg  
bin, hat die Sekretärin  
die ganzen Reiseunterlagen  
Da komme ich jetzt nicht  
daran. Ich habe noch Flüge  
für Sie nach Bombay und  
Rangaloc gebucht. Die ge-  
nauen Daten habe ich aber  
nicht im Kopf. Sobald ich  
wieder im Büro bin, werde  
ich Sie Ihnen mitteilen.  
Herzliche Grüße Ihre Gossner



Die verschiedenen Gruppen:

Über die Gossner Mission haben wir zu verschiedenen Zeiten Gruppen geplant:

1.Seminargruppe:

vom 11.10.-4.11.95

Ursula Hecker  
Bernd Krause  
Gossner Mission

Uwe Wiemann  
Offizieller Vertreter  
der Lippischen Landeskirche  
Claudia Schwartz

2.Gruppe:

vom 25.10.-14.11.

evtl. auch bis 11.11.

Ilse Martin  
Ursula von Lingen  
Katharina Sinram  
Franziska Schultz  
Marlies Gründler  
Herr Jansen  
Frau Jansen  
Magdalene Straube?  
Hiltrud Zoll?  
Ansgar Kelber?  
Frau Kelber?

vom 28.10.-11.11.

oder 14.11.

Bettina Rohwedder?  
Monika Schutzka?

3.Gruppe: vom 28.10.-11.11.95

Harald Lehmann  
Offizieller Beauftragter der Westfälischen Kirche  
Leit Lehmann  
Wilhelm Schultz

4.Gruppe: vom 22.10.-11.11.95

Dieter Hecker  
Gossner Mission  
Dr. Günter Krusche  
Kuratoriumsvorsitzender und Vertreter der EKIBB  
Margret Krusche  
Frau Schülzgen

vom 25.10.-9.11.95

Volker Jürgens  
Vertreter der Hannoverschen Landeskirche

Johann Janssen  
Lambertshof 11  
26603 Aurich

Gossner Mission  
z.Hd. Frau Becker

Fax Nr. 030-636 1498

Aurich, den 16.09.1995

Liebe Frau Becker,

Langsam rückt der Tag der Abreise nach Indien näher. Schwester Martin schreibt uns, daß Sie den Teilnehmern 2 Vorschläge unterbreiten wollen. Aus Ihren Briefen entnehme ich folgenden Ablauf:

|             |                          |                   |
|-------------|--------------------------|-------------------|
| 25.10.      | ab Zürich                | Uhrzeit?          |
| 25. - 30.10 | in Delhi                 |                   |
|             | in dieser Zeit nach Agra | mit Übernachtung? |

Wir (Ilse Martin, Marlies Gründler, Adelheid & Johann Janssen) möchten gerne in Agra die Herstellung von Specksteinarbeiten besichtigen, ein Projekt der FMA. Sobald ich das genaue Datum für Agra habe, werde ich die FMA anschreiben und um die Organisation (evtl. mit einer Übernachtung) bitten.

Von hier möchten wir (s.o.) nach Jaipur um das Sarthak Manav Kushtashram zu besichtigen. Auch hier werde ich gerne die Unterbringung organisieren sobald ich den Reise Termin habe. Von Jaipur müßten wir wieder nach Delhi kommen und würden uns wieder der Gruppe anschließen. Ich danke, daß wir für die Besuche jeweils einen halben bis einen Tag haben sollten.

Vom 30.10 an möchten wir das Programm der Gruppe mitmachen. An welchem Tag kommen wir in Calcutta an? Dort möchten wir gerne 2 Werkzeuge vorbringen um Gruppen zu besuchen. Von dort würden wir dann so früh wie möglich weiterreisen nach Mangalore und Dubai. Evtl. schon am 11.?  
Dann könnten wir den Rückflug doch sicher am 18. ab Delhi planen, oder?  
Buchen Sie den Flug von Calcutta über Mangalore nach Delhi für uns?

Mit herzlichen Grüßen auch von meiner Frau bis ich

Herz

*Johann Janssen*

Johann Janssen  
Lambertshof 11  
26603 Aurich

Frau  
U. Hecker  
Schöneberger Ufer 67A

10785 Berlin

Aurich, 09.08.1995

Sehr geehrte Frau Hecker,

nachdem wir wegen der Reisebegleitung mit Schwester Ilse Martin Kontakt aufgenommen haben, möchte ich Ihnen heute einige Wünsche unserer indischen Partner mitteilen.

Sarthak Manav Kushthashram, Purana Ghat, Opp. Balaji Mandir  
Galta Road, JAIPUR - 302 003  
Dieses Lepra Zentrum wurde von unseren Freunden mit rund 300 000 DM unterstützt. Wir wurden gebeten, bei der Vermarktung der Produkte zu helfen. Ein Besuch wäre sehr nützlich.

Equitable Marketing Association, 16/2 Gariahat Road, CALCUTTA

Wegen der augenblicklich undurchsichtigen Lage bei EMA wäre ein Besuch aufschlußreich und von der EMA auch erwünscht.

Die EMA unterhält in AGRA ein Büro. Von dort werden die Produzenten von Specksteinartikeln betreut. Ich möchte gerne wissen, ob das Arbeiten mit Speckstein gesundheitsschädigend ist, wie unsere Kunden behaupten, oder nicht. Eventuell könnte man auch zur Verbesserung der Arbeitsbedingungen beitragen.

Frau Mithu Roy, die frühere Mitarbeiterin der EMA, hat in Calcutta ein gemeinnütziges Unternehmen gegründet unter dem Namen Madhya Kalikata Shilpangan in 13A, Durga Pithuri Lane, CALCUTTA - 700 012. Sie hat mehrfach um einen Besuch gebeten, wenn wir nach Indien kommen.

Die Lepra-Zentren in Hubli und Mangalore haben uns ebenfalls sehr herzlich eingeladen. In Hubli wären auch noch einige geschäftliche Dinge zu klären.

Wir hoffen, daß wir die meisten Wünsche unserer indischen Partner erfüllen können. Wir könnten bis zum 18.11. in Indien bleiben.

Mit freundlichen Grüßen, auch im Namen meiner Frau, verbleibe ich

Ihr

*Johann Janssen*



Johann Janssen  
Lamberts hof 11  
26603 Aurich

Tel. + Fax 04941 / 66175

Aurich 27.09.95

Liebe Frau Pohl,

oder wer immer dieses Fax in Händen hält.

Am 17.09. erhielt ich ein Fax von Frau Hecker bezgl. der  
Indienreise. Da die Sekretärin die Reiseunterlagen hatte,  
kam sie nicht an die genauen Daten.

Da wir jedoch noch nach Jaipur möchten (nach Afrika)  
brauchen wir die genauen Daten dringend.

Wo sind Übernachtungen geplant? Wo müssen wir selber  
buchen?

Können in Calcutta 2 Doppelzimmer bis 13.11. für uns  
(2x Janssen, Schw. Ilse Martin, Martin's Gründer) gebucht werden?

Und in Delhi vom 17. zum 18.11.?

Wir würden die "2. Alternative" vorziehen.

Mit freundlichen Grüßen

Johann Janssen

# Lutheran World Federation

## NATIONAL COMMITTEE OF INDIA

Eingegangen

- 7. Jan. 1995

Erledigt:.....

**Dr. K. Rajaratnam**

Ph.D. (Lond) D.Th. (Budapest)  
D.D. (Serampore)

Executive Secretary

31st January 1995

Rev. Ursula Hecker  
Secretary for India  
Gossner Mission  
Fennstraße 31  
D-12439 Berlin  
Germany

Dear Rev. Hecker,

Dr. Rajaratnam has received your fax letter of January 20th, for which he conveys his thanks. He is however extremely busy with several conferences these days. Hence he has asked me to write to you that he is prepared to write the article and send that to you soon.

With regards,

Yours sincerely,



S.A. John  
Office Secretary

EVANGELISCH-LUTHERISCHE LANDESKIRCHE HANNOVERS

DER LUTHERISCHE LANDESSUPERINTENDENT  
FÜR DEN SPRENGEL OSTFRIESLAND

Fernruf 04941-2672  
Telefax 04941-3250  
Postfach 1468

JULIANENBURGER STRASSE 23  
26584 AURICH  
am 20. 12. 1994

Liebe Frau Hecker, lieber Herr Hecker !

Leider hat es bisher mit einer telefonischen Verbindung nicht geklappt. Aber wir haben auch so voneinander erfahren, daß wir alle wohlbehalten wieder zurückgekehrt sind. Die bei mir während und nach Tropenreisen leider üblichen Magenbeschwerden sind auch inzwischen vorbei, so daß ich an Indien inzwischen nur gute Erinnerungen habe. Die vielen Briefe des Pramukh an die westdeutschen Kirchen habe ich sofort auf die Reise geschickt, auch für Rev. Biswas eine Verbindung zu Prof. Moltmann angeknüpft. Ob sie zustande gekommen ist, hat er mir nicht bestätigt. Bilder von der Reise sollten wir gelegentlich einmal austauschen.

Ich hoffe es geht Ihnen ähnlich gut; Ihre Strapazen waren ja noch ungleich höher. Hoffentlich haben Sie auch von Friso gute Nachrichten.

In der Anlage überreiche ich Ihnen den versprochenen Scheck und bitte um eine Spendenbescheinigung für 1994.

Für das Weihnachtsfest wünsche ich Ihnen eine gesegnete Zeit, daß Sie ein wenig zur Ruhe kommen und sich zu Hause und in der Gemeinde freuen können.

Mit allen guten Wünschen

Ihr  
Volkmar Jürgens



K

Tel. 06206 (4392)

Ansgar Kelber  
Martin-Kärcher-Str. 28  
68623 Lampertheim



4.2.1995

Gossner Mission  
Fennstr. 31  
12439 Berlin

Liebe Frau Hecker,

ich danke Ihnen für Ihren Brief vom 23.1. mit der Ankündigung, daß im Herbst ein großes Jubiläum in Ranchi ansteht. Wir wären schon interessiert, daran teilnehmen zu können und bitten Sie, uns noch weitere Informationen zuzusenden, z.B. genauer Zeitplan, Unterkünfte privat oder Hotel ?, gibt es verbilligte Gruppenflüge oder könnten wir einen Besuch in Kathmandu anschließen ?, welche Orte sollen besucht werden ? ( für uns natürlich Fudi ), - welche Planungen stehen für Berlin an, falls wir nicht nach Indien mitkönnten ?

Da wir die Urlaubsplanungen danach einrichten müßten, wären wir zuerst am geplanten zeitlichen Rahmen interessiert.

Ich danke Ihnen für Ihre Bemühungen für die Vorplanungen einer derartigen Veranstaltung

und verbleibe mit freundlichen Grüßen

*Ansgar Kelber*

h.

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Frau und Herrn  
Kelber  
Martin-Kärcher-Str. 28

D-68623 Lampertheim

15. August 1995

An alle, die gerne an der Jubiläumsreise nach Chotanagpur teilnehmen wollen,

Liebe Frau Kelber, lieber Herr Kelber,

zunächst möchte ich mich dafür entschuldigen, daß Sie erst heute wieder etwas von mir hören. Aber durch Sister Ilse haben ja viele von Ihnen nähere Informationen bekommen. - Die Gossner Kirche freut sich über jeden Gast, der zu ihrem Jubiläum kommt. Ich will Sie zu dieser Reise ermutigen. Es kommen viele verschiedene Gruppen zu dem Fest. Ich habe versucht, so gut es geht, die individuellen Wünsche zu berücksichtigen und hoffe, daß Sie mit der Gesamtplanung einverstanden sind.

**Zunächst die Kosten:**

Sie werden mit DM 2.500,- Gesamtkosten rechnen müssen, wobei die Gossner Mission die Flüge Deutschland-Indien, New Delhi, Ranchi und die gewünschten Touristenprogramme für Sie bucht und vorfinanziert. Alle anderen Ausgaben müssen Sie mit Ihrer Gruppe in Indien regeln. Zum Jubiläum wird es nicht möglich sein, alle Besucherinnen und Besucher privat in der Gossner Kirche unterzubringen. Wir haben mit der Gossner Kirche abgesprochen, daß die Besucherinnen und Besucher, die im Hotel untergebracht sind, auch für die Kosten des Hotels in Ranchi aufkommen. Der Kirche ist diese finanzielle Belastung nicht zuzumuten, denke ich. Bei allen anderen Besuchen von Gemeinden und Institutionen sind Sie Gast der Kirche. Die Gemeinden freuen sich über ein Grußwort, eine Predigt, einen kleinen Beitrag über das Leben in Deutschland und vielleicht (aber durchaus nicht nötig) über eine kleine Aufmerksamkeit, wie ein schönes Foto Ihrer Heimatkirche, einen schönen Wandteller, Kalender oder ein Kreuz.



## Die verschiedenen Gruppen:

Über die Gossner Mission haben wir zu verschiedenen Zeiten Gruppen geplant:

### 1.Seminargruppe:

vom 11.10.-4.11.95

Ursula Hecker  
Bernd Krause  
Gossner Mission

Uwe Wiemann  
Offizieller Vertreter  
der Lippischen Landeskirche  
Claudia Schwartz

### 2.Gruppe:

vom 25.10.-14.11.

evtl. auch bis 11.11.

Ilse Martin  
Ursula von Lingen  
Katharina Sinram  
Franziska Schultz  
Marlies Gründler  
Herr Jansen  
Frau Jansen  
Magdalene Straube?  
Hiltrud Zoll?  
Ansgar Kelber?  
Frau Kelber?

vom 28.10.-11.11.

oder 14.11.

Bettina Rohwedder?  
Monika Schutzka?

### 3.Gruppe:

vom 28.10.-11.11.95

Harald Lehmann  
Offizieller Beauftragter der Westfälischen Kirche  
Leit Lehmann  
Wilhelm Schultz

### 4.Gruppe:

vom 22.10.-11.11.95

Dieter Hecker  
Gossner Mission  
Dr. Günter Krusche  
Kuratoriumsvorsitzender und Vertreter der EKIBB  
Margret Krusche  
Frau Schülzgen

vom 25.10.-9.11.95

Volker Jürgens  
Vertreter der Hannoverschen Landeskirche

Ich habe hoffentlich niemanden vergessen. In den verschiedenen Gruppen sind die Besucher erfaßt, die über die Gossner Mission die Reise planen. Es gibt noch einige, die privat den Besuch organisieren. Wir wissen von Frau und Herrn Seeberg und von Frau und Herrn Dr. Grothaus.

**Reisebedingungen:**

Ihr Reisepaß muß noch mindestens ein halbes Jahr vom Zeitpunkt der Reise an gültig sein.

Ich schicke Ihnen einen Visumsantrag mit, den Sie zusammen mit zwei Paßbildern und Ihrem Reisepaß entweder an das Ihnen nächst gelegene indische Konsulat oder bis zum 18. September an die Gossner Mission schicken. Das Visum kostet DM 35,-.

Als Geld für Ihre Reise sollten Sie auf jeden Fall traveller cheques einer international bekannten Bank mitnehmen (DM oder \$), Kreditkarten kann man in den großen Städten benutzen.

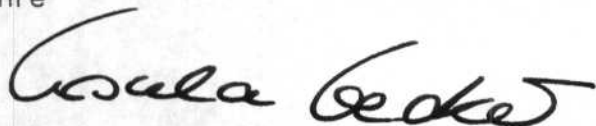
Die Gesundheitsvorsorge ist weitgehend eine Ermessenssache. Notwendig ist sicher eine Tetanusimpfung und Malariaprophylaxe. Zu empfehlen sind Impfungen gegen Kinderlähmung, Hepatitis und Meningitis. Eine Wasserflasche, in der Sie immer abgekochtes oder durch Micropur gereinigtes Wasser mitführen können, hilft Darmverstimmungen vermeiden. Fast lebensnotwendig ist auch eine Taschenlampe. Gut ist ein Jugendherbergsleinenschlafsack (den Sie aber auch in Neu Delhi beim deutschen Pfarrer kaufen können. Sie unterstützen damit noch ein Leprarehabilitationszentrum. Lassen Sie es uns wissen, wenn Sie daran Interesse haben).

Schon heute möchte ich Sie auch darauf aufmerksam machen (denn im Trubel des Feierns mag es vielleicht untergehen), daß Sie Ihren Rückflug unbedingt reconfirmen und bei der Rückreise noch 600/- Rs als Airporttax parat haben müssen.

Hinter manchen Namen in den Gruppen steht noch ein Fragezeichen. Bis 1. September sollten Sie uns verbindlich mitteilen, ob Sie an der Reise teilnehmen oder nicht. Für allgemeine Reiseinformationen stehen wir Ihnen oder vor allem auch Sister Ilse Martin, Jenaer Str. 20, 10717 Berlin, Tel. 030-8544660, zur Verfügung.

Wenn auch die Gossner Kirche und die Nord West Gossner Kirche aller Voraussicht nach bis zum Jubiläum nicht vereinigt sein werden, wird der Besuch in Indien bestimmt eine gute Erfahrung, Ich wünsche Ihnen viel Vorfreude für die Reise und grüße Sie herzlich

Ihre



Ursula Hecker  
Indienreferentin

Dr. Günter Krusche  
Generalsuperintendent i.R.

12681 Berlin, 31.8.95  
Reiler Str. 12  
Tel. (030)5406200

Eingegangen

- 4. Sep. 1995

Erledigt:.....

Frau  
Pfarrerin Ursula Hecker

c/o Gossner Mission  
Fennstr. 31  
12439 Berlin

Liebe Ursula,

anbei übersende ich unsere Pässe für die Indienreise sowie je zwei  
Paßbilder von Margret und mir.

Heute hat mich Frau Schülzgen gebeten, auch für sie fest zuzu-  
sagen, allerdings möchte auch sie unbedingt am 4.11.95  
zurückreisen (Geburtstag ihres Mannes). Was die Hinreise betrifft,  
so hatten wir uns für den 22. Oktober entschieden. Nun hat aber  
Dieter mir gesagt, daß er schon am 20.10. zu reisen gedenke, um am  
Sonntag in Neu-Delhi am Gottesdienst teilnehmen zu können. Wir,  
einschließ-lich Frau Schülzgen, würden uns in diesem Falle auch  
für den 20.10. entscheiden. Aber das wirst Du schon alles richten.

Ich hoffe, daß ich alles richtig gemacht habe. Ab 26. September  
sind wir wieder aus Genf zurück. Dann können wir über alles andere  
sprechen.

Mit freundlichen Grüßen

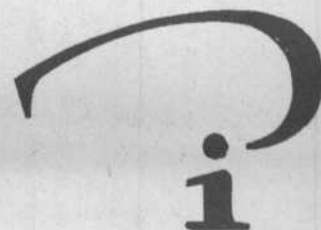


Anlagen



L

PÄDAGOGISCHES INSTITUT  
DER EVANGELISCHEN KIRCHE VON WESTFALEN  
DOZENT HARALD LEHMANN



Pädagogisches Institut · Postfach 5020 · 58225 Schwerte

Gossner Mission  
Frau Hecker  
Fennstr. 31

12439 Berlin

privat:  
In der Rohde 19  
44869 Bochum  
02327/71661

|             |                    |               |          |                     |
|-------------|--------------------|---------------|----------|---------------------|
| Ihr Zeichen | Ihre Nachricht vom | Unser Zeichen | Datum    | Telefon Durchwahl   |
|             | 11.+15.8.95        | Le            | 23.08.95 | ( 02304 ) 755 - 168 |

### Indienreise

Liebe Frau Hecker,

vielen Dank für Ihren Brief und das Rundschreiben an die Reisetilnehmer/innen. Noch im Juli hatte mir Frau Weinert die Visa-Formulare zugeleitet, ich schicke Sie beiliegend ausgefüllt zusammen mit den Lichtbildern und Pässen zurück.

Die Flugtage und -zeiten passen mir gut, allerdings habe ich noch eine Rückfrage. Ist es möglich, ab und bis Düsseldorf zu fliegen (ohne daß sich der Flugpreis verändert)? Die Anreise bis Frankfurt würde ich mir in diesem Fall gern ersparen; Düsseldorf erreicht man von unserem Wohnort aus sehr komfortabel mit einer durchgehenden S-Bahn. Falls der Preis für das Ticket aber unverhältnismäßig dadurch steigen würde, könnten sie es bei Frankfurt belassen.

Für die Planung des Aufenthaltes in Delhi dürfen Sie wirklich (relativ) frei über mich verfügen. Es ist mein erster Aufenthalt in Indien, und Sie kennen die Erwartungen dort besser. Wenn man mich um eine Predigt bittet, werde ich der Bitte wohl nachkommen können. Falls man Mitleid mit dem von der Reise vielleicht noch müden Gast hat und mit einem längeren Grußwort vorlieb nehmen möchte, geht auch das. Daß der Aufenthalt mit Anstrengungen verbunden ist, damit rechne ich ohnehin.

Der Blick auf die Liste der Gäste mit ihren vielen unterschiedlichen Termin- (und wahrscheinlich sonstigen) Vorstellungen läßt mein Mitgefühl für Ihre organisatorischen Belastungen ansteigen.

Deshalb nochmals Dank für alles  
und herzliche Grüße - auch im Namen meines Sohnes -

*Mr Harald Le*

### Anlagen

Hausadresse :  
Iserlohner Straße 25  
58239 Schwerte  
Telefon: ( 02304 ) 755 - 0  
Telefax: ( 02304 ) 755 - 247

Bankverbindung : Evangelische  
Darlehns Genossenschaft  
Münster  
Bankleitzahl : 400 601 04  
Kontonummer : 30 001

Gleitende Arbeitszeit! Sie erreichen uns  
vormittags  
Montag - Freitag 8:30 - 12:00 Uhr  
nachmittags  
Montag - Donnerstag 13:00 - 16:00 Uhr

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Herrn  
Harald Lehmann  
In der Rohde 19  
44869 Bochum

Berlin, 11. 8. 1995

Lieber Herr Lehmann,  
von einem 10-Tage Urlaub in Peru  
Kersting zurückgekehrt, muß ich  
mich an die konkrete Planung  
des Jubiläumsvorlasses machen.  
Zunächst einmal zu Ihren Reise-  
daten:

Flug Frankfurt-Delhi Lufthansa 28. Okt.

Abflug 13<sup>25</sup>

Ankunft 29. Oktober 14<sup>00</sup> Uhr

Rückflug Delhi-Frankfurt Lufthansa 11. Nov.

Abflug 3<sup>15</sup> Uhr

Ankunft 7<sup>30</sup> Uhr

Bitte denken Sie mit daran, daß  
der Rückflug in Indien recon-  
firmed wird, außerdem daß Sie



pro Person 600/- Rs Airport  
tax brauchen, bei der Ausreise.

Ihre Anfrage die Delhi Gemeinde  
betreffend ist keine Frage. Es ist  
selbstverständlich, daß Besucher  
die über Delhi sitzen, Gäste der  
Gottes Gemeinde sind. Ich bin  
mir nur nicht sicher wegen des  
Zeitpunktes. Natürlich wäre  
ideal, wenn Sie gleich am  
Sonntag, dem 29. Oktober im  
Gottesdienst Gast sein könnten  
(und dann natürlich auch po-  
digen dürfen). Aber da Sie erst  
in der Nacht ankommen, ob  
Ihren <sup>nicht</sup> zu spät ist? Der Gottes-  
dienst ist allerdings erst am  
Mittwoch. Bei der letzten  
Reisegruppe haben wir es so  
gemacht, aber es war natür-  
lich anstrengend. Somit könn-  
te man ein/zwei Tage auf dem  
Rückflug einplanen, was Ihre  
Zeit in Ootacamund verkürzt.

2/ Was denken Sie?

In den paar Tagen nach dem Jubiläum schlage ich Ihnen vor auf jeden Fall einen Tag mit dem CVJM in Randri zu verbringen. Das ist bestimmt auch für Ihren Sohn interessant.

Wären Sie anmerken vor allem an Gesprächen mit Schwestern und an Besuchen von Schwestern interessiert? Und vor allem an einem Festbesuch .... das muß sein.

Wegen der Größe und Weite der Landes ist eine Woche wenig Zeit.

Sie müssen sich darauf einstellen, daß die Vereinigung der beiden Kirchen bis zum Jubiläum noch nicht geklappt hat. Ich hoffe noch, daß das Jubiläum gemeinsam gefeiert wird. Wenn nicht, können wir eigentlich nur dort entscheiden, wie wir uns



Gefallen, da ich nicht weiß,  
wiewiel Aggressoren der Po-  
zeß jetzt feigeht hat.

Aber Genaues weiß man nicht  
die schriftlichen Informatio-  
nen fließen spärlich.

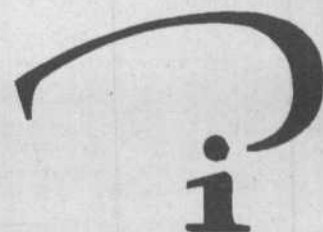
Ich denke, das alles berührt  
Sie auch nicht zu sehr, denn  
die Freude über den Besuch  
wird auf jeden Fall über-  
wiegen.

Entschuldigen Sie bitte, daß ich  
dies alles handschriftlich mit-  
teile, - aber die Sekretärinnen  
sind im Urlaub, und ich habe  
mich bis jetzt noch erfolgreich  
gegen den Computer gewehrt.

Ihnen und Ihren Sohn viel  
Gefunde auf Indien. Wenn  
ich etwas vergessen habe und  
Sie noch Fragen haben, lassen Sie  
es mich wissen. Herzliche Grüße  
von Paula Becker



PÄDAGOGISCHES INSTITUT  
DER EVANGELISCHEN KIRCHE VON WESTFALEN  
DOZENT HARALD LEHMANN



Pädagogisches Institut · Postfach 5020 · 58225 Schwerte

Gossner Mission  
Frau Hecker  
Fennstr. 31  
12439 Berlin



privat:  
In der Rohde 19  
44869 Bochum  
02327/71661

Ihr Zeichen

Ihre Nachricht vom

Unser Zeichen  
Le/Pf

Datum  
18.07.95

Telefon Durchwahl  
(02304) 755 - 168

### Indienreise

Liebe Frau Hecker,

Oberkirchenrat Dr. Beyer hat mir im Anschluß an unser letztes Gespräch einen Programmvorschlag gemacht für den Fall, daß ich in Neu Delhi einen Aufenthaltstag bei der Anreise haben sollte.

Er schlug vor, daß ich dann das Gemeindezentrum der Gossner Kirche besuchen könne, für das die EKvW 1993 einen Zuschuß von DM 50.000,-- gegeben hat. Ich weiß nicht, ob sich das realisieren läßt. Es war auch kein dringendes Anliegen, sondern wohl eher ein spontaner Einfall, als ich ihm sagte, daß womöglich eine Übernachtung in Neu Delhi anstünde. Falls Sie das aber für ein sinnvolles Unternehmen halten, so dürfen Sie den Besuch dort gern einplanen.

Herzliche Grüße

*Harald Lehmann*

Hausadresse:  
Iserlohner Straße 25  
58239 Schwerte  
Telefon: (02304) 755 - 0  
Telefax: (02304) 755 - 247

Bankverbindung: Evangelische  
Darlehns-genossenschaft  
Münster  
Bankleitzahl: 400 601 04  
Kontonummer: 30 001

Gleitende Arbeitszeit! Sie erreichen uns  
vormittags  
Montag - Freitag 8:30 - 12:00 Uhr  
nachmittags  
Montag - Donnerstag 13:00 - 16:00 Uhr

PÄDAGOGISCHES INSTITUT  
DER EVANGELISCHEN KIRCHE VON WESTFALEN  
DOZENT HARALD LEHMANN

Pädagogisches Institut • Postfach 5020 • 58225 Schwerte

Gossner Mission  
- Frau Hecker -  
Fennstr. 31

12439 BERLIN

Eingegangen

23.02.1995

Erledigt:.....

i

Ihr Zeichen

Ihre Nachricht vom

Unser Zeichen

Datum

Telefon Durchwahl

le

21.02.95

(02304) 755 -168/163

**Teilnahme am Jubiläum der Gossner Kirche  
Mein Schreiben vom 8. 2. 95 und gestriges Telefonat**

Liebe Frau Hecker,

vielen Dank für Ihre Beratung und Ermutigung in der Frage der Mitreise meines Sohnes. Auch Oberkirchenrat Dr. Beyer sah gestern in einem Gespräch keine Probleme in diesem Zusammenhang, so daß ich Sie wie angekündigt darum bitte, die entsprechenden Buchungen mit vorzunehmen.

Unser Sohn Leif ist 14 Jahre alt und wurde am 19. Februar 1981 geboren. Ich nehme an, diese Angaben benötigen Sie für die Fluggesellschaft.

Für Ihre bald anstehende Reise wünsche ich einen guten Verlauf und grüße Sie herzlich

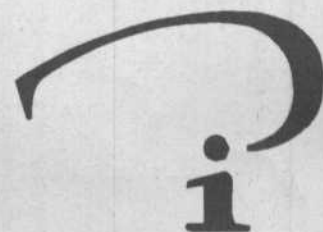
*Harald Lehmann*

Hausadresse:  
Iserlohner Straße 25  
58239 Schwerte  
Telefon: 02304/755-0  
Telefax: 02304/755-247

privat:  
In der Rohde 19  
44869 Bochum  
Tel. 02327/71661

Bankverbindung: Evangelische  
Darlehns-genossenschaft  
Münster  
Bankleitzahl: 400 601 04  
Kontonummer: 30 001

PÄDAGOGISCHES INSTITUT  
DER EVANGELISCHEN KIRCHE VON WESTFALEN  
DOZENT HARALD LEHMANN



Pädagogisches Institut · Postfach 5020 · 58225 Schwerte

Gossner Mission  
Frau Hecker  
Fennstr. 31  
  
12439 Berlin



privat:  
In der Rohde 19  
44869 Bochum  
02327/71661

Ihr Zeichen

Ihre Nachricht vom

Unser Zeichen  
Le/Pf

Datum  
08.02.1995

Telefon Durchwahl  
(02304) 755 - 168

**Teilnahme am Jubiläum der Gossner Kirche in Indien  
Telefonat vom 7.2.1995**

Liebe Frau Hecker,

für Ihre Unterstützung bei der Planung und Durchführung der Reise und das ausgiebige gestrige Gespräch bedanke ich mich.

Ich habe mir notiert, daß

- die eigentlichen Jubiläumsfeierlichkeiten vom 31. Oktober bis zum 2. November 1995 dauern werden, für die meisten Gäste aber schon ab Mitte Oktober ein Besuchsprogramm ablaufen wird;
- Sie es für möglich halten, daß ich wegen meiner terminlichen Probleme erst Ende Oktober anreise und dafür im Anschluß an die Feiern noch ein paar Tage (evtl. zusammen mit anderen Besuchern) bleibe;
- Sie die Flüge für mich buchen werden (Mir würde gut passen: Abflug Düsseldorf oder Frankfurt am 28. Oktober, Rückkehr am 11. November);
- Sie mir rechtzeitig ein Formular für die Beantragung des Visums zuschicken, das von Ihnen vorausgefüllt wird (Touristenvisum).

Es wäre schön, wenn Sie mir die Flugdaten möglichst bald übermitteln könnten.

Ich freue mich darauf, mit Ihnen gemeinsam ein wichtiges Feld der Gossner Mission kennenzulernen.

Herzliche Grüße

PS Ich wäre Ihnen dankbar, wenn Sie mir Informationsmaterial über die Gossner Kirche und Ihre Verbindungen dahin überlassen könnten.

Hausadresse :  
Iserlohner Straße 25  
58239 Schwerte  
Telefon: (02304) 755 - 0  
Telefax: (02304) 755 - 247

Bankverbindung: Evangelische  
Darlehensgenossenschaft  
Münster  
Bankleitzahl: 400 601 04  
Kontonummer: 30 001

Gleitende Arbeitszeit! Sie erreichen uns  
vormittags  
Montag - Freitag 8:30 - 12:00 Uhr  
nachmittags  
Montag - Donnerstag 13:00 - 16:00 Uhr



Tübingen, 24.8.95

Liebe Frau Hecker,  
vielen Dank für Ihr Schreiben  
vom 15. 8. 95.

Magdalene Strante und Hilbrand Zoll  
werden bis zum 1. 9. Ihnen persönlich  
mitteilen, ob sie mitfahren können  
oder nicht.

Falls die beiden mitfahren, sind  
wir drei für die 2. Alternative  
mit Bhuvaneshwar / Calcutta.

Falls die beiden absagen sollten,  
schlüße ich mich der Mehrheit  
der Wünsche an, würde also auch  
die 1. Alternative mitmachen. Auf  
jeden Fall würde ich sein am  
11. 11. zurückfliegen.

Da ich nicht weiß, wo das nächst  
gelegene indische Konsulat ist,  
schicke ich meinen Paß mit  
Visumsantrag und Paßfotos an Sie  
mit. Die 35,- des Visums führen  
können wir dann wohl mit den  
Reisekosten zusammen überweisen.

Einen Jugendherbergsleinen-  
schlafzettel würde ich gerne in  
Delhi kaufen.

Ob Angaar inzwischen weiß, wann  
wir kommen?

Und ob ein Besuch in der fernside  
von Wilhelm Kandulna in keinem  
Fall möglich ist?

Mit dank und freundlichen grüßen,

Mula v. Ziegen - Senda

(bitte vollen Namen!)

Frau Pfr. Kecker  
zur Kenntnisnahme Tübingen d. 28.2.95

Liebe Ilse,

heute waren Martin + Eberhard Deusch  
und Martin bei uns zum Kaffee.

Martin zeigte ihre Galapagos - Inseln, und natürlich  
sprachen wir auch von der Indien - Reise. So will  
ich nun, während ich auf die Rückkehr von  
Kadunro warte, schnell noch an dich schreiben.

Sehe herzlichsten Dank für deinen Brief vom 17.2.  
Ich hoffe, daß du jetzt eine schöne Zeit mit Magdalena  
in from Canada hastest.

Also, meine Freundin: Magdalena Straube  
würde gerne mit ihrer Freundin: Kiltind Zoll  
nach Indien mitfahren. Diese beiden würden na-  
türlich gerne auch etwas von Indien sehen, ab-  
gesehen vom Jubiläum in Ranchi + Singa-  
pur. Wie viel heute haben uns nun auf folgenden  
gemeinsamen Vorschlag geeinigt:

- 1.) Flug von Frankfurt nach Delhi.
- 2.) Ca 2-3 Tage in Delhi + Agra  
(vor dem Jubiläum. zur Ein-  
stimmung auf Land, Leute + Klima)  
Evtl. (falls zeitlich möglich) auch  
noch nach Fatehpur Sikri.

Freu(n)de  
gewinnen...

**Brot**  
für die Welt



3.) Jubiläum in Raulin.

(Kalliro + ich sind dort bei Daisy eingeladen,  
bräuchten also für uns kein Hotel)

4.) Fahrt nach Angkor. (Eckard Rensch meinte,  
falls wir nicht mit der Bahn sondern mit  
dem Bus fahren, auch einen Stöcker nach  
Khumtoli, wie Phame ek?)

5.) Falls möglich, Besuch bei Wilhelm Kandulna  
in Kuchinda, evtl. mit Fahrt über  
Zadehuda, was Eckard gern möchte.

6.) Abschluß: 1-2 Tage in Blumeneswar.

Für meine Fremdlingen + Kalliro (auch für  
Homika) Kasta + Eckard (aus gesundheitlichen  
gründen) wäre es gut, wenn wir mit jetzt 2 Wochen  
auskämen. Drei Wochen sind den meisten zu lang.  
Ja, Homika hat ich neulich auch gepöckelt.  
Sie wäre mit diesem Vorschlag einverstanden,  
würde aber statt nach Blumeneswar dann  
zu Sita nach Sambalpur fahren.

Also, um überlegen wie es ist, Hotels  
oder andere Übernachtungsmöglichkeiten, Züge,  
Flüge, Busse oder andere Fahrgelegenheiten  
zu buchen und uns dann den endgültigen

Tübingen, d. 14. 7. 95

Liebe Frau Hecker,  
gestern habe ich mit meiner Freundin  
Magdalene Straube telefoniert, die  
zusammen mit Hilma Doll gerade aus  
dem Urlaub zurückgekommen war. Bei beiden  
steht jetzt die Indien - Reise auf etwas "wackeligen  
Füßen". Frau Dolls Mutter ist sehr krank und  
alt, und Fr. Doll kann im Augenblicke nicht  
übersehen, wie sich ihr Zustand entwickeln wird.

Bei Frau Straube ist ihr engster Mitarbeiter ernst-  
lich erkrankt, und sie kann z. Zt. auch nicht  
absehen, ob sie dann im Oktober / November noch  
einmal Urlaub nehmen kann.

Frau Straube hat mich um, Sie zu fragen,  
bis wann sie sich definitiv entscheiden müssen,  
damit ihnen nicht bei Rücktritt vor der Reise  
hohe Inkosten entstehen.

Auf jeden Fall könnten die beiden  
aber nicht länger als 2 Wochen fest.

Wir fahren vom 21. 7. - 2. 8. ins Urlaub.

Mit vielen Grüßen, Anrede v. Lingen-  
Sunde.

Freu(n)de  
gewinnen...

**Brot**  
für die Welt

Gossler  
Mission

18.6.95

Liebe Frau Hecker,  
leider muß ich nun doch für meinen Mann  
die Teilnahme an der Indien-Reise ab-  
sagen. Es hat noch ein paar Tage hin  
und her überlegt, aber 3 Wochen Arbeits-  
ausfall und dazu die Flug- und Auf-  
enthaltskosten für 2 sind 2.2k. finanziell  
einfach nicht drin. Es tut uns leid, ist  
aber einfach nicht machbar.

Kostenlos klappt alles andere.

Mit vielen Grüßen, M.v. Lüscher-Sende.



Absender

Ursula von Lingen-Senda  
Philipp von Heckstr. 10  
72076 Tübingen  
Tel: 07071 / 64639

(Straße und Hausnummer oder Postfach)

(Postleitzahl)

(Ort)

Eingegangen

20. Jun 1995

Erledigt: .....

recycling-papier aus 100 % Altpapier

Gossner  
Mission



Postkarte

Frau

Ursula Heckstr. 10  
gossner mission

Fennstr. 31

(Straße und Hausnummer oder Postfach)

12439

(Postleitzahl)

Berlin

(Bestimmungsort)

Eingegangen

27. Jan 1995

Erledigt: .....

Tübingen d. 25. 1. 95

Lieber Frau Hecker,  
vielen Dank für Ihren Brief vom 23. 1.  
Durch Daisy Kongas' ruftten wir ja schon von  
dem Jubiläum der Gossner Kirche in Ranchi und  
auch von der Einladung an ehemalige Mitarbeiter/innen  
der Gossner Mission in Indien. Darum hatte ich schon schon  
auf Nachricht von Ihnen gewartet.

Gerade heute Nachmittag hatten wir ein kleines  
„Indientreffen“: Ehepaar Mark + Erhard Peusch,  
Martins Fründler und ich. So konnten wir gleich  
miteinander über Ihren Brief sprechen.

1) Wir alle und dazu noch mein Mann sind an  
einer Teilnahme am Jubiläum interessiert und würden  
gerne an einer frühen- Reise teilnehmen.

2) Gewünschte Orte von uns wären außer Ranchi  
natürlich Songaon, wo wir alle gearbeitet haben  
und dazu die Arbeit von Wilhelm Kandulna  
in Kullunda.

Erhard Peusch wäre evtl. auch noch an  
einem Besuch in Zada Kudae im Bezirk  
Rato Birkera und evtl. Khundi Moti  
interessiert.

Freu(n)de  
gewinnen...

**Brot**  
für die Welt

Wenn es zeitlich machbar wäre, würden wir (Chupras  
v. Linfen - Senda und Wtl. Marius fründle) auch gerne  
einen Abstecher nach Nepal machen, evtl. zuerst nach  
Kathmandu / Nepal fliegen und von dort dann nach Randeri  
oder Nepal anhängen und von Kathmandu dann  
auswärts fliegen. Das aber nur, wenn mehr als 2-3 Tage  
in Nepal eingeplant werden könnten.

3. Der Termin fanden wir alle Mitte Oktober bis  
5.11. etwas zu früh, wegen dem Klima in Indien.  
Mitte Oktober ist manchmal die Regenzeit noch  
nicht ganz abgeklungen, die Straßen noch nicht  
so gut befahrbar.  
Wir alle finden Ende Oktober - Mitte November  
wesentlich besser.

4.) In welcher Personenanzahl haben Sie sich die Reise-  
gruppe vorgestellt? Könnte man interessierte  
Freunde mit dazu einladen? Einige meiner  
Freunde würden gerne mitkommen, wenn das  
möglich wäre. (ca. 2 x 2 Personen)

5.) Für die Unterbringung in Randeri hat Daisy Kongar  
meinen Mann und mich schon zu sich eingeladen.  
Wir bräuchten also kein Hotel in Randeri.

Somit für heute, damit Sie schnell planen  
können.



Termin, Route und Kosten-  
voranschlag der schreiben.

Bitte auch mitteilen, was an  
Impfungen und anderen Formalitäten  
notwendig wäre. (D.h. wegen Impfung  
könnte ich mich auch hier erkundigen)

Wie viele haben sich denn sonst noch für  
unsere, d.h. für deine Reisegruppe gemeldet?  
Kommen Marmite + Klösschen auch mit?

Wir sind nun sehr, sehr gespannt, wie  
alles wird.

Ach so, meine Freundin sagt noch, sie und  
Kilind soll würden lieber etwas mehr bezahlen  
und in einem guten Hotel wohnen, um  
möglichst dem Risiko einer Erkrankung  
aus dem Weg zu gehen. Ich denke, wir  
alle sollten uns dem anschließen, obwohl  
ich persönlich lieber billig reisen würde.  
Der Kadiro muß ja auch gleich wieder  
arbeiten und willt kein unnötiges  
Risiko umgehen (obwohl man das  
ja nie ausschließen  
kann)

Freu(n)de  
gewinnen...

**Brot**  
für die Welt

Gossner  
Mission

so, das wäre wohl das wichtigste. wie groß darf  
die Gruppe denn werden? wäre es möglich,  
nochmals 2 Leute dazu einzuladen?

Maxen beginnt mein Nachtdienst wieder  
bis 8.3. früh. Falls du noch Fragen zu  
unserem Programmwunsch hast, kannst  
du mich jederzeit zwischen 18<sup>00</sup> ~ 19<sup>00</sup> Uhr  
anrufen ( um 19<sup>00</sup> Uhr muß ich aus dem  
Haus gehen zum Nachtdienst) aber du  
könntest jederzeit auch Maxen fragen.

Nun Schlaf für heute.  
Dein Deutschspruch liegt auch noch  
unbeantwortet bei mir. Laß die  
heute auch dafür noch Bescheid  
erufen.

In der Vorrede auf die gemeinsame  
Indien - Reise und mit Dank für  
all deine Mühe grüßt dich herzlich,  
deine Annel.

Maxen laßt auch grüßen.

**GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH****IN CHOTANAGPUR & ASSAM****(Registered Under Societies Registration Act, XXI of 1860)****Vide No. 273-J of 30-7-1921**Rev. C.S.R. Topno  
M.A. B. D. M. Th.  
Pramukh AdhyakshRev. C.S.R. Topno  
B.A. L. Th.  
Up. Pramukh AdhyakshShri J. S. Topno  
B.A. (hons) B. Ed.  
SecretaryRev. S.K. Banga  
B.A. B. Th.  
Treasurer**Head Office :**  
G. E. L. Church, Ranchi  
Bihar/India. Phone 22564

Ref. 170/95/KSS-246

Date 26.07.95

Rev. Mrs. U. Hecker,

Fax 030 6361198

You are requested to forward this letter to Rev.  
Gerhard Linn, as we do not have his address.

*Topno.*  
(Rev. C.S.R. Topno)

To  
Rev. Gerhard Linn  
EKIBB, Germany

Dear Rev. Linn,

With exceeding gladness and joy. You are invited to  
participate in the 150 yrs. & Sesquicentennial Jubilee celebration  
of the Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur & Assam to  
be held from October 31 to November 2, 1995.

Please spare your most precious time to attend this  
historical event and glorify God with us.

Looking forward to seeing you,

*Bitte weiterleiten an Herrn Linn.  
mit Grüßen von der Gossner Mission.  
Barbara Pohl  
Sekretärin  
O.k.*

Yours sincerely

*Topno.*  
Rev. C.S.R. Topno  
Pramukh Adhyaksh  
G.E.L. Church in Chotanag-  
pur & Assam.



M

28. 7. 95

Liebe Frau Hecker!

Beiliegend ein Brief von Jaussen  
zu Kumbisnaland. Demnach würde  
sie doch auch am 25. 10. abfahren.  
Ich habe Ihnen geschrieben, daß sie sich  
direkt an Sie wenden sollen, da  
ich vom 30. 7. - 18. 8. im Lozgebirge  
bin. - Ich hoffe, Sie hatten eine  
schöne & interessante Urlaub!  
Mit herzlichem Grüßen! Von der Markt!

Eingegangen

31. Juli 1995

Erledigt:.....



Bayern, 25. 7. 95

Liebe Schwester Martin,

für 8 Tage machen wir hier in Bayern Urlaub.

Ihren Brief haben wir noch vorher bekommen und überlegen jetzt, wie die Indienreise verlaufen könnte. Von Frau Hecker haben wir bisher nichts gehört, so wissen wir auch nichts von ihren Vorschlägen. Wir möchten gerne am Fest in Ranché teilnehmen, so daß wir den Plan bis dahin zustimmen können. Auch in Delhi wären wir gerne dabei. Wenn es möglich wäre mit nach Asam zu fliegen würden wir auch gerne dabei sein. Wenn Sie danach mit uns nach Calcutta und Agra fliegen, sind unsere Wünsche ja schon fast alle berücksichtigt. Wäre es eventuell möglich dann von Delhi nach Kumbli zu fliegen und den Heimflug von Bombay aus anzutreten? Wir können bis mindestens 18. in Indien bleiben, evtl. auch 2 Tage länger. Dann hätten wir für Calcutta 2-3 Tage, für Agra 2 Tage und noch Zeit für Kumbli und evtl. Mangalore.

Gibt es wohl Vordrucke, mit denen wir die Visa beantragen müssen? Ich meine, meinen Reisepass beim letzten Indienbesuch nach Hamburg geschickt zu haben. Damals bekam ich alle Unterlagen und Adressen von der Gossner Mission. Ob das jetzt auch wieder so abläuft?

Wir möchten Ihnen schon jetzt unseren herzlichsten  
Dank sagen, daß Sie sich unserer annehmen.

Ende dieser Woche fahren wir wieder nach Hause,  
so daß wir am 30. wieder in Akerich zu erreichen  
sind.

Lieben Sie nun ganz herzlich begrüßt von  
Johann und Adelheid Janssen

*wurde gedruckt*



By ~~Telefax!~~

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/631 7809  
Telefax  
030/636 1198

To Bishop  
Dr. Nirmal Minz  
G.E.L.Church Compound  
Ranchi 834 001 - India

Dear Dr Minz,

We are just now in the final phase of the edition of the jubilee magazine in English Language. The German version is already in print. Now, there is a problem with your paper. All the others are between 2-4 pages and meant for average members of congregations without detailed knowledge of the matters and also normally not used to read scholarly articles. This is why Mrs. Barteczko Schwedler has made an abridged version of about 4 pages out of 16. Otherwise it would not have been possible to accomodate the whole article.

Now our question is: Have you publishes the whole article somewhere, so that we could give a bibliographical notice for that, so that interested people could find it. We are thinking of providing a complete version, which we will cyclostyle to make it available for people with more background of the Adivasi problem.

We would appreciate, if you could send us a short notice, if the text is already published and where. We would need this till the beginning of next week for the final touches in the text.

Looking forward to hearing from you, I remain with best wishes,

Yours sincerely,

*Dieter Hecker*

Rev. Dieter Hecker

*8. September 1995*



Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

An die  
Leitung der Lippischen Landeskirche  
z.Hd. Herrn Dr. Ulrich Möller  
Leopoldstr. 27

32756 Detmold

Berlin, d. 7.11.1994

Betr.: 150.jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran  
Church in Chotanagpur und Assam

Sehr geehrte Damen und Herren!

Am 2. November 1845 kamen vier Missionare nach Ranchi in Chotanagpur, dem jetzigen Zentrum der Gossner Kirche. Sie waren von Johannes Evangelista Gossner in Berlin ausgesandt, um "die Liebe Christi zu verkündigen mit der Hände Arbeit". Ursprünglich war ihr Plan, nach Burma weiterzureisen. In Calcutta überzeugten Adivasi, die Ureinwohner Indiens, die vier Deutschen, daß sie nach Chotanagpur in Südbihar kommen sollten, um dort den Menschen nicht nur das Evangelium zu predigen, sondern sie auch zu unterstützen in ihrem Kampf gegen Unterdrückung und Ausbeutung, gegen Feudalherren und Kastenhindus. Aus diesen Anfängen ist eine große Kirche gewachsen, die fast ausschließlich aus Ureinwohnern besteht und schon früh - 1919 - ihre Autonomie erreicht hat. Über die Gossner Mission hat sie immer Kontakt zu Deutschland gehalten. In den letzten Jahrzehnten entwickelte sich aber immer mehr eine Partnerschaft zu verschiedenen deutschen Kirchen, zu denen auch Ihre Landeskirche gehört.

Nächstes Jahr, vom 31. Oktober bis 2. November 1995, feiert die Kirche ihr 150.jähriges Jubiläum. Dazu lädt sie auch Freunde und Partner aus der Oekumene ein und würde sich über eine Beteiligung der Lippischen Landeskirche sehr freuen.

Die Kirche hat sich gerade in den letzten Jahrzehnten mit großen Problemen zu beschäftigen. Um ihre Identität bewahren zu können, waren die Adivasi vor den arischen Einwanderern in den Dschungel der Berge geflüchtet. Dort konnten sie bis nach der Unabhängigkeit Indiens ein relativ ungestörtes Leben führen. Jetzt hat sich herausgestellt, daß gerade in ihrem Gebiet die

größten Kohle- und Erzvorkommen liegen. Was die traditionelle Hindugesellschaft in Jahrtausenden nicht geschafft hat, nämlich die Adivasi zu entwurzeln, hat die moderne Zivilisation und Wirtschaft in verheerendem Maße begonnen. Ganze Landstriche werden umgesiedelt, die traditionelle Dorfgemeinschaft zerstört. Die Kirche muß sich mit großen sozialen Problemen und mit einer ihr unbekannten technisierten Welt auseinandersetzen. Für die Gossner Kirche ist es wichtig, Kontakte nach außen zu pflegen, damit sie kritische Bestärkung erhält auf ihrem Weg und Erfahrungen von anderen Kirchen fruchtbar machen kann.

Die direkte Einladung zum Jubiläum wird von der Gossner Kirche selbst noch ausgesprochen. Die Gossner Mission - wissend, daß in Deutschland Termine Monate vorher geplant werden - wollte Ihnen den Zeitraum des Jubiläums auf diesem Wege mitteilen, damit Sie sie bei Ihren Planungen berücksichtigen können und vorüberlegen, wer von der Kirchenleitung eventuell an den Feierlichkeiten teilnehmen kann. Die Gossner Mission ist auch bereit, zusammen mit der Gossner Kirche ein mehrtägiges Programm zu planen. Es wäre schade, wenn Besucher von hier nur die Erfahrung der großen Feierlichkeiten in Ranchi mit nach Hause nähmen und nicht einige Landgemeinden besucht hätten.

Mit freundlichen Grüßen, auch von der Indienreferentin Ursula Hecker,

*Dieter Hecker.*

(Dieter Hecker)  
Direktor

R



1. Oktober 95

liebe Frau Hecker,

Schon wieder ist ein Monat verstrichen und das Jahr neigt sich dem Ende zu. Vorallem wenn man heute aus dem Fenster schaut, merkt man, daß der Herbst unwiderstehlich angebrochen ist, und damit auch irgendwo eine Zeit der Besinnung oder der Ruhe.

Tun Sie jedoch sind die Vorbereitungen für die Indirekten sicher im vollen Gange, vorallem ja auch da am nächsten Wochenende eine "Informationsveranstaltung" stattfindet zu der ich leider nicht kommen kann. Ich habe von Freitag bis Montagmorgen Nachtwache und da gerade ich ja wegen der Weiterbildung nur am Wochenende arbeiten kann, ist es mit dem Tauschen nicht möglich.

Seit dem die Schule wieder angefangen hat (wir hatten bis Anfang September Urlaub), hat sich einiges geändert. Wenn wir am Anfang noch eher das passivere Schülerdasein "genießen" konnten - was zwar auch nicht immer einfach war - so gleiten wir nun immer mehr in die Kehrenrolle. Bis zum 2ten Praktikum an einer Krankenpflegeschule sind noch 5 Wochen Zeit in denen wir als Übung mehrere Referate oder Unterrichtsstunden (1 1/2 Std mit Methoden und Medienwechsel) halten müssen deren Vorbereitung schon viel Zeit in Anspruch nimmt. Zum Glück macht es mir jedoch Spass und ich sehe die Doppelbelastung nicht immer als solches.

Allerdings stecke ich seit 1-2 Wochen in einem emotionalen Konflikt, da ich mich auch für mein Praktikum vorbereiten müsste, doch da ich jedes 2te Wochenende arbeite habe ich in den verbleibenden Tagen nur noch Zeit für die Arbeitsaufträge der Schule.

Da ich weiß, daß ich diese Belastung nicht noch ein Jahr durchhalte ohne gesundheitliche Schäden zu produzieren habe ich mich jetzt doch entschieden zum 31. 12. 95 zu kündigen. Denn ab nächstes Jahr muß ich mich auch an meine Jahresarbeit machen und das 3te sog. Prüfungspraktikum vorbereiten und kann dann nicht noch nebenher arbeiten.

So sehr die Freude und Euphorie über die Indienreise am Anfang vorhanden war muß ich meine Situation doch auch realistisch sehen. Man kann einfach nicht alles haben! Ich kann nicht arbeiten, Ausbildung besuchen und dann noch zur Jubiläumssfeier nach Ranchi wollen, das muß ich mir einfach klar machen und indem ich die Entscheidung vor mich herschreibe ändere ich meine Situation nicht, und erschwere darüber hinaus auch noch Ihre Planungen. Und ich hoffe, daß mein Ganges Zögen keine Probleme für Sie mit sich bringt.

Schwerde - oder Lieba gesagt: würde gerne - mit Ihnen in Verbindung bleiben und auf jeden Fall ein kleines Päckchen für Angaon mit Bildern und "Sweets" von mir zusammenstellen - über die sich die Schwestern und Kam. Horo sicher freuen.

Hoffentlich finde ich auch diese Woche mal den

Weg zum Telefonhörer, um mich auch zu vergewissern ob Sie wegen mir keine Umstände hatten.

Da Vorbereitungen für einen Unterricht auch sehr viel mit „Kupé“ bzw. individueller Verfassung zu tun hat, kann ich nicht versprechen ob ich die Zeit finde nochmal an einem freien Wochenende nach Berlin zu kommen, auch wenn ich es gerne würde.

Grüßen Sie daher bitte alle ganz lieb, die mich als Baby oder meine Familie noch kannten, wenn Sie am nächsten Wochenende zusammenkommen. Ich habe dafür auch ein paar Bilder unserer Familie zusammengestellt über die sich der ein oder andere freut.

Vorläufig beende ich meine Gedanken und wünsche Ihnen eine nicht zu anstrengende Woche und grüße mit meinen Gedanken auch Sr. Jose Martin und alle die uns noch kennen.

Ihre Beate Schwedder

P.S.: Leider habe ich von meiner Schwester kein neues Bild - wahrscheinlich weil wir uns öfter sehen als mein Bruder und ich...





Bedtina Rohwedda  
(Sinsheim)

**FotoQuelle** Mein persönlicher Bildergruß



---

---

---

---





Wilhelm Rohwedder mit  
seinem Enkel

B Oktober 1991



Peter Rehwedder mit  
seinem Sohn





Mein Vater, Mutter und  
Papa

Sinsheim 18.7.95

Eingegangen

24. Juli 1995

Erledigt:.....

Sehr geehrte Frau Hecker,

Sie haben vor einiger Zeit meinem Vater einen netten Informationsbrief geschrieben und ihm von der 150 Jahrfeier der Gossner Mission mitgeteilt. Leider kann er aus zeitlichen Gründen Ihrer Einladung nicht nachkommen, was er schon etwas bedauert. Als er mir Ihr Schreiben gab, wollte ich Ihnen eigentlich gleich antworten, um zu fragen ob ich an seiner Stelle an einer Reise nach Ranchi teilnehmen könnte, doch durch meine momentane Doppelbelastung fand ich noch nicht den richtigen Zeitpunkt.

Seit 1989 arbeite ich als administrativ Krankenschwester im Kreiskrankenhaus hier in Sinsheim (erst 2 1/2 Jahre auf einer Innereinrichtung dann seit 4 Jahren auf der Anfallsklinik) und habe während meiner Ausbildung und Funktion als Mentorin gemerkt wie sehr mir die Arbeit mit Schülern einerseits Spass macht und wie viel man jedoch gerade als Lehrkraft der Schule erreichen kann (bzw. leisten ehernoch!). So schwärme ich sicher einmal sein wird. Ich stehe auf dem Standpunkt, daß es unheimlich wichtig ist die Schüler mind. 1-2 pro Jahr durch einen klin. Unterricht zu besuchen und eng mit den Mentoren eines Hauses zusammenzuarbeiten und deshalb mich daher der Ausbildung als Unterrichtsschüler zu bedienen. Da ich die Schule jedoch selber finanzieren muß

mein Vater ist finanziell nicht mehr in der Lage und zudem würde ich es nicht wollen, von ihm jetzt noch unterstützt zu werden, habe ich die ganze Zeit 50% nebenher am Wochenende gearbeitet. Doch ich möchte Ihnen in diesem Brief nicht meinen Lebenslauf schildern!

Im Mai habe ich mir - wahrscheinlich auch durch das 3/4 Jahr Dauerbelastung (die Schule hat im Okt. begonnen) - so stark das Kreuz verheben und zwar, da zwei Bandscheiben eh schon vorgewölbt sind, 2 Wochen arbeitsunfähig. Den Entschluß ab Juli dann kürzer zu treten habe ich bis jetzt nicht bereut, auch wenn bei 53,1 Stunden im Monat nicht viel zu errufen ist. Doch ich muß auch an meine Gesundheit denken.

So, das reicht aber jetzt endlich zu meiner Person, zumal mir die 150 Jahre der Gossner Mission ein viel größeres Anliegen ist. Wie Sie vielleicht schon erfahren haben verbindet mich durch meine Geburt in Amgaoon im Jahr 1964 doch vieles mit der Mission und so würde ich natürlich gerne im Oktober (November mit nach Ranchi reisen, sofern dies noch möglich ist).

St. Jose Martin schrieb mir, daß ich mich an Sie wenden soll bei der Frage ob ich noch mitreisen kann, oder ob es bereits zu spät für eine Anmeldung ist. Falls nicht würde ich mich freuen wenn Sie mir genauere Unterlagen zuschicken könnten im Bezug auf Reisekosten, Preis und Unterkunft. Vielleicht auch über ein paar Informationen im Bezug auf den Verkauf, wenn Sie darüber schon genaueres wissen und falls es meine finanziellen Ressourcen nicht

zu sehr überlastet sehe ich keinen Grund - von meiner Seite aus - mitzuküßen. Wir haben zwar von der Schule aus nur vom 29 Okt. bis 6 Nov. frei doch ich denke da lassen sich ein paar freie Tage einschieben.

Es wäre sehr schön wenn ich recht bald von Ihnen hören könnte und vielleicht schaffe ich es ja sie im August mal zu besuchen, da wir da 4 Wochen Schulferien haben.

Grißen Sie Herrn Dieter Becker von mir (ich nehme an Ihr Gatte) denn ich habe ihn vor meiner ersten großen Reise im Jahr 88/89 kurz kennengelernt und er hat mir damals ein paar wichtige Tips mitgeteilt. Jetzt hoffe ich Ihre Zeit nicht so sehr in Anspruch genommen zu haben und habe vorläufig

mit freundlichen Grüßen

Erika Schwedter





Sinsheim, 19. 8. 95

Liebe Ursula Hecker

// Tel. Ist nicht!!!

Erst einmal vielen Dank für Ihre lieben Zeilen und die Informationen über die Indienreise bzw. das Jubiläum, und es wäre wirklich toll für mich, wenn es klappt würde! Das einzige Problem ist nur, daß ich durch die Ausbildung zur „Lehrerin für Pflege“ kaum finanzielle Rücklagen habe und zu den 2500,- sicher noch einige hundert Mark für Übernachtung und sonstiges dazu kommen...

Meine Frage daher an Sie ist ob es möglich ist auf eigene Initiative hin nach Ranchi zu fliegen d.h. den Besuch von Agia und Talepur Sikri gar nicht beizuwohnen und erst ab dem 30. 10. 95 in Ranchi zu meiner Gruppe zu stoßen oder ob dies zu umständlich wäre? Am offiziellen Jubiläum sowie den geplanten Reisen nach Angaon, Khuntitoli und die anderen Orte würde ich dann gerne mitmachen und auch für die dafür anfallenden Kosten aufkommen. Sie können sich ja sicher vorstellen, wie gerne ich Angaon und Umgebung wiedersuchen würde, Tam. Hono oder alle Schwestern dort und ich denke es wird sicher eine Möglichkeit geben.

Zur Zeit habe ich wieder Nachtwache, um mit die Ausbildung zu finanzieren doch nächste Woche werde ich Sie mal anrufen, denn vielleicht können wir am Telefon noch Näheres besprechen. Grüßen Sie mit Sister Be. Martin wenn Sie sie sehen und auch Ihren Mann ganz herzlich. Mein Vater war übrigens ganz begeistert als ich ihm erzählte, daß ich mit Marias Gründer, Ursula von Ringen und coll. Monika Schufzka zusammentreffen würde und

es lässt Sie durch mich ganz lieb grüßen.

So für heute beende ich meine Zeilen und hoffe bald  
etwas von Ihnen zu hören - spätestens jedoch Ende nächste  
Woche wenn ich bei Ihnen anrufe

Bis dahin grüßt Sie herzlich

Ihre

Beffina Rehweide

Eingegangen

23. Aug. 1995

Erledigt: .....



Martin Seeberg  
Adolf-Scheidt-Platz 17  
12101 Berlin

10.01.1995

Gossner Evangelical Lutheran Church  
Rev. C.S.R. Topno  
Ranchi

J/ GOSSNER MISSION  
BERLIN

Dear Pramukh Adhyaksh!

Received with thanks your letter dated 24.11.94.

Herewith I send a short message for the Jubilee  
souvenir to be published.

With many good wishes for successfull work

yours sincerely

Martin Seeberg



Rev. Martin Seeberg  
Gossner Mission Inspector and Director  
1963 - 1977

Praise the Lord for 150 years of Proclaiming the  
name of Jesus Christ in Chōta Nagpur!

One third of this period I myself accompanied the  
Evangelical Lutheran Gossner Church beginning in my  
childhood until now. I remember very well the high-  
light in 1969 when we celebrated the 50th years Jubilee  
of the independant Church with Thanks to God for past  
and present days.

150 years - a long Period? It is said in Ps. 90,4:  
For a thousand years in thy sight are but yesterday  
when it is past and as a watch in the night.  
150 years that are accordingly three and a half  
hours in God's time-table and our life only a number  
of minutes and small moments.

May be this short time is not sufficient to do all  
work earnestly and properly, to fullfill his command-  
ments, to seek peace and unity.

Therefore we are sometimes disheartened. We are not  
great. We have failed and see future in dark.

But God is greater than our little heart. He says:  
"For a small moment have I forsaken thee, but with  
great mercies will I gather thee." (Jes. 54,7)

Praise the Lord for another 150 years!

*Martin Seeberg*

Fennstraße 31  
D-12439 BerlinTelefon  
030/6317809  
Telefax

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

An die  
Leitung der Evangelischen Kirche  
der Kirchenprovinz Sachsen  
z.Hd. Herrn OKR Dr. Matthias Sens  
Am Dom 2

39104 Magdeburg

Berlin, d. 2.11.1994

Betr.: 150.jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran  
Church in Chotanagpur und Assam

Sehr geehrte Damen und Herren!

Am 2. November 1845 kamen vier Missionare nach Ranchi in Chotanagpur, dem jetzigen Zentrum der Gossner Kirche. Sie waren von Johannes Evangelista Gossner in Berlin ausgesandt, um "die Liebe Christi zu verkündigen mit der Hände Arbeit". Ursprünglich war ihr Plan, nach Burma weiterzureisen. In Calcutta überzeugten Adivasi, die Ureinwohner Indiens, die vier Deutschen, daß sie nach Chotanagpur in Südbihar kommen sollten, um dort den Menschen nicht nur das Evangelium zu predigen, sondern sie auch zu unterstützen in ihrem Kampf gegen Unterdrückung und Ausbeutung, gegen Feudalherren und Kastenhindus.

Aus diesen Anfängen ist eine große Kirche gewachsen, die fast ausschließlich aus Ureinwohnern besteht und schon früh - 1919 - ihre Autonomie erreicht hat. Über die Gossner Mission hat sie immer Kontakt zu Deutschland gehalten. In den letzten Jahrzehnten entwickelte sich aber immer mehr eine Partnerschaft zu verschiedenen deutschen Kirchen, in die die Kirchenprovinz Sachsen durch die Verbindung zur Gossner Mission mit hineingenommen ist.

Nächstes Jahr, vom 31. Oktober bis 2. November 1995, feiert die Kirche ihr 150jähriges Jubiläum. Dazu lädt sie auch Freunde und Partner aus der Oekumene ein und würde sich über eine Beteiligung Ihrer Landeskirche sehr freuen.

Die Kirche hat sich gerade in den letzten Jahrzehnten mit großen Problemen zu beschäftigen. Um ihre Identität bewahren zu können, waren die Adivasi vor den arischen Einwanderern in den Dschungel der Berge geflüchtet. Dort konnten sie bis nach der Unabhängigkeit Indiens ein relativ ungestörtes Leben führen. Jetzt hat sich herausgestellt, daß gerade in ihrem Gebiet die

größten Kohle- und Erzvorkommen liegen. Was die traditionelle Hindugesellschaft in Jahrtausenden nicht geschafft hat, nämlich die Adivasi zu entwurzeln, hat die moderne Zivilisation und Wirtschaft in verheerendem Maße begonnen. Ganze Landstriche werden umgesiedelt, die traditionelle Dorfgemeinschaft zerstört. Die Kirche muß sich mit großen sozialen Problemen und mit einer ihr unbekannten technisierten Welt auseinandersetzen. Für die Gossner Kirche ist es wichtig, Kontakte nach außen zu pflegen, damit sie kritische Bestärkung erhält auf ihrem Weg und Erfahrungen von anderen Kirchen fruchtbar machen kann.

Die direkte Einladung zum Jubiläum wird von der Gossner Kirche selbst noch ausgesprochen. Die Gossner Mission - wissend, daß in Deutschland Termine Monate vorher geplant werden - wollte Ihnen den Zeitraum des Jubiläums auf diesem Wege mitteilen, damit Sie sie bei Ihren Planungen berücksichtigen können und vorüberlegen, wer von der Kirchenleitung eventuell an den Feierlichkeiten teilnehmen kann. Die Gossner Mission ist auch bereit, zusammen mit der Gossner Kirche ein mehrtägiges Programm zu planen. Es wäre schade, wenn Besucher von hier nur die Erfahrung der großen Feierlichkeiten in Ranchi mit nach Hause nähmen und nicht einige Landgemeinden besucht hätten.

Mit freundlichen Grüßen, auch von der Indienreferentin  
*Ursula Hecker,*

~~gez. Ursula Hecker  
Indienreferentin  
(z.Zt. in Indien)~~

F.d.R.:

~~*Kelga Weichert*  
(Sekretärin)~~

*(Dieter Hecker)*

*Diözesal*



Fennstraße 31  
D-12439 BerlinTelefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6351198

030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Mr.  
Rajan Singh  
c/o Industrial Service Institute  
Residency Road  
Sadar, Nagpur 440001  
INDIA

5-1-95

Dear Rajan,

best wishes and God's blessings for 1995.

It was a pleasure for me to hear that you are now the acting URM coordinator and I wish you much wisdom for that difficult task. I hope we can keep in contact about what URM means for India, about your plans and strategies. May be this can be revived in relation with an official occassion.

The Gossner Church in Chotanagpur/Bihar is celebrating it's 150 anniversary at the 2nd November 1995. They take it as an opportunity - not only to honour the history, but also to encourage their member congregations to strengthen their missionstrategies and their social responsibilities.

Therefore it is planned to organize a churchwide seminar which is bringing together activists of the grassroot initiatives and the different social projects to share their experiences and to enable and encourage further programmes especially those which are focused on community organizing.

An open challenge is the ongoing industrialization in that region combined with modernisation and deregulation. For that seminar which takes place from the 17th - 24th of October 1995 the Gossner Church has decided to invite experts and activists to share their inspiring experience.

Therefore we as partners in the preparation process would like to ask you in their name whether you could participate and make the URM challenge present. In case your time schedule allows you to take part they would contact you for further preparation and for the official invitation.

We wanted to give you the official dates as soon as possible for your planning. But unfortunately we didn't have the right telephone number. Please let us know as soon as possible whether you are able to participate in that seminar.

Looking forward in hearing from you also with the best greetings of the India Secretary of Gossner Mission, Mrs. Rev. Ursula Hecker, I remain

Yours sincerely



(Bernd Krause)



0000000000

0000000000

0000 772 532802

05571 3200

Sohnreistr. 1  
37170 Uslar

22.3.42 Bruder  
18.12.49

Katharina Sinram

50  
12.10.5

Telefon 05571-7475

Katharina Sinram Sohnreistr. 1 D-37170 Uslar

Gossner Mission  
z.Hd. Frau Hecker  
Fennstr. 31  
12439 Berlin



den 30.05.1995

Betr.: Reisegruppe Indien / Ranchi im Oktober - November 1995

Sehr geehrte Frau Hecker,

im März des Jahres hatte ich bei Ilse Martin telefonisch meine Schwester Franziska Schultz und mich zu der 2-wöchigen Reise nach Ranchi / Indien angemeldet. Als ich Mitte Mai bei Ihnen anrufen wollte, waren Sie zur der Zeit nicht erreichbar, wie mir Frau Pohl mitgeteilt hat. Frau Pohl gegenüber habe ich die Anmeldung von meiner Schwester und mir bestätigt. Zu der Zeit war noch nicht definitiv klar, ob mein Bruder Wilhelm Schultz aus Celle an der Reise würde teilnehmen können.

Da ich heute von meiner Mutter, Eva Schultz, erfahren habe, daß mein Bruder im Gegensatz zu mir eine offizielle Einladung bzw. Betätigung für die Teilnahme an der Reise erhalten hat, möchte ich zur Sicherheit nochmals schriftlich meine Schwester Franziska und mich zur Teilnahme an der Reise anmelden. Wir drei Geschwister wollen die Gelegenheit nutzen, uns gemeinsam an Kindheitserfahrungen vor Ort erinnern zu können.

Meine Schwester Franziska hat folgende Anschrift:

Franziska Schultz / Ehre Guta Platz 1a / A-6900 Bregenz / Österreich

Mit freundlichen Grüßen

Katharina Sinram

Sch

**Clem & Ruth Schmidt**  
**3 Carignane Court**  
**Tanunda, South Australia 5352**  
**Telephone (085) 63 0242**

23rd October, 1995

TO: Leaders, Pastors & Members of  
Gossner Evangelical Lutheran Church,  
Ranchi/Bihar, INDIA

c/- Director, Gossner Mission, Ranchi, BIHAR

Dear Christian Friends,

On the occasion of the 150th jubilee of your Church we send you most hearty and sincere greetings. We thank God with you for the blessings of the past 150 years, and pray that He will also protect, lead, guide and bless you in the future.

We were able to come from the Lutheran Church of Australia to Ranchi in January, 1964 and live and work amongst you for several years, and we have some happy memories of that time.

When we were welcomed to your Church at that time by Dr. Marsallan Sage and others, we were able to tell you that Father Gossner also sent missionaries to our country during last century, and that this is a connecting link between us, even though it may be a small one.

My special task among you was with the young people, and I still remember many of the special experiences we had together: the beautiful singing, several weddings, working together to renovate the old Bank building and make it into a Youth Centre, etc. etc. Since leaving India we have been able to work also in Zambia, Africa and in Indonesia. And back here in our own Church we have often been asked to speak about our experiences in these three countries. Even now, although it is almost 30 years since we left India, we are still being asked to speak about our experiences there. Fortunately we kept a diary of our life there, and when we read this diary it all seems to come alive again for us. We also brought with us from India many souvenirs which we are able to show to people here.

We seem to have forgotten almost all the Hindi which we tried to learn when we were with you. But at least we shall never forget your beautiful greeting: YISHU SAHAY - and that is our prayer for you, for now and for always.

Yours in Christian Fellowship,

*Clem + Ruth Schmidt*



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809

Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Herrn  
OKR Eckhard Schülzgen  
c/o Ev. Konsistorium  
Neue Grünstr. 19/22

10179 Berlin

11.10.1994

Lieber Herr Schülzgen,

anbei der offizielle Brief an die Kirchenleitung mit der Vorankündigung des Jubiläums der Gossner Kirche. Ich hoffe, daß ich die offiziellen Einladungen von meinem Besuch Ende November mitbringen kann. Uns liegt in Abstimmung der Gossner Kirche vor allem daran, daß Bischof Huber, wenn irgend möglich, an den offiziellen Feierlichkeiten des Jubiläums teilnimmt, eventuell sogar an dem davor geplanten Seminar zur sozialen Verantwortung von Kirche und Gemeinde.

Wir möchten Sie bitten, die Kirchenleitung zu informieren und die Festlegung weiterer, gegebenenfalls anderer Vertreter für das Jubiläum einzuleiten.

Mit freundlichen Grüßen



(Ursula Hecker)  
Indienreferentin

Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809

An die Kirchenleitung der EKiBB  
Bachstr. 1-2

Telefax  
030/6361198  
030/6361198

10555 Berlin

Berlin, d. 12.10.1994

**Betr.:** 150jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur und Assam

Sehr geehrte Damen und Herren!

Am 2. November 1845 kamen vier Missionare nach Ranchi in Chotanagpur, dem jetzigen Zentrum der Gossner Kirche. Sie waren von Johannes Evangelista Gossner in Berlin ausgesandt, um "die Liebe Christi zu verkündigen mit der Hände Arbeit". Ursprünglich war ihr Plan, nach Burma weiterzureisen. In Calcutta überzeugten Adivasi, die Ureinwohner Indiens, die vier Deutschen, daß sie nach Chotanagpur in Südbihar kommen sollten, um dort den Menschen nicht nur das Evangelium zu predigen, sondern sie auch zu unterstützen in ihrem Kampf gegen Unterdrückung und Ausbeutung, gegen Feudalherren und Kastenhindus. Aus diesen Anfängen ist eine große Kirche gewachsen, die fast ausschließlich aus Ureinwohnern besteht und schon früh - 1919 - ihre Autonomie erreicht hat. Über die Gossner Mission hat sie immer Kontakt zu Deutschland gehalten. In den letzten Jahrzehnten entwickelte sich aber immer mehr eine Partnerschaft zu verschiedenen deutschen Kirchen, wobei die Partnerschaft zur Berlin-Brandenburgischen Kirche eine modellhafte Rolle spielt.

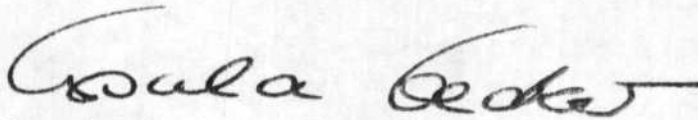
*Zu dem auch ein Schloß*  
Nächstes Jahr, vom 31. Oktober bis 2. November 1995, feiert die Kirche ihr 150jähriges Jubiläum. Dazu lädt sie auch Freunde und Partner aus der Oekumene ein und würde sich über eine Beteiligung der EKiBB sehr freuen.

Die Kirche hat sich gerade in den letzten Jahrzehnten mit großen Problemen zu beschäftigen. Um ihre Identität bewahren zu können, waren die Adivasi vor den arischen Einwanderern in den Dschungel der Berge geflüchtet. Dort konnten sie bis nach der Unabhängigkeit Indiens ein relativ ungestörtes Leben führen. Jetzt hat sich herausgestellt, daß gerade in ihrem Gebiet die größten Kohle- und Erzvorkommen liegen. Was die traditionelle Hindugesellschaft in Jahrtausenden nicht geschafft hat, nämlich die Adivasi zu entwurzeln, hat die moderne Zivilisation und

Wirtschaft in verheerendem Maße begonnen. Ganze Landstriche werden umgesiedelt, die traditionelle Dorfgemeinschaft zerstört. Die Kirche muß sich mit großen sozialen Problemen und mit einer ihr unbekannten technisierten Welt auseinandersetzen. Für die Gossner Kirche ist es wichtig, Kontakte nach außen zu pflegen, damit sie kritische Bestärkung erhält auf ihrem Weg und Erfahrungen von anderen Kirchen fruchtbar machen kann.

Die direkte Einladung zum Jubiläum wird von der Gossner Kirche selbst noch ausgesprochen. Die Gossner Mission - wissend, daß in Deutschland Termine Monate vorher geplant werden - wollte Ihnen den Zeitraum des Jubiläums auf diesem Wege mitteilen, damit Sie sie bei Ihren Planungen berücksichtigen können und vorüberlegen, wer von der Kirchenleitung eventuell an den Feierlichkeiten teilnehmen kann. Die Gossner Mission ist auch bereit, zusammen mit der Gossner Kirche ein mehrtägiges Programm zu planen. Es wäre schade, wenn Besucher von hier nur die Erfahrung der großen Feierlichkeiten in Ranchi mit nach Hause nähmen und nicht einige Landgemeinden besucht hätten.

Mit freundlichen Grüßen



(Ursula Hecker)  
Indienreferentin

Monika Schutzka  
Blumenstrasse 1/1  
72072 Tübingen  
Tel. 07071-72445

27. 8. 95

Liebe Frau Heide,

vielen Dank für Ihren Brief vom 15.8.95

Inzwischen mußte ich die Termine im Herbst so  
planen, daß ich leider ~~nicht~~ mit nach Indien  
fahren kann. Das tut mir sehr leid. Ich  
würde Ihnen allen eine gute, behagliche  
Reise - in Gedanken werde ich die bei sein.  
Herzliche Grüße,

Monika Schutzka



# Absage

Monika Schutzka  
Blumenstrasse 1/1  
72072 Tübingen  
Tel. 0 70 71 - 7 24 45

5. 2. 95

Liebe Frau Hecker,

danke für Ihren Brief von 23. 1. 95

Natürlich würde ich sehr gerne das Jubiläum in der Gossner Kirche mit feiern u. mit erleben. Allerdings weiß ich nicht, ob ich wirklich in Okt. Urlaub nehmen kann. Ich wäre daran schon an einer Gruppenfahrt interessiert, wenn sie nicht länger als 2 Wochen dauert. Gerne würde ich dabei auch einen Besuch in Augsburg u. vielleicht auch in Kempten bei Rev. Wilhelm Kaudelma machen. Da ich in meinen Jahren in Augsburg wenig von der Gossner Kirche kennen lernen konnte, ist alles, was geplant ist, sicher von Interesse.

Ich bitte Sie, mir weitere Pläne der Gossner Mission zu Zeit, Programmen u. Kosten mitzuteilen. Ich werde dann sehen, ob ich mich anmelden kann.

Sehr herzliche Grüße,

Ihre Monika Schutzka.



Herrn u. Frau

D. u. H. Hecker

Fennstr. 31

12439 Berlin

© Herst. u. Verlag Schöning & Co. + Gebr. Schmidt · 2400 Lübeck · ☎ (04 51) 310 310 0  
nd Bestell-Nr. Sasdo 194

11. 6. 95

Liebe Frau u. Herr Hecker,  
 aus der Klar, die ich hier wieder darf,  
 herzliche Grüße. Ich habe mir so sehr  
 über die letzte Karte aus Thess / Kato  
 gefreut. Wie schön, daß Sie so eine Reise  
 machen konnten. Das bleibt vorerst auf  
 meiner Wunschliste. Was wird wohl aus  
 den Reiseplänen nach Toben in Herbst? Ich  
 muß leider eventuell am 28/29.10 ein Seminar  
 halten - ausserdem würde ich so gerne  
 mal ein Kirchenfest des Grosse Kirche  
 erleben! Sehr herzlichen Dank für  
 Ihre Karte u. herzliche Grüße,  
 Ihre Monika Schutka.

Grüße aus dem



Moor- und  
Sole-Heilbad  
Bad Sassendorf





St



Tel. 129.

Görze von

Frau Zoll:

sie hat eine sehr kranke  
Mutter u. hatte mir  
Frau Kranke zu Liebe  
zugesagt.

Magdalene Straube  
Denkmalstr. 3  
47058 Duisburg

Hiltrud Zoll  
Gartenstr. 31  
45468 Mülheim-Ruhr

(Telefax:  
dienstl. (02 03) 4 10 - 10 00

Duisburg, den 9.9.95

An die

Gossner Mission  
z.Hd. Frau Ursula Hecker  
Fennstr. 31  
12439 B e r l i n

Fax Nr. 030 / 636 1198

Betr.: Jubiläumsreise nach Chotanagpur 25.10 - 11.11.95

Liebe Frau Hecker,

mit Brief vom 4. September hatten wir uns zur obigen Reise angemeldet und uns darauf gefreut.

Völlig unvorhersehbar habe ich vor einigen Tagen große Schmerzen im Knie bekommen, so daß ich kaum gehen kann.

Heute hat mir der Orthopäde eröffnet, daß es sich um einen Meniscusriss handelt, der operiert werden muß.

Der Arzt rät dringend von einer Reise im Oktober ab. Er sagte mir, ich sei dazu weder nach der Operation noch erst recht nicht ohne Operation in der Lage.

So schnell können sich Voraussetzungen ändern!

Es fällt uns schwer, aber

Frau Zoll und ich treten hiermit von der Reise zurück.

Wir hoffen sehr, daß die Annullierung der Flüge am Montag noch möglich ist.

Sicherheitshalber rufe ich Anfang der nächsten Woche bei Ihnen an.

Bitte, lassen Sie uns wissen, wenn Ihnen Kosten entstanden sind. Selbstverständlich könnte ich auch ein ärztliches Attest nachreichen.

Sehr hoffen wir auf Ihr Verständnis und versichern, wie sehr wir die notwendige Entscheidung bedauern.

Mit herzlichem Dank für Ihre Mühewaltung und freundlichen Grüßen  
- auch im Namen von Hiltrud Zoll -

*Mrs. Magdalene Straube*

Magdalene Straube  
Denkmalstr. 3  
47058 Duisburg

Hiltrud Zoll  
Gartenstr. 31  
45468 Mülheim - Ruhr

Duisburg, 9.9.95



An die

Gossner Mission  
z.Hd. Frau Ursula Hecker  
Fennstr. 31  
12439 B e r l i n

Betr.: Jubiläumsreise nach Chotanagpur 25.10. - 11.11.95

Liebe Frau Hecker,

mit Brief vom 4. September hatten wir uns zur obigen Reise angemeldet und uns darauf gefreut.

Völlig unvorhersehbar habe ich vor einigen Tagen große Schmerzen im Knie bekommen, so daß ich kaum gehen kann. Heute hat mir der Orthopäde eröffnet, daß es sich um einen Meniscusriss handelt, der operiert werden muß. Der Arzt rät dringend von einer Reise im Oktober ab. Er sagte mir, ich sei dazu weder nach der Operation noch erst recht nicht ohne Operation in der Lage. So schnell können sich Voraussetzungen ändern !

Es fällt uns sehr schwer, aber  
Frau Zoll und ich treten hiermit von der Reise zurück.

Wir hoffen sehr, daß die Annullierung der Flüge am Montag noch möglich ist. Sicherheitshalber rufe ich Anfang der nächsten Woche bei Ihnen an.

Bitte, lassen Sie uns wissen, wenn Ihnen Kosten entstanden sind. Selbstverständlich könnte ich ein ärztliches Attest nachreichen.

Sehr hoffen wir auf Ihr Verständnis und versichern, wie sehr wir die notwendige Entscheidung bedauern.

Mit herzlichem Dank für Ihre Mühewaltung und freundlichen Grüßen  
- auch im Namen von Hiltrud Zoll -

*M. Magdalene Straube*

Anruf von Frau von Lingen-Serka,  
die 2 Damen

Magdalene Straube und  
Hiltrud Zoll

haben sich entschieden, nach Indien mitzukommen und zwar  
ist es die Gruppe von Frau The Martin, vom 25.10. - 11.11.  
Nach diesem Wochenende melden sich die beiden Frauen noch  
einmal schriftlich.

Honorsbuch



Mülheim-Ruhr, den 4. September 1995

An die Gossner Mission  
z.Hd. Frau Hecker

Fennstrasse 31  
D-12439 Berlin

Liebe Frau Hecker.

Über Ursula von Lingen-Senda haben wir von dieser Reise erfahren und möchten uns heute verbindlich anmelden.

Magdalene Straube  
Denkmalstrasse 3  
47058 Duisburg  
Tel.: priv. 0203/340993  
dienstl.: 0203/410 1003

Hiltrud Zoll  
Gartenstrasse 31  
45468 Mülheim-Ruhr  
Tel.: 0208/476078

Wir möchten in der Reisegruppe reisen, in der auch Ursula von Lingen-Senda reist vom 25. 10. 1995 bis 11. 11. 1995, die Gruppe 2., zweite Alternative  
Wir bedanken uns, daß Sie alle notwendigen Flüge für uns buchen und vorfinanzieren.  
Sie können besser als wir absehen, an welchen Orten wir ein Hotel brauchen und bitten um Hotels westlicher Kategorie, soweit das möglich ist.

Wir würden gerne beide eine Reiserücktrittsversicherung abschliessen und sind uns nicht sicher, geschieht das über die Gossner Mission oder kümmern wir uns hier selber darum.

Unsere Visumsanträge schicken wir Ihnen in den nächsten Tagen zu, sowie unsere Reisepässe.

Mit freundlichen Grüßen

*Hiltrud Zoll  
Magdalene Straube*



T-V

Dieter Toumforde  
Kolberger Str. 13  
26441 Jever

Jever, d. 4. 2. 95

Gossner Mission  
2. Ad. Frau Mroula Hecker  
Fennstraße 31  
12439 Berlin

|                 |
|-----------------|
| Eingegangen     |
| - 7. Feb. 1995  |
| Erledigt: ..... |

Liebe Frau Hecker,

für Ihren Brief vom 23. 1. 95 möchte ich Ihnen herzlich danken. Nach rund 30 Jahren (in Indien war ich im „Agricultural Training and Development Centre Khumtoli“, District Ranchi in der Zeit von 1963 - 1965 tätig) hatte ich nicht mehr damit gerechnet, noch einmal etwas von der Gossner Mission zu hören!

Leider kann ich an beiden Veranstaltungen zum 150-jährigen Gründungstag der Gossner Mission nicht teilnehmen.

Das Abstecken nach Indien verbietet sich aus grundsätzlichen Erwägungen. Da wir noch für 2 Töchter das Studium finanzieren,

sind den finanziellen „Spielräumen“  
2.26. bestimmte Grenzen gesetzt.

Die Veranstaltung in Berlin am Wochen-  
ende 6.-8. Oktober 1995 überschneidet sich  
mit einer 14-tägigen Studienfahrt im  
Oktober 1995 nach Frankreich, an der ich  
mit Studierenden und Studenten der  
Universität Oldenburg teilnehme.

Ich danke Ihnen für Ihre Einladung  
und wünsche Ihnen für Ihre weitere  
Tätigkeit Freude und Erfolg.

Mit freundlichen Grüßen  
DS

Dietz Traufrode



Fennstraße 31  
D-12439 Berlin

Telefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

Rev. C.S.R. Topno  
KSS  
GEL Church Compound

Ranchi 834001

FAX: 0091 65 1300 716

7-9-1995

Dear Rev. Topno,

as far as I can see you will get now the official list of the guests coming to Ranchi for the jubilee. Except of the group of former workers in Ranchi, who have special wishes for the program, the guests are in your hand. I only would like that all Anchals are considered for the visits of the German guests and that all may get experiences with villages also. Please book accommodations for them in Ranchi. They all will bear the expences.

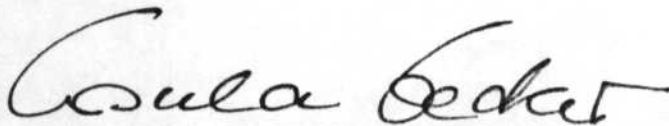
The two ladies have arrived safely. I hope they are not too much shocked about our German life.

I was shocked that Mrs. Horo doesn't speak English. This is very difficult for the program here. So for the next programs you must send people who know English, as a Hindi speaker in Gossner Mission will not be available any more. Sorry to say that.

We have asked Rev. Borutta for an article in your Jubilee Souvenir. He had to decline this request, since he is not able to write such a contribution due to his age. So you will have to do without that.

Right at the moment we are in a great hectic. So I am happy to come to India alway from this time schedule.

Yishu Sahay



(Ursula Hecker)

There are different groups, one group mostly of former fraternal workers in Gossner Church:

Ilse Martin  
Ursula von Lingen-Senda  
Katharina Sinram  
Franziska Schultz  
Marlies Gründler  
Johann Jannssen  
Adelheid Jannssen  
Bettina Rohwedder  
Magdalena Straube  
Hiltrud Zoll  
Wilhelm Schultz

|              |                                                          |
|--------------|----------------------------------------------------------|
| 30.10.       | Arrival in Ranchi                                        |
| 31.10.-2.11. | Jubilee - it is your decision, where you want the guests |
| 3.11.        | Takarna/Khuntitoli<br>nighthalt in Khintitoli            |
| 4.11.        | journey to Amgaon                                        |
| 5.11.        | Amgaon                                                   |
| 6.11.        | Amgaon                                                   |
| 7.11.        | journey to Bhubaneshwar                                  |
| 8.11.        | Bhubaneshwar, night train to Calcutta                    |
| 9.11.        | Calcutta                                                 |
| 10.11.       | flight to Delhi                                          |
| 11.11.       | return to Delhi                                          |

For this group it would be nice if you could arrange for a bus from Ranchi to Bhubaneshwar. The guests will bear the expenses.

The group for the seminar, arrival in Ranchi 12th of Oct., departure in Ranchi, 3rd of Nov.:

Ursula Hecker  
Bernd Krause  
Uwe Wiemann  
Claudia Schwartz

We are participants of the seminar. It would be good if we could visit some initiatives or social groups and a remote village after the seminar. Dr. Singh may be helpful in organizing this.

The more official guests:

Ingrid Borns Scharf from Gossner Mission Mainz, 23.10. - 3.11.  
Harald Lehmann, official guest from the Church of Westfalen, 30.10. - 10.11.  
Volker Jürgens, official guest of Hannover, 26.10. - 8.11.  
Klaus Wesner, official guest of Lippe, 23.10. - 3.11.  
Dr. Günter Krusche, official guest of Berlin-Brandenburg and president of Gossner Curatorium, 23.10. - 3.11.  
Dieter Hecker, Director of Gossner Mission, 23.10. - 11.11.

For these official guests you could arrange a program as you think it is adequate. There are people among them who haven't been to India before. I would suggest that the different Anchals will be considered.

If you separate the group and my husband cannot accompany them please guarantee that somebody who knows English well is accompanying them.

Leif Lehmann is a 15 year old boy, he may accompany his father Margret Krusche and Käthe Schülzgen must have a lighter program around Ranchi. As these two ladies don't know much English it would be good if Mrs. Daisy Kongari could accompany them.



**GOSSNER EVANGELICAL LUTHERAN CHURCH**  
**IN CHOTANAGPUR & ASSAM**

(Registered Under Societies Registration Act.XXI of 1860)  
Vide No.273-J of 30-7-1921

Rev. C.S.R. Topno  
M.A. B.D. M.Th.,  
Pramukh Adhyakah

Rev.S.K. Jojo,  
Up. Pramukh Adhyakah

Mr.U. Sange,  
Treasurer

Head Office:  
K.S.S. Office  
G.E.L. Church Ranchi  
Bihar/India, Ph:311513

Ref.:1139/kss-185

Date: 24/11-94.

To  
Rev. Mrs. U. Hecker,  
Asia Secretary,  
Gossner Mission.

Dear Sister in Christ,

With exceeding joy and gladness, it is to say that the Gossner Evangelical Lutheran Church in Chotanagpur and Assam was established on November 2, 1845 by four German Missionaries sent by Father Johannes Evangelista Gossner from Berlin. Now it is going to complete by the grace of God, 150 years. The kendriya Salahkari Sabha (the highest executive body of the church) in consultation with its Jubilee committee took a decision to have a year long celebration of the sesqui centennial Jubilee beginning from 2nd Nov. 1994 and culminating on 2nd November 1995.

During the one year period Jubilee celebrations will be held right from the congregation level to the Anchal (Diocese) level. The concluding and final celebration will be held from 31-10-'95 to 2-11-'95 when peoples from other places will also congregate here.

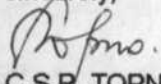
Requests have gone out to the church functionaries at different levels to organize functions befitting the occasion. They have also been told to organize functions befitting the occasion. They have also been told to fix up the dates in such a manner, after due consultation with each other, that the celebrations are spread over covering the entire year.

On our request, the Bible Society of India is bringing out a special edition of the Hindi Bible to commemorate this occasion. We are also working on publishing church history covering the period from 1845 to date. Work is going on in full swing on this. And, of course, we will bring out a souvenir in connection with the Jubilee, which will depict several activities of the church.

We, therefore, request you to send us your message/greetings along with your Pass Port size photo to be published in the souvenir by 20th January 1995. Further, we would request you to keep your dates free for the final Jubilee celebrations from 31-10-95 to 02-11-95 for which a separate invitation will be sent in time.

With many thanks and prayerful wishes,

Yours sincerely,

  
(REV. C.S.R. TOPNO)  
Pramush Adhyaksh,  
G.E.L.Church, Ranchi.



Jubiläum

1262



Telefon  
030 / 631 78 09  
Telefax  
030 / 636 11 98

Gossner Mission · Fennstraße 31 · O-1190 Berlin · Neue PLZ 12439

Neue Postleitzahl  
12439

Herrn  
H. Vorberg  
Oppelner Str. 3  
26603 Aurich

13.10.1993

Sehr geehrter Herr Vorberg,

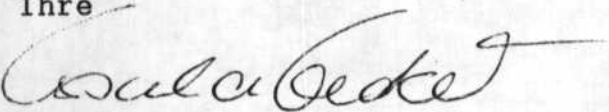
haben Sie herzlichen Dank für Ihren Brief vom 13.9.93.  
Ja, die Gossner Mission hat vor, im Jubiläumsjahr 1995 eine Gruppenreise auszuschreiben, damit ehemalige Mitarbeiterinnen und Mitarbeiter, Freunde und Unterstützer der Gossner Kirche die Gelegenheit haben, die Kirche und das Land Indien kennenzulernen.

Da es bestimmt einige Interessierte gibt, die auf die Ferientermine als Reisezeit angewiesen sind, werden wir versuchen, darauf Rücksicht zu nehmen. Haben Sie Dank, daß Sie Ihre Termine schon mitgeteilt haben.

Die genauere Planung einer Gruppenreise wird Anfang des nächsten Jahres geschehen. In dieser Woche reise ich für 6 Wochen nach Indien und Nepal und kann schon einiges vorbesprechen. Wenn wir konkret planen, werde ich Ihnen Bescheid geben.

Haben Sie nochmals herzlichen Dank für die Unterstützung, die Sie und die Mitglieder der Stiftung für das New Life Light Centre in Govindpur geben. Ohne Ihre Hilfe wäre die Arbeit so nicht möglich.

Mit herzlichen Grüßen, auch an die anderen Mitglieder der Stiftung,

Ihre  
  
(Ursula Hecker)  
Indienreferentin



Fennstraße 31  
D-12439 BerlinTelefon  
030/6317809  
Telefax  
030/6361198

Gossner Mission Fennstraße 31 D-12439 Berlin

An das  
Missionswerk der Ev.-Luth. Kirche  
in Bayern  
z.Hd. Herrn Dir. Dr. H. Vorländer  
Postfach 68

91561 Neuendettelsau

Berlin, d. 7.11.1994

Betr.: 150jähriges Jubiläum der Gossner Evangelical Lutheran  
Church in Chotanagpur und Assam

Sehr geehrte Damen und Herren!

Am 2. November 1845 kamen vier Missionare nach Ranchi in Chotanagpur, dem jetzigen Zentrum der Gossner Kirche. Sie waren von Johannes Evangelista Gossner in Berlin ausgesandt, um "die Liebe Christi zu verkündigen mit der Hände Arbeit". Ursprünglich war ihr Plan, nach Burma weiterzureisen. In Calcutta überzeugten Adivasi, die Ureinwohner Indiens, die vier Deutschen, daß sie nach Chotanagpur in Südbihar kommen sollten, um dort den Menschen nicht nur das Evangelium zu predigen, sondern sie auch zu unterstützen in ihrem Kampf gegen Unterdrückung und Ausbeutung, gegen Feudalherren und Kastenhindus.

Aus diesen Anfängen ist eine große Kirche gewachsen, die fast ausschließlich aus Ureinwohnern besteht und schon früh - 1919 - ihre Autonomie erreicht hat. Über die Gossner Mission hat sie immer Kontakt zu Deutschland gehalten. In den letzten Jahrzehnten entwickelte sich aber immer mehr eine Partnerschaft zu verschiedenen deutschen Kirchen, zu denen zumindest in der Vergangenheit auch Beziehungen nach Bayern eine Rolle gespielt haben, was durch Ihren Sitz im Kuratorium dokumentiert wird.

Nächstes Jahr, vom 31. Oktober bis 2. November 1995, feiert die Kirche ihr 150jähriges Jubiläum. Dazu lädt sie auch Freunde und Partner aus der Oekumene ein und würde sich über eine Beteiligung Ihrer Landeskirche sehr freuen.

Die Kirche hat sich gerade in den letzten Jahrzehnten mit großen Problemen zu beschäftigen. Um ihre Identität bewahren zu können, waren die Adivasi vor den arischen Einwanderern in den Dschungel der Berge geflüchtet. Dort konnten sie bis nach der Unabhängigkeit Indiens ein relativ ungestörtes Leben führen. Jetzt hat sich herausgestellt, daß gerade in ihrem Gebiet die

größten Kohle- und Erzvorkommen liegen. Was die traditionelle Hindugesellschaft in Jahrtausenden nicht geschafft hat, nämlich die Adivasi zu entwurzeln, hat die moderne Zivilisation und Wirtschaft in verheerendem Maße begonnen. Ganze Landstriche werden umgesiedelt, die traditionelle Dorfgemeinschaft zerstört. Die Kirche muß sich mit großen sozialen Problemen und mit einer ihr unbekannten technisierten Welt auseinandersetzen. Für die Gossner Kirche ist es wichtig, Kontakte nach außen zu pflegen, damit sie kritische Bestärkung erhält auf ihrem Weg und Erfahrungen von anderen Kirchen fruchtbar machen kann.

Die direkte Einladung zum Jubiläum wird von der Gossner Kirche selbst noch ausgesprochen. Die Gossner Mission - wissend, daß in Deutschland Termine Monate vorher geplant werden - wollte Ihnen den Zeitraum des Jubiläums auf diesem Wege mitteilen, damit Sie sie bei Ihren Planungen berücksichtigen können und vorüberlegen, wer von der Kirchenleitung eventuell an den Feierlichkeiten teilnehmen kann. Die Gossner Mission ist auch bereit, zusammen mit der Gossner Kirche ein mehrtägiges Programm zu planen. Es wäre schade, wenn Besucher von hier nur die Erfahrung der großen Feierlichkeiten in Ranchi mit nach Hause nähmen und nicht einige Landgemeinden besucht hätten.

Mit freundlichen Grüßen, auch von der Indienreferentin Ursula Hecker,

*Dieter Hecker.*

(Dieter Hecker)  
Direktor